Monisha

03 Apr 2023

07:25 PM

Darbhanga

Model: Web-KundliDarpan

Order No: 112489801

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**03/04/2023**
दिन	सोमवार
जन्म समय	**19:25:38 घंटे**
इष्ट	34:33:24 घटी
स्थान	**Darbhanga**
राज्य	Bihar
देश	India

अक्षांश	26:09:15 उत्तर
रेखांश	85:53:30 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	00:13:34 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	19:39:12 घंटे
वेलान्तर	-00:03:24 घंटे
साम्पातिक काल	08:25:46 घंटे
सूर्योदय	05:36:16 घंटे
सूर्यास्त	18:03:52 घंटे
दिनमान	12:27:36 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	वसन्त
सूर्य के अंश	19:22:20 मीन
लग्न के अंश	08:17:29 तुला

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	तुला - शुक्र
राशि-स्वामी	**सिंह - सूर्य**
नक्षत्र-चरण	**पू०फाल्गुनी - 2**
नक्षत्र स्वामी	शुक्र
योग	गण्ड
करण	तैतिल
गण	मनुष्य
योनि	मूषक
नाड़ी	मध्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	वनचर
वर्ग	श्वान
युँजा	मध्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	टा-टपकेश्वरी
पाया(राशि-नक्षत्र)	स्वर्ण - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मेष

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1945	चैत्र	13
पंजाबी	संवत : 2079	चैत्र	21
बंगाली	सन् : 1429	चैत्र	19
तमिल	संवत : 2079	पंगुनी	20
केरल	कोल्लम : 1198	मीनम	20
नेपाली	संवत : 2079	चैत्र	20
चैत्रादि	संवत : 2080	चैत्र	शुक्ल 12
कार्तिकादि	संवत : 2080	चैत्र	शुक्ल 12

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 12
तिथि समाप्ति काल _____: 06:24:34
जन्म तिथि _____: 13
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: मघा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 07:23:31 घंटे
जन्म योग _____: पू०फाल्गुनी
सूर्योदय कालीन योग ____: गण्ड
योग समाप्ति काल _____: 27:39:26 घंटे
जन्म योग _____: गण्ड
सूर्योदय कालीन करण ____: बालव
करण समाप्ति काल _____: 06:24:34 घंटे
जन्म करण _____: तैतिल
भयात _____: 30:05:19
भभोग _____: 65:31:44
भोग्य दशा काल _____: शुक्र 10 वर्ष 10 मा 8 दि

घात चक्र

मास _____: ज्येष्ठ
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: शनिवार
नक्षत्र _____: मूल
योग _____: धृति
करण _____: बव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मेष
लग्न _____: मीन
सूर्य _____: धनु
चन्द्र _____: वृश्चिक
मंगल _____: मकर
बुध _____: तुला
गुरु _____: कुम्भ
शुक्र _____: मीन
शनि _____: वृश्चिक
राहु _____: मेष

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

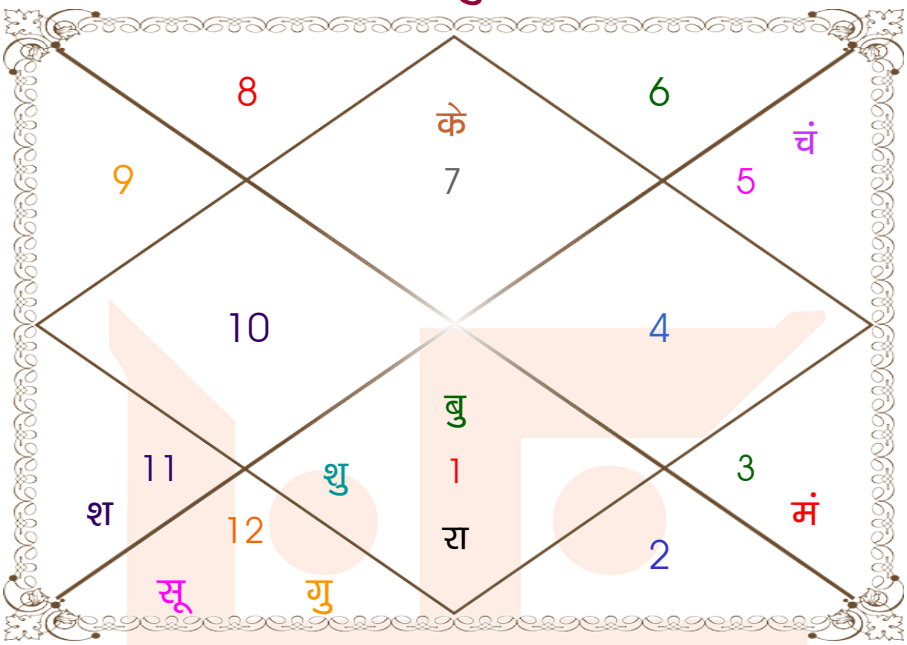

चन्द्र कुंडली

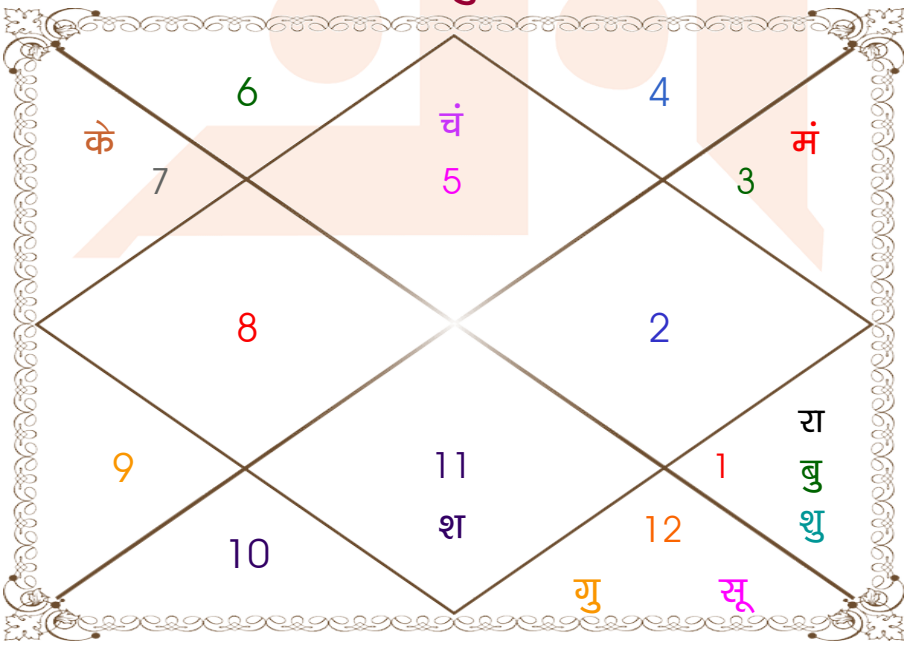

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

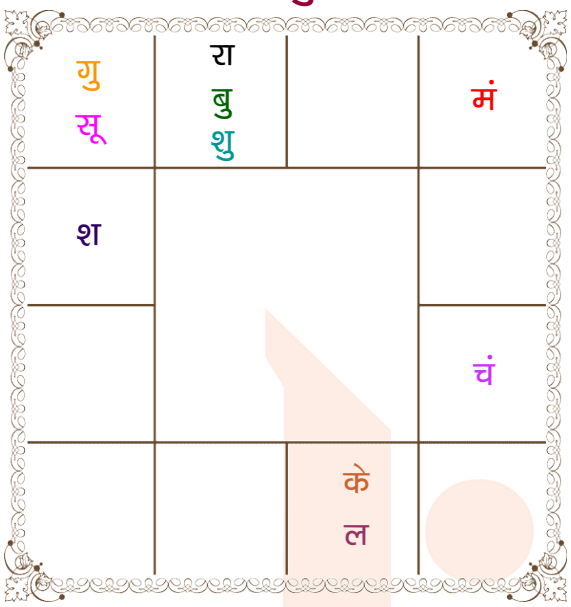

लग्न कुंडली

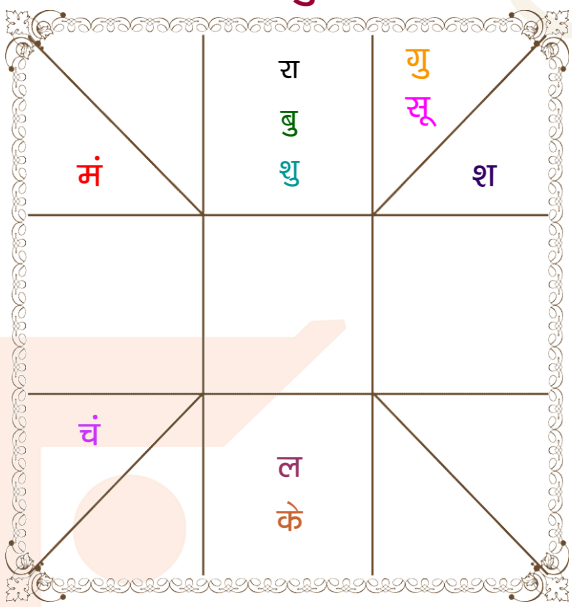

विंशोत्तरी
शुक्र 10वर्ष 10मा 8दि

शुक्र

03/04/2023

10/02/2134

शुक्र	09/02/2034
सूर्य	10/02/2040
चन्द्र	09/02/2050
मंगल	09/02/2057
राहु	10/02/2075
गुरु	10/02/2091
शनि	10/02/2110
बुध	11/02/2127
केतु	10/02/2134

योगिनी
उल्का 3वर्ष 3मा 2दि

उल्का

03/04/2023

06/07/2026

	00/00/0000
	03/04/2023
संकटा	05/01/2024
मंगला	06/03/2024
पिंगला	05/07/2024
धान्या	04/01/2025
भ्रामरी	04/09/2025
भद्रिका	06/07/2026

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			तुला	08:17:29	316:50:52	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	राहु	---
सूर्य			मीन	19:22:20	00:59:09	रेवती	1	27	गुरु	बुध	शुक्र	मित्र राशि
चंद्र			सिंह	19:25:45	12:11:56	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	राहु	मित्र राशि
मंगल			मिथु	10:19:01	00:30:17	आर्द्रा	2	6	बुध	राहु	गुरु	शत्रु राशि
बुध			मेष	05:39:02	01:40:42	अश्विनी	2	1	मंगल	केतु	राहु	सम राशि
गुरु		अ	मीन	25:33:46	00:14:27	रेवती	3	27	गुरु	बुध	राहु	स्वराशि
शुक्र			मेष	26:52:51	01:10:49	कृतिका	1	3	मंगल	सूर्य	सूर्य	सम राशि
शनि			कुंभ	08:48:41	00:06:05	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	गुरु	मूलत्रिकोण
राहु	व		मेष	09:56:31	00:03:13	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	शनि	शत्रु राशि
केतु	व		तुला	09:56:31	00:03:13	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	गुरु	सम राशि
हर्ष			मेष	22:44:51	00:03:02	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	शनि	---
नेप			मीन	01:38:03	00:02:11	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	---
प्लूटो			मक	05:59:43	00:00:48	उत्तराषाढ़ा	3	21	शनि	सूर्य	बुध	---
दशम भाव			कर्क	09:56:08	--	पुष्य	--	8	चंद्र	शनि	शुक्र	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:10:45

लग्न-चलित

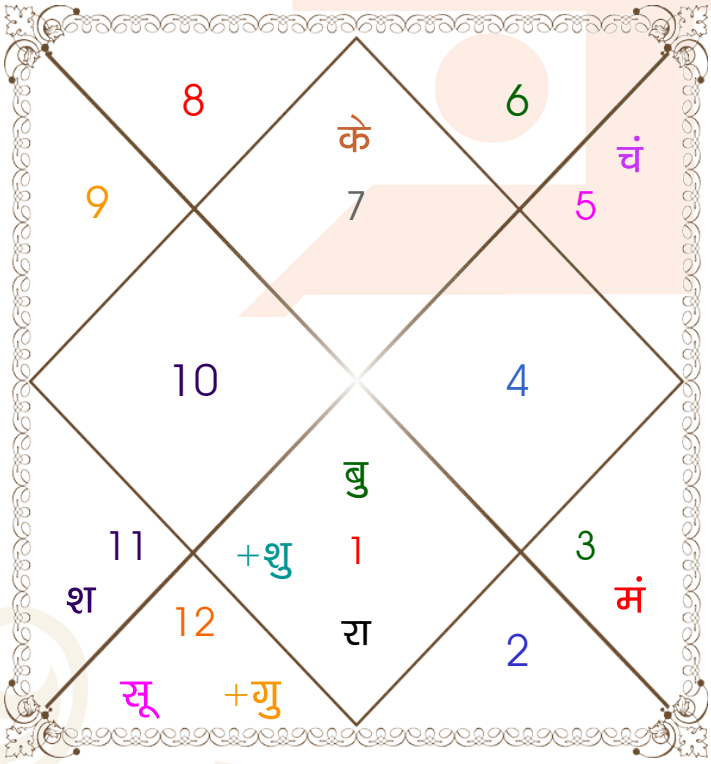

चन्द्र कुंडली

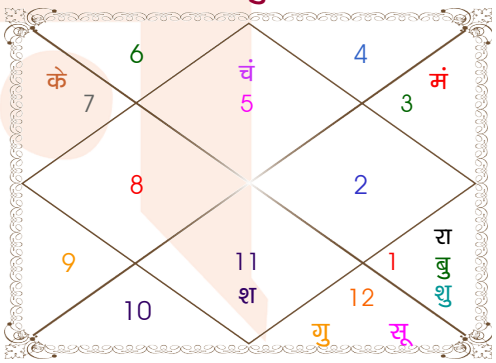

नवमांश कुंडली

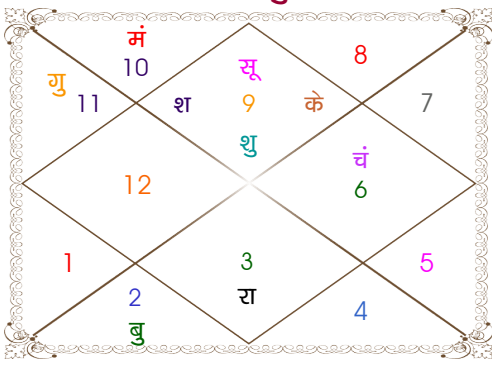

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कन्या	23:33:56	तुला	08:17:29
2	तुला	23:33:56	वृश्चिक	08:50:22
3	वृश्चिक	24:06:49	धनु	09:23:15
4	धनु	24:39:42	मकर	09:56:08
5	मकर	24:39:42	कुम्भ	09:23:15
6	कुम्भ	24:06:49	मीन	08:50:22
7	मीन	23:33:56	मेष	08:17:29
8	मेष	23:33:56	वृष	08:50:22
9	वृष	24:06:49	मिथुन	09:23:15
10	मिथुन	24:39:42	कर्क	09:56:08
11	कर्क	24:39:42	सिंह	09:23:15
12	सिंह	24:06:49	कन्या	08:50:22

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	तुला	08:17:29
2	वृश्चिक	07:20:15
3	धनु	07:58:26
4	मकर	09:56:08
5	कुम्भ	12:01:09
6	मीन	11:57:56
7	मेष	08:17:29
8	वृष	07:20:15
9	मिथुन	07:58:26
10	कर्क	09:56:08
11	सिंह	12:01:09
12	कन्या	11:57:56

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा

चलित कुंडली

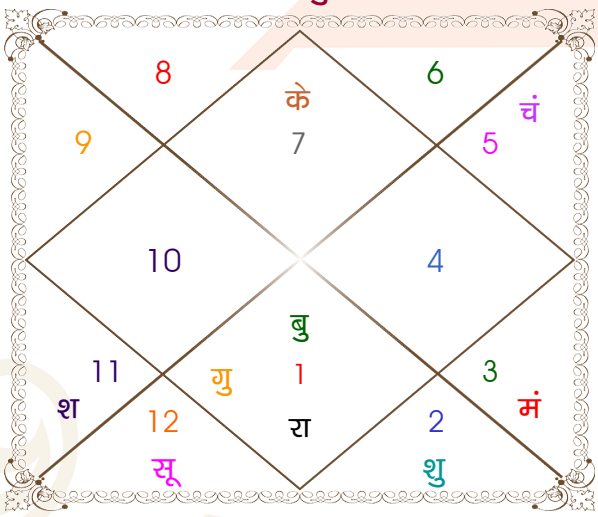

भाव कुंडली

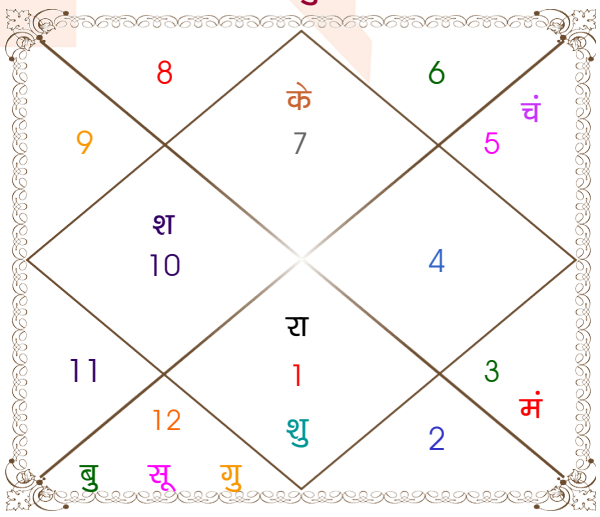

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	मातृ	पितृ	कुमार	मुदित	नृत्यलिप्सा	8.85	29 %
चंद्र	भ्रातृ	मातृ	वृद्ध	मुदित	प्रकाश	3.68	46 %
मंगल	पुत्र	भ्रातृ	कुमार	खल	प्रकाश	1.32	65 %
बुध	कलत्र	ज्ञाति	बाल	शान्त	निद्रा	0.69	40 %
गुरु	अमात्य	धन	बाल	विकल	प्रकाश	0.00	65 %
शुक्र	आत्मा	कलत्र	मृत	शान्त	नृत्यलिप्सा	8.01	70 %
शनि	ज्ञाति	आयु	कुमार	स्वस्थ	प्रकाश	3.95	26 %
राहु	---	ज्ञान	कुमार	खल	प्रकाश	0.00	89 %
केतु	---	मोक्ष	कुमार	निपीदित	शयन	0.00	89 %
कुल						26.51	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा

चलित कुंडली

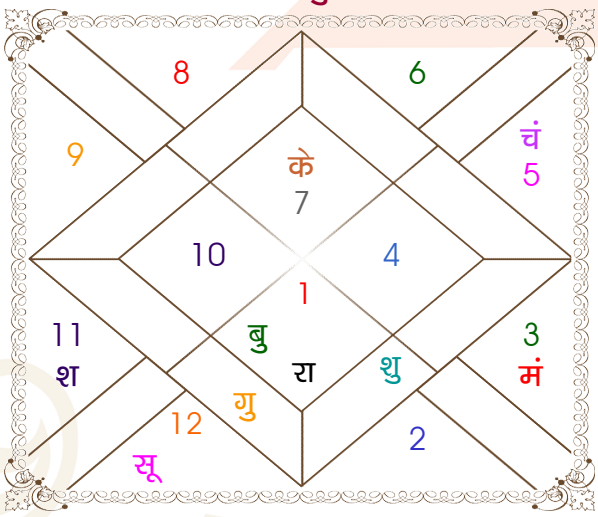

लग्न-चलित

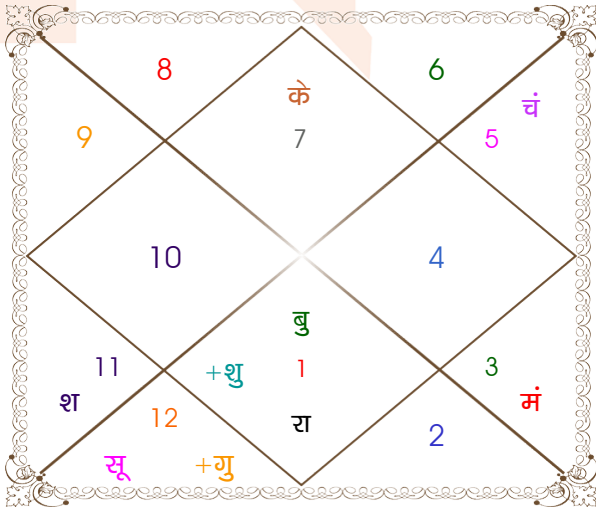

सुदर्शन चक्र

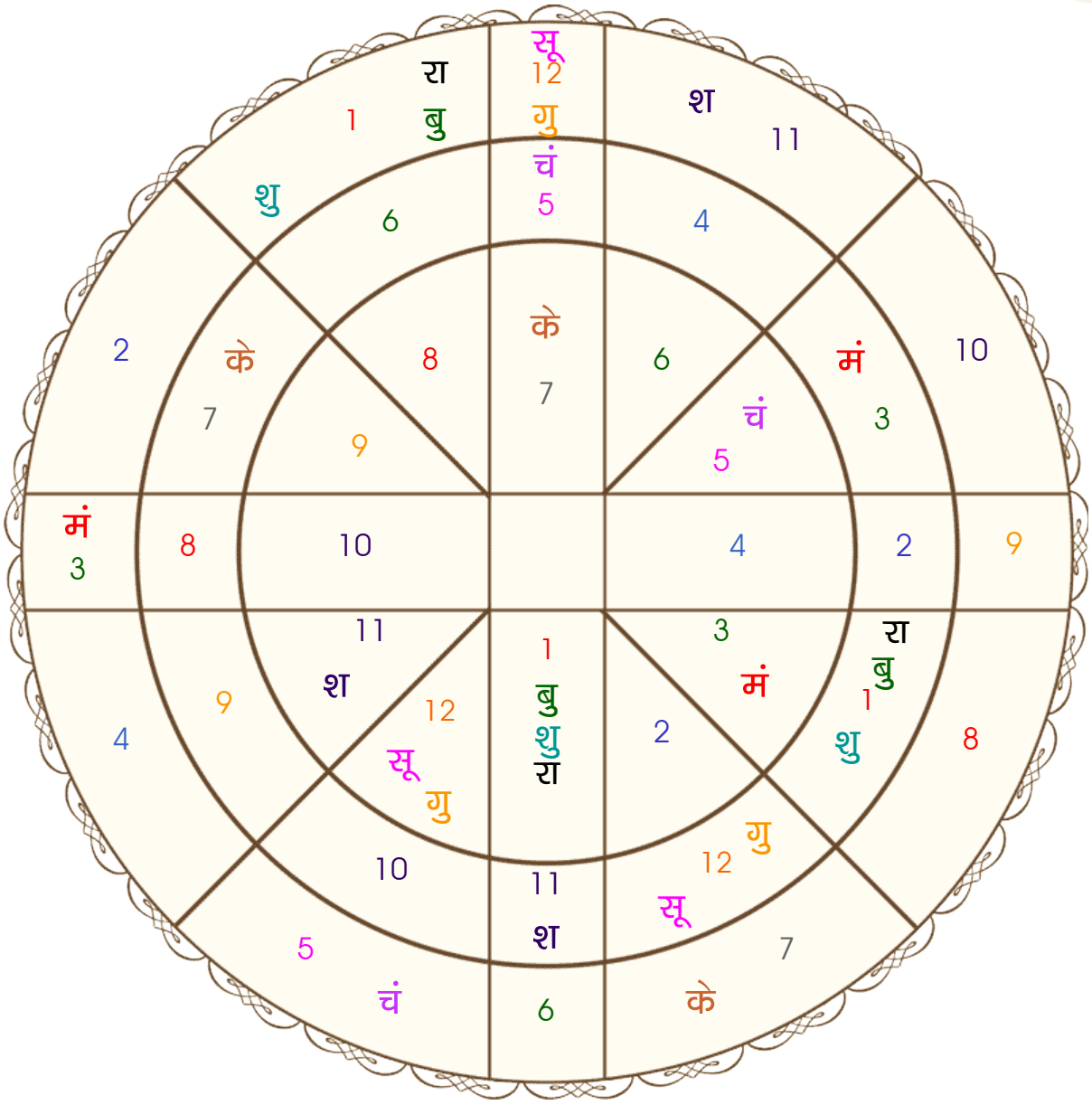

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : शुक्र 10 वर्ष 8 मास 12 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मीन	19:28:32	गुरु	बुध	शुक्र	शुक्र
चंद्र		सिंह	19:31:57	सूर्य	शुक्र	राहु	शुक्र
मंगल		मिथु	10:25:13	बुध	राहु	गुरु	राहु
बुध		मेष	05:45:14	मंगल	केतु	राहु	राहु
गुरु		मीन	25:39:58	गुरु	बुध	राहु	शुक्र
शुक्र		मेष	26:59:02	मंगल	सूर्य	सूर्य	शनि
शनि		कुंभ	08:54:53	शनि	राहु	गुरु	शनि
राहु	व	मेष	10:02:43	मंगल	केतु	शनि	केतु
केतु	व	तुला	10:02:43	शुक्र	राहु	गुरु	चंद्र
हर्ष		मेष	22:51:03	मंगल	शुक्र	शनि	शुक्र
नेप		मीन	01:44:15	गुरु	गुरु	राहु	गुरु
प्लूटो		मक	06:05:55	शनि	सूर्य	बुध	मंगल

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	तुला	08:23:41	शुक्र	राहु	राहु	चंद्र
2	वृश्चि	07:26:27	मंगल	शनि	केतु	शुक्र
3	धनु	08:04:38	गुरु	केतु	गुरु	बुध
4	मक	10:02:20	शनि	चंद्र	चंद्र	चंद्र
5	कुंभ	12:07:21	शनि	राहु	शनि	राहु
6	मीन	12:04:07	गुरु	शनि	चंद्र	सूर्य
7	मेष	08:23:41	मंगल	केतु	गुरु	केतु
8	वृष	07:26:27	शुक्र	सूर्य	केतु	राहु
9	मिथु	08:04:38	बुध	राहु	राहु	शुक्र
10	कर्क	10:02:20	चंद्र	शनि	शुक्र	बुध
11	सिंह	12:07:21	सूर्य	केतु	बुध	शुक्र
12	कन्या	12:04:07	बुध	चंद्र	राहु	राहु

के.पी. अयनांश : 24:04:33

फॉरच्युना : मीन 08:27:06

लग्न कुंडली

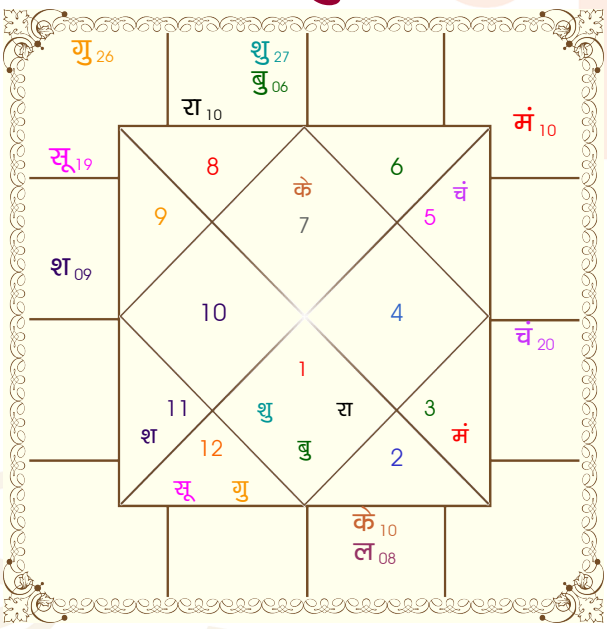

भाव कुंडली

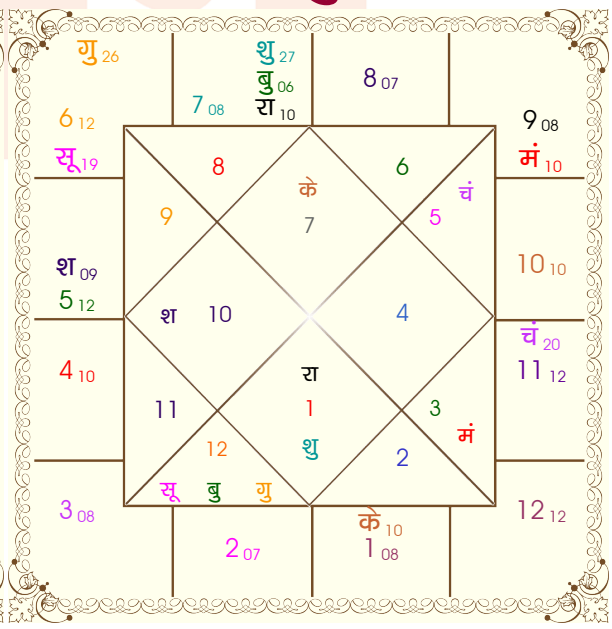

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	चंद्र- बुध, शुक्र- राहु, केतु,
2	मंगल-
3	गुरु-
4	शनि,
5	शनि-
6	सूर्य+ बुध, गुरु+ शुक्र,
7	चंद्र, मंगल+ शुक्र, शनि, राहु, केतु,
8	चंद्र- शुक्र-
9	सूर्य- मंगल, बुध- गुरु-
10	चंद्र-
11	सूर्य- चंद्र, शुक्र-
12	सूर्य- बुध- गुरु-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	6+ 9- 11- 12-
चंद्र	1- 7, 8- 10- 11,
मंगल	2- 7+ 9,
बुध	1, 6, 9- 12-
गुरु	3- 6+ 9- 12-
शुक्र	1- 6, 7, 8- 11-
शनि	4, 5- 7,
राहु	1, 7,
केतु	1, 7,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	राहु
लग्न राशि स्वामी	शुक्र
राशि नक्षत्र स्वामी	शुक्र
राशि स्वामी	सूर्य
वार स्वामी	चन्द्र
लग्न अन्तर स्वामी	राहु
राशि अन्तर स्वामी	राहु

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

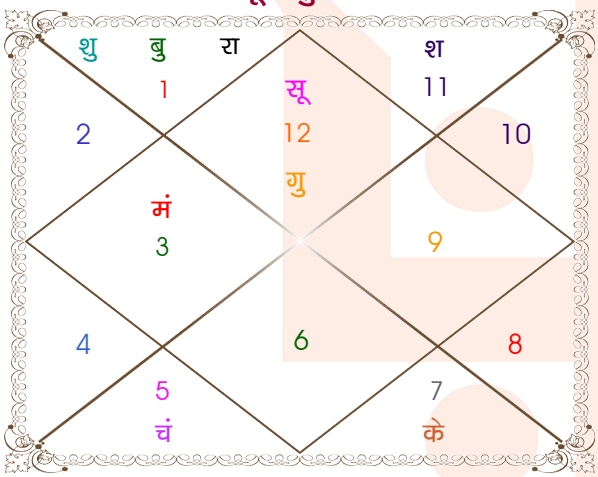

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

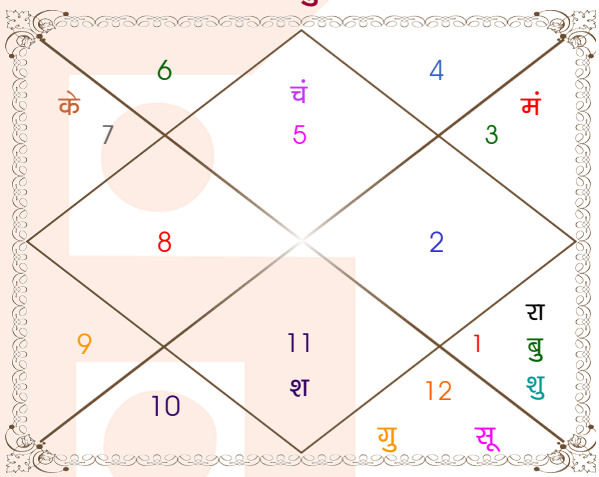

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

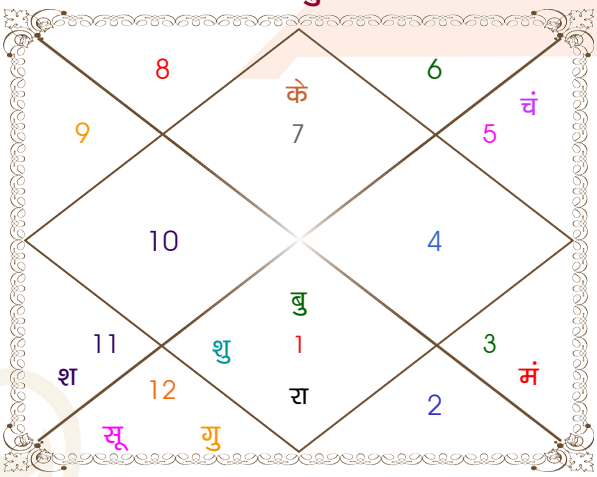

देह विचारः

होरा कुंडली

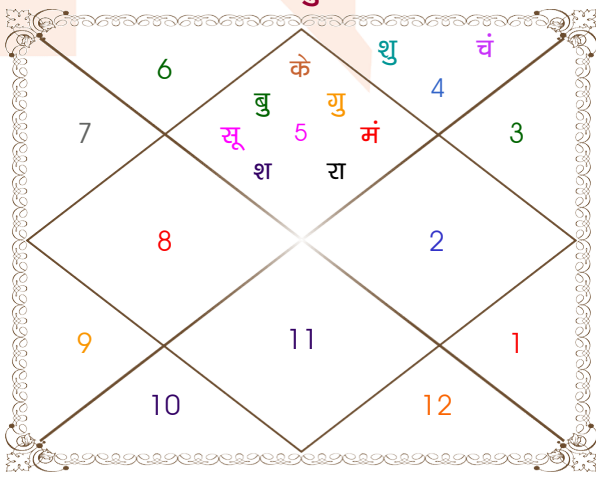

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

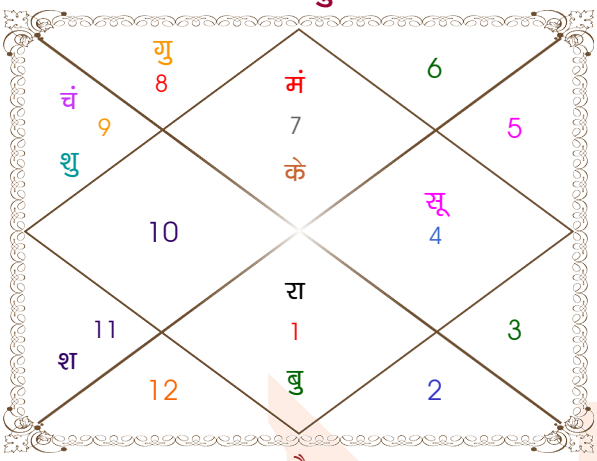

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

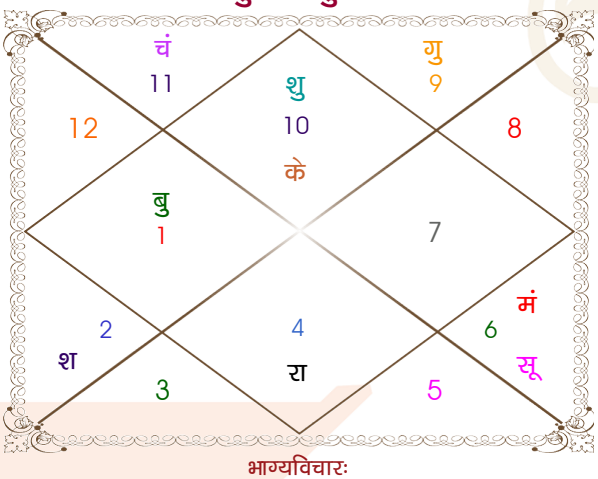

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

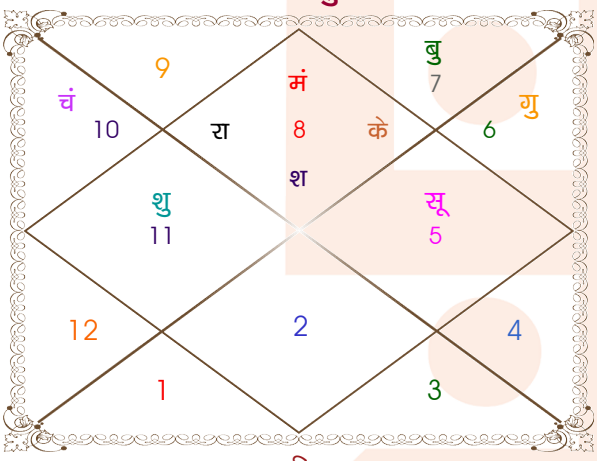

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

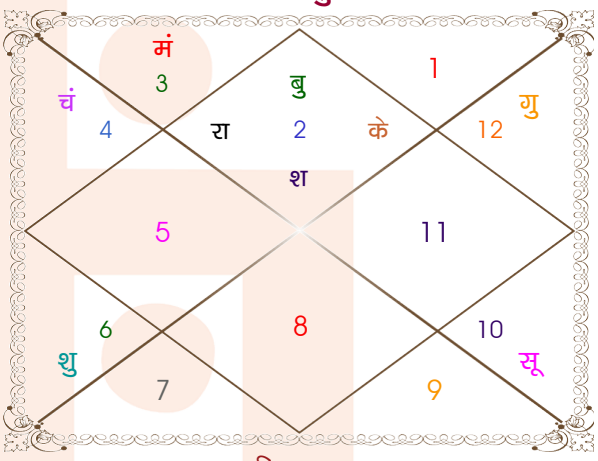

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

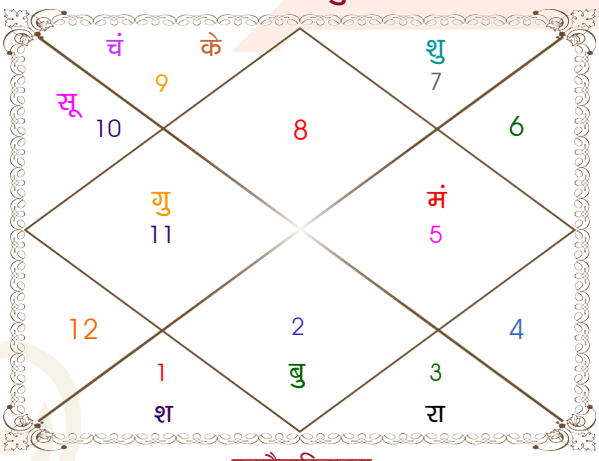

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

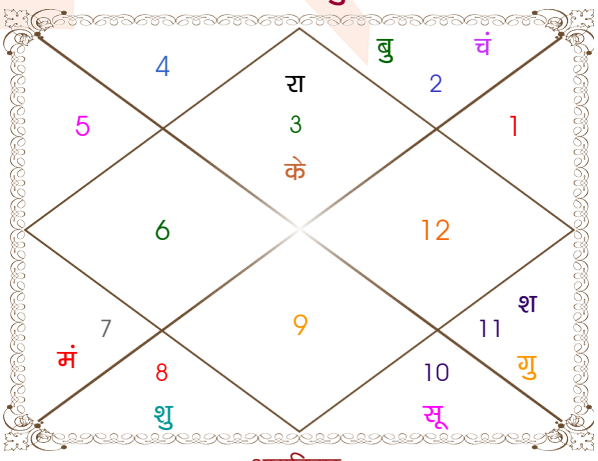

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

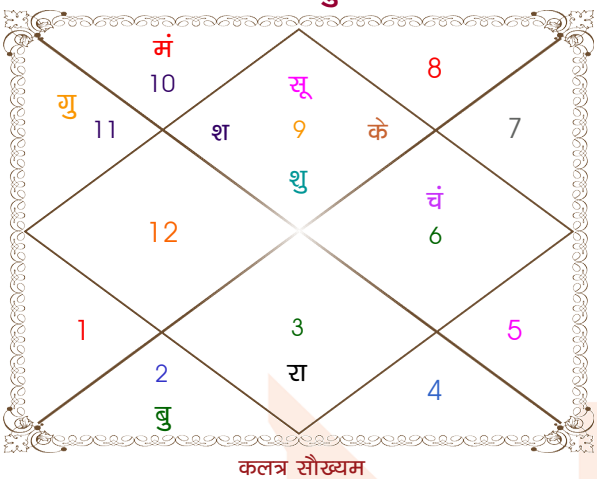

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

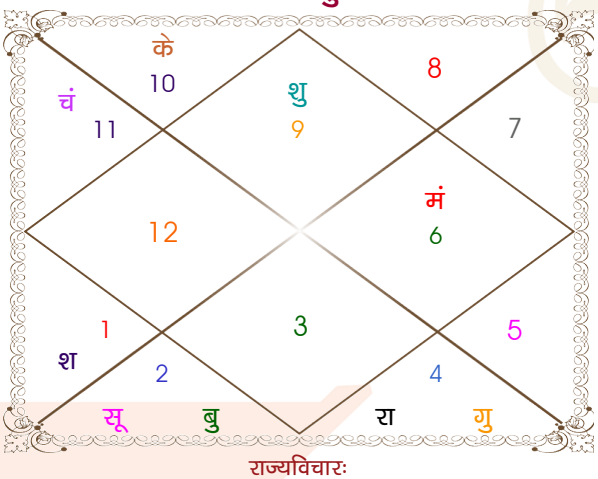

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

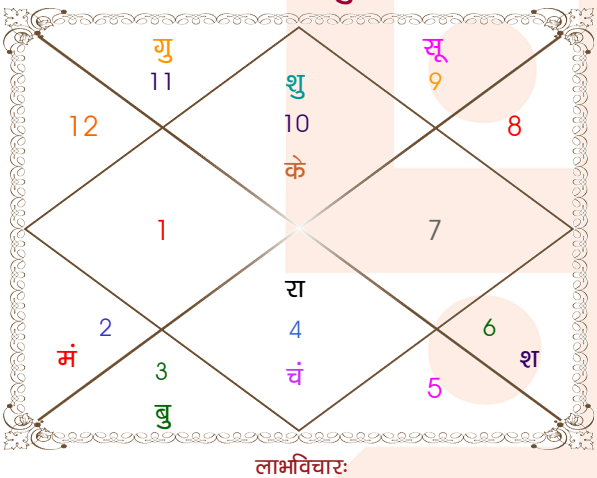

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

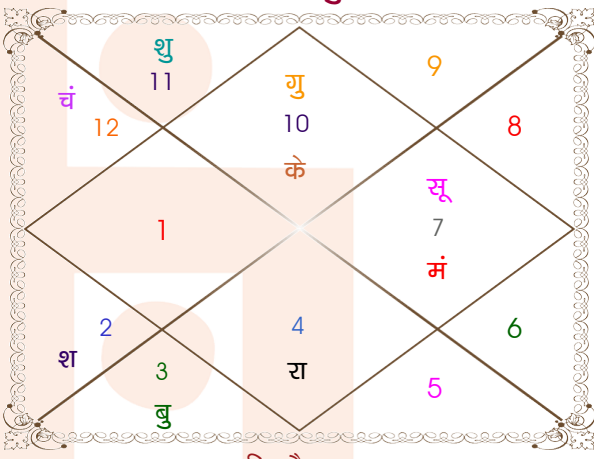

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

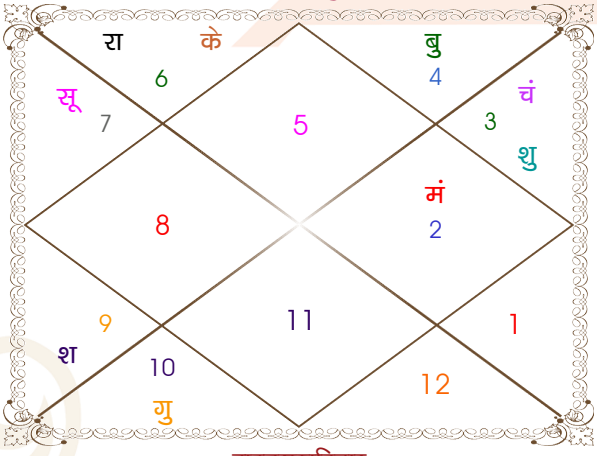

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

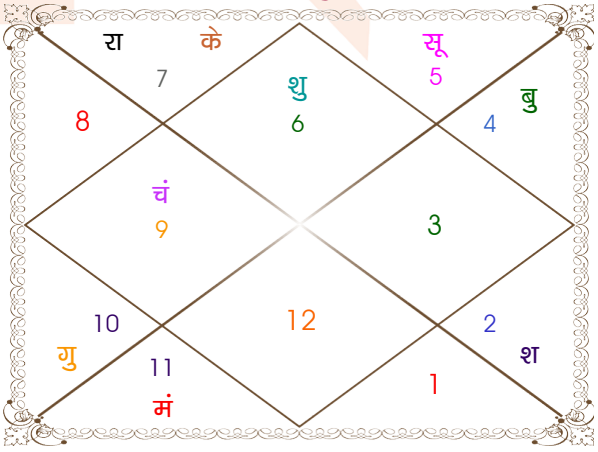

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

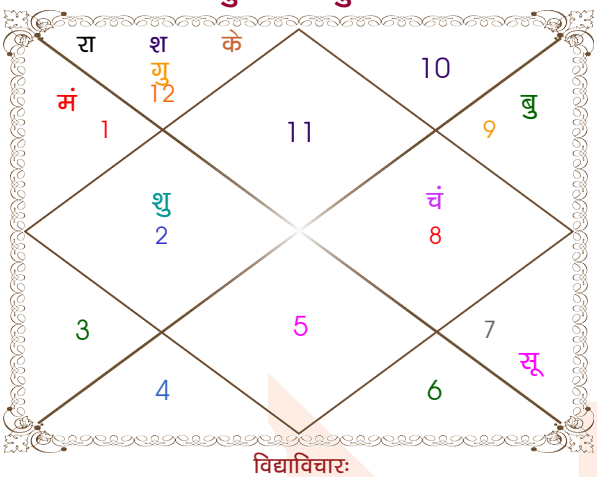

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

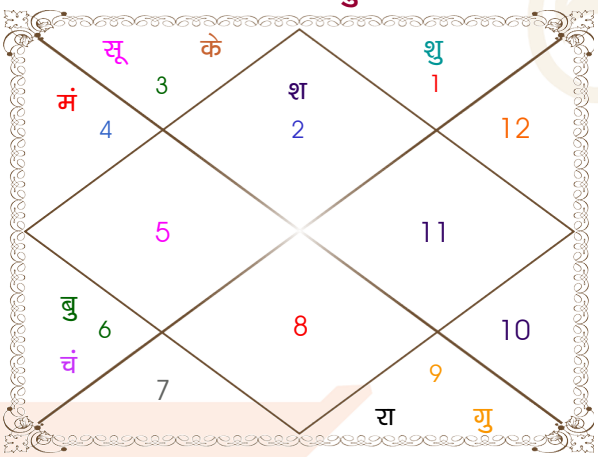

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

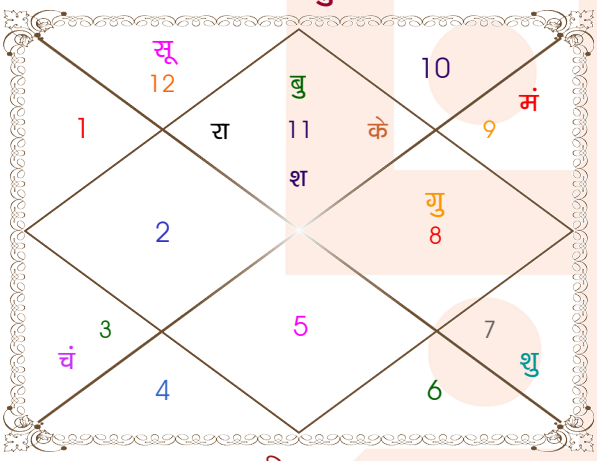

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

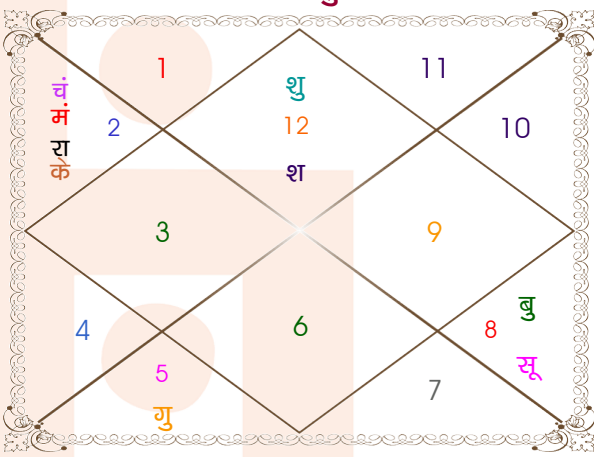

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

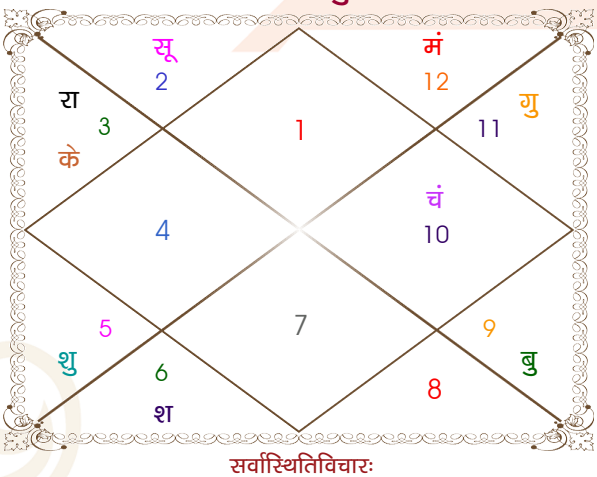

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

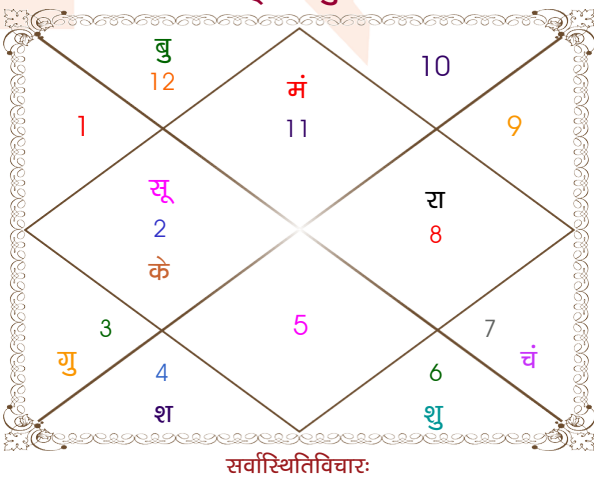

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	तुला	मीन	सिंह	मिथु	मेष	मीन	मेष	कुंभ	मेष	तुला
होरा	सिंह	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	तुला	कर्क	धनु	तुला	मेष	वृश्चि	धनु	कुंभ	मेष	तुला
चतुर्थांश	मक	कन्या	कुंभ	कन्या	मेष	धनु	मक	वृष	कर्क	मक
सप्तमांश	वृश्चि	मक	धनु	सिंह	वृष	कुंभ	तुला	मेष	मिथु	धनु
नवमांश	धनु	धनु	कन्या	मक	वृष	कुंभ	धनु	धनु	मिथु	धनु
दशमांश	धनु	वृष	कुंभ	कन्या	वृष	कर्क	धनु	मेष	कर्क	मक
द्वादशांश	मक	तुला	मीन	तुला	मिथु	मक	कुंभ	वृष	कर्क	मक
षोडशांश	सिंह	तुला	मिथु	वृष	कर्क	मक	मिथु	धनु	कन्या	कन्या
विंशांश	कन्या	सिंह	धनु	कुंभ	कर्क	मक	कन्या	वृष	तुला	तुला
चतुर्विंशांश	कुंभ	तुला	वृश्चि	मेष	धनु	मीन	वृष	मीन	मीन	मीन
सप्तविंशांश	वृष	मिथु	कन्या	कर्क	कन्या	धनु	मेष	वृष	धनु	मिथु
त्रिंशांश	कुंभ	मीन	मिथु	धनु	कुंभ	वृश्चि	तुला	कुंभ	कुंभ	कुंभ
खवेदांश	मीन	वृश्चि	वृष	वृष	वृश्चि	सिंह	मीन	मीन	वृष	वृष
अक्षवेदांश	मेष	वृष	मक	मीन	धनु	कुंभ	सिंह	कन्या	मिथु	मिथु
षष्ट्यंश	कुंभ	वृष	तुला	कुंभ	मीन	मिथु	कन्या	कर्क	वृश्चि	वृष

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
चन्द्र	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
मंगल	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
बुध	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
गुरु	1 ---	1 ---	2 पारिजात	5 कन्दुक
शुक्र	1 ---	2 किंसुक	2 पारिजात	4 नागपुष्प
शनि	3 व्यंजन	3 व्यंजन	3 उत्तम	3 कुसुम
राहु	1 ---	2 किंसुक	3 उत्तम	4 नागपुष्प
केतु	1 ---	2 किंसुक	2 पारिजात	3 कुसुम

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	11.00	10.10	11.95	14.55	16.75	14.55	17.55	9.15	8.00
सप्तवर्ग	11.00	9.88	12.78	14.05	16.35	15.18	15.80	8.85	7.70
दशवर्ग	10.75	9.10	11.95	13.73	14.20	13.60	12.35	9.18	7.83
षोडशवर्ग	11.20	9.35	11.53	13.15	15.05	13.40	14.00	9.38	8.08

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
चंद्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
मंगल	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
बुध	मित्र	शत्रु	मित्र	---	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
गुरु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	---	मित्र	शत्रु	शत्रु
शनि	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	मित्र	सम	सम	सम	सम	अधिशत्रु
चंद्र	सम	---	मित्र	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	सम
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	सम	सम
बुध	अतिमित्र	अधिशत्रु	मित्र	---	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
गुरु	सम	सम	अतिमित्र	सम	---	सम	मित्र	मित्र	शत्रु
शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	अतिमित्र	सम	सम
शनि	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	सम	अधिशत्रु	सम	शत्रु	मित्र	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	शत्रु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	53	25	16	7	27	50	24
सप्तवर्गज बल	75	64	109	113	128	129	152
ओजयुग्मक बल	15	15	15	15	15	0	30
केन्द्र बल	15	30	15	60	15	60	30
द्रेष्काण बल	0	0	0	0	0	15	0
कुल स्थान बल	158	133	155	194	184	254	236
कुल दिग्बल	23	13	50	1	4	24	40
नतोन्नत बल	22	38	38	60	22	22	38
पक्ष बल	10	100	10	50	50	50	10
त्रिभाग बल	0	60	0	0	60	0	0
अब्द बल	0	0	15	0	0	0	0
मास बल	0	0	0	0	0	0	30
वार बल	0	45	0	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	60	0	0	0
अयन बल	74	22	60	45	40	53	44
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	106	265	123	215	172	125	122
कुल चेष्टाबल	0	0	32	33	3	33	13
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	7	2	-1	5	7	-14	1
कुल षट्बल	355	464	376	474	405	467	420
रूप षट्बल	5.9	7.7	6.3	7.9	6.7	7.8	7.0
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.2	1.3	1.3	1.1	1.0	1.4	1.4
संबंधित पद	5	3	4	6	7	1	2

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	42.82	35.02	22.73	14.97	8.94	40.84	17.69
कष्ट फल	13.24	18.82	34.83	38.18	43.47	16.30	41.20

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	467	376	405	420	420	405	376	467	474	464	355	474
भावदिग्बल	60	10	40	0	20	40	30	40	20	0	50	50
भावदृष्टि बल	89	80	80	16	1	9	5	0	34	78	61	6
कुल भाव बल	615	466	525	436	440	453	411	506	528	543	466	529
रूप भाव बल	10.3	7.8	8.7	7.3	7.3	7.6	6.9	8.4	8.8	9.0	7.8	8.8
संबंधित पद	1	7	5	11	10	9	12	6	4	2	8	3

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	तुला	08:17:29	--	--	स्वाति	1	15
गुलिक	गु	तुला	28:24:09	--	--	विशाखा	3	16
काल	का	वृश्चि	17:07:53	--	--	ज्येष्ठा	1	18
मृत्यु	मृ	धनु	27:29:08	--	--	उत्तराषाढ़ा	1	21
यमघंटक	यम	कुंभ	19:25:16	--	--	शतभिषा	4	24
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	मक	21:16:46	--	--	श्रवण	4	22
धूम	धू	सिंह	02:42:20	उच्च	--	मघा	1	10
व्यतिपात	व्य	वृश्चि	27:17:40	उच्च	--	ज्येष्ठा	4	18
परिवेश	परि	वृष	27:17:40	--	--	मृगशिरा	2	5
इन्द्रचाप	इ	कुंभ	02:42:20	--	--	धनिष्ठा	3	23
उपकेतु	उप	कुंभ	19:22:20	उच्च	--	शतभिषा	4	24

प्राणपद	:	मक	26:10:00	कारकाँश लग्न	:	धनु	01:55:36
भाव लग्न	:	तुला	16:42:43	होरा लग्न	:	वृष	14:03:06
घटी लग्न	:	कुंभ	06:04:15	वर्णद लग्न	:	सिंह	07:39:24

उपग्रह कुंडली

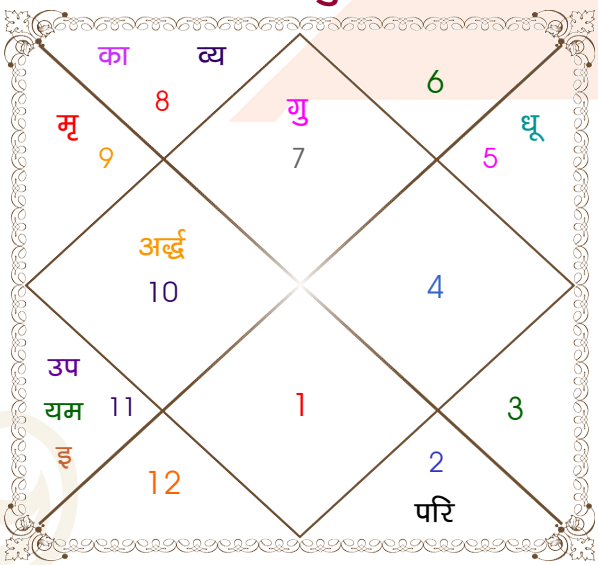

आरूढ़ कुंडली

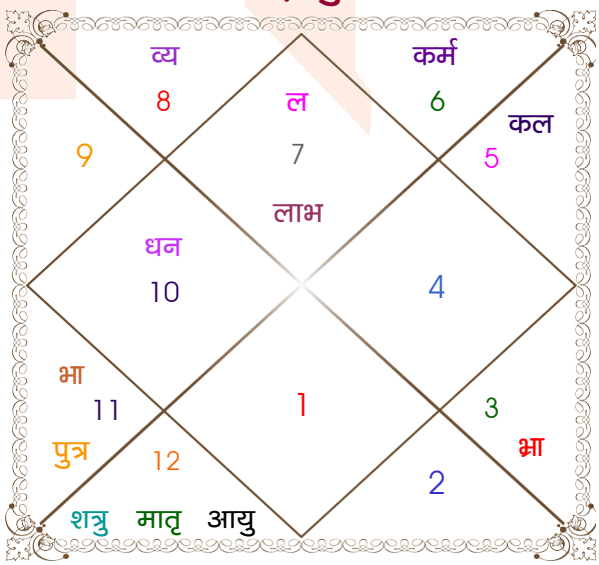

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	4
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	3
बुध	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	7
चंद्र	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
लग्न	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	6
कुल	6	2	2	4	3	4	6	4	3	5	6	3	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	कुल
शनि	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	4
गुरु	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
मंगल	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	1	6
सूर्य	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	6
शुक्र	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	7
बुध	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	4
कुल	6	2	6	2	5	5	3	3	5	2	5	5	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	7
गुरु	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	5
शुक्र	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	4
बुध	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	4
चंद्र	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	3
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	5
कुल	3	3	5	4	3	2	5	4	4	3	1	2	39

बुध का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
गुरु	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4
मंगल	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
सूर्य	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	5
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	6
लग्न	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	7
कुल	3	4	4	4	6	4	3	5	4	6	6	5	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	7
सूर्य	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	9
शुक्र	0	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	1	6
बुध	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	5
लग्न	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	9
कुल	4	7	4	6	4	3	6	3	2	6	7	4	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	7
गुरु	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	0	5
मंगल	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	5
चंद्र	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	9
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	8
कुल	4	4	5	3	5	4	5	6	6	4	5	1	52

शनि का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	4
मंगल	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	6
सूर्य	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	7
शुक्र	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	3
बुध	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	6
चंद्र	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	3
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	6
कुल	3	5	3	1	3	3	3	3	4	2	4	5	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	कुल
शनि	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	6
गुरु	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	9
मंगल	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	5
सूर्य	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	6
शुक्र	0	1	1	0	0	0	1	1	1	1	1	0	7
बुध	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	7
चंद्र	1	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	1	5	5	4	3	3	5	5	5	6	5	2	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	1	3	3	3	3	4	2	4	5	3	5	39
गुरु	7	4	6	4	3	6	3	2	6	7	4	4	56
मंगल	1	2	3	3	5	4	3	2	5	4	4	3	39
सूर्य	2	2	4	3	4	6	4	3	5	6	3	6	48
शुक्र	4	4	5	3	5	4	5	6	6	4	5	1	52
बुध	3	4	4	4	6	4	3	5	4	6	6	5	54
चंद्र	5	2	5	5	6	2	6	2	5	5	3	3	49
बिन्दु	25	19	30	25	32	29	28	22	35	37	28	27	337
रेखा	31	37	26	31	24	27	28	34	21	19	28	29	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	1	0	2	1	0	1	4	0	3	12
गुरु	4	0	3	2	0	2	0	0	3	3	1	2	20
मंगल	0	0	0	1	4	2	0	0	4	2	1	1	15
सूर्य	0	0	1	0	2	4	1	0	3	4	0	3	18
शुक्र	0	0	0	2	1	0	0	5	2	0	0	0	10
बुध	0	0	1	0	3	0	0	1	1	2	3	1	12
चंद्र	0	0	2	3	1	0	3	0	0	3	0	1	13
रेखा	4	0	7	9	11	10	5	6	14	18	5	11	100

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	1	0	2	1	0	0	4	0	3	11
गुरु	4	0	3	2	0	0	0	0	1	2	1	2	15
मंगल	0	0	0	1	4	2	0	0	3	1	1	1	13
सूर्य	0	0	1	0	2	3	1	0	0	4	0	3	14
शुक्र	0	0	0	2	1	0	0	5	2	0	0	0	10
बुध	0	0	1	0	3	0	0	1	0	0	3	1	9
चंद्र	0	0	2	3	1	0	3	0	0	3	0	1	13
रेखा	4	0	7	9	11	7	5	6	6	14	5	11	85

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	106	86	109	91	114	76	77
ग्रह पिंड	63	36	40	53	107	5	45
शोध्य पिंड	169	122	149	144	221	81	122

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

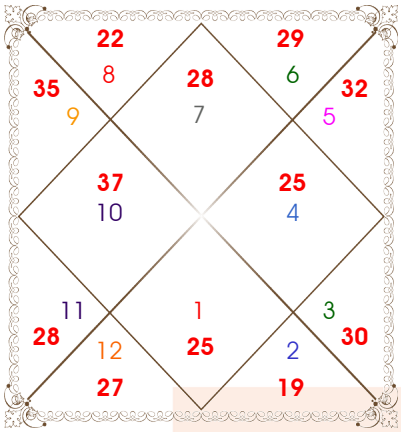

सूर्य का अष्टकवर्ग

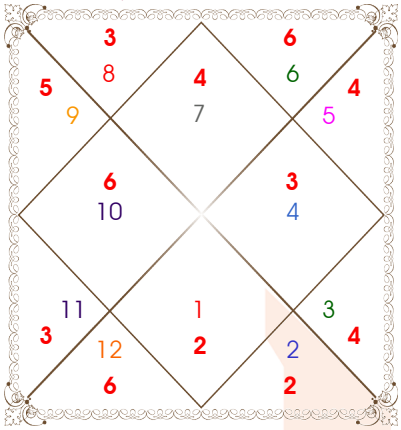

चंद्र का अष्टकवर्ग

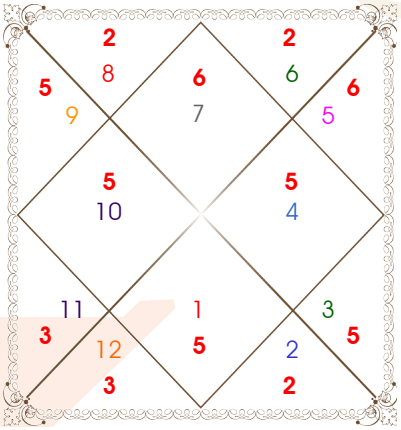

मंगल का अष्टकवर्ग

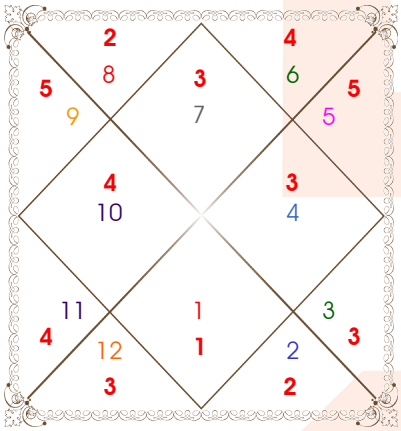

बुध का अष्टकवर्ग

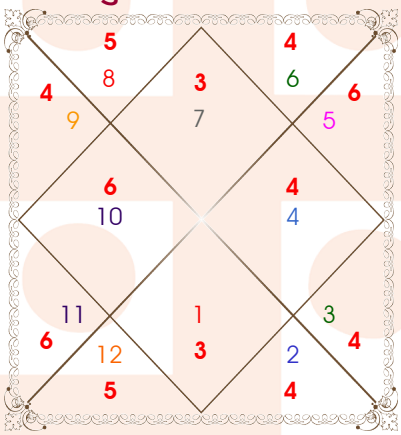

गुरू का अष्टकवर्ग

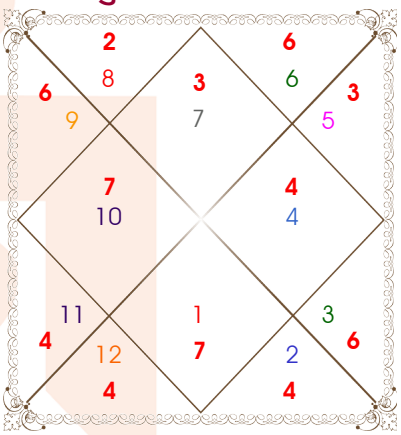

शुक्र का अष्टकवर्ग

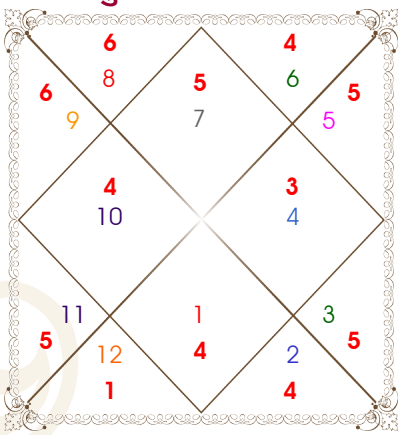

शनि का अष्टकवर्ग

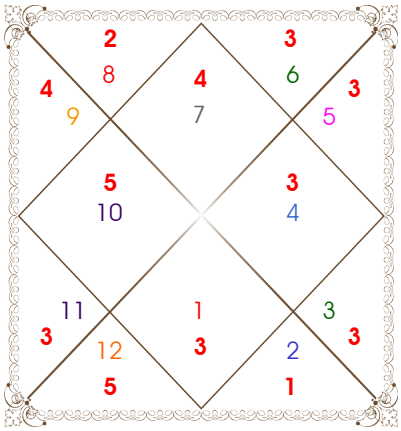

लग्न का अष्टकवर्ग

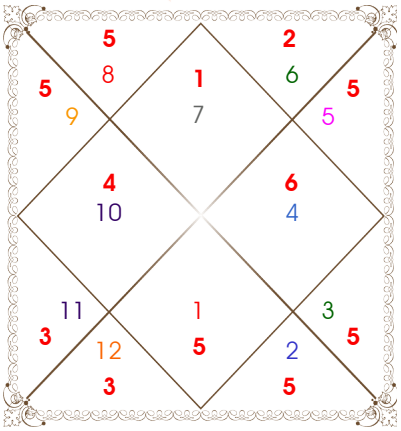

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 10 वर्ष 10 मास 8 दिन

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
03/04/2023		09/02/2034		10/02/2040		09/02/2050		09/02/2057	
09/02/2034		10/02/2040		09/02/2050		09/02/2057		10/02/2075	
	00/00/0000	सूर्य	30/05/2034	चंद्र	10/12/2040	मंगल	09/07/2050	राहु	23/10/2059
	00/00/0000	चंद्र	29/11/2034	मंगल	11/07/2041	राहु	27/07/2051	गुरु	18/03/2062
	00/00/0000	मंगल	06/04/2035	राहु	10/01/2043	गुरु	02/07/2052	शनि	22/01/2065
	03/04/2023	राहु	28/02/2036	गुरु	11/05/2044	शनि	11/08/2053	बुध	11/08/2067
राहु	11/04/2024	गुरु	16/12/2036	शनि	11/12/2045	बुध	08/08/2054	केतु	29/08/2068
गुरु	11/12/2026	शनि	28/11/2037	बुध	12/05/2047	केतु	04/01/2055	शुक्र	30/08/2071
शनि	09/02/2030	बुध	05/10/2038	केतु	11/12/2047	शुक्र	05/03/2056	सूर्य	23/07/2072
बुध	10/12/2032	केतु	10/02/2039	शुक्र	11/08/2049	सूर्य	11/07/2056	चंद्र	22/01/2074
केतु	09/02/2034	शुक्र	10/02/2040	सूर्य	09/02/2050	चंद्र	09/02/2057	मंगल	10/02/2075

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
10/02/2075		10/02/2091		10/02/2110		11/02/2127		10/02/2134	
10/02/2091		10/02/2110		11/02/2127		10/02/2134		00/00/0000	
गुरु	30/03/2077	शनि	13/02/2094	बुध	09/07/2112	केतु	10/07/2127	शुक्र	12/06/2137
शनि	11/10/2079	बुध	23/10/2096	केतु	06/07/2113	शुक्र	08/09/2128	सूर्य	12/06/2138
बुध	16/01/2082	केतु	01/12/2097	शुक्र	06/05/2116	सूर्य	14/01/2129	चंद्र	11/02/2140
केतु	23/12/2082	शुक्र	01/02/2101	सूर्य	13/03/2117	चंद्र	15/08/2129	मंगल	12/04/2141
शुक्र	23/08/2085	सूर्य	14/01/2102	चंद्र	12/08/2118	मंगल	11/01/2130	राहु	04/04/2143
सूर्य	11/06/2086	चंद्र	15/08/2103	मंगल	09/08/2119	राहु	30/01/2131		00/00/0000
चंद्र	11/10/2087	मंगल	23/09/2104	राहु	26/02/2122	गुरु	05/01/2132		00/00/0000
मंगल	16/09/2088	राहु	31/07/2107	गुरु	03/06/2124	शनि	13/02/2133		00/00/0000
राहु	10/02/2091	गुरु	10/02/2110	शनि	11/02/2127	बुध	10/02/2134		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 10 वर्ष 9 मा 24 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु	
03/04/2023		11/04/2024		11/12/2026		09/02/2030		10/12/2032	
11/04/2024		11/12/2026		09/02/2030		10/12/2032		09/02/2034	
	00/00/0000	गुरु	19/08/2024	शनि	12/06/2027	बुध	06/07/2030	केतु	04/01/2033
	00/00/0000	शनि	20/01/2025	बुध	23/11/2027	केतु	04/09/2030	शुक्र	16/03/2033
	00/00/0000	बुध	07/06/2025	केतु	29/01/2028	शुक्र	24/02/2031	सूर्य	07/04/2033
	00/00/0000	केतु	03/08/2025	शुक्र	09/08/2028	सूर्य	17/04/2031	चंद्र	12/05/2033
	03/04/2023	शुक्र	12/01/2026	सूर्य	06/10/2028	चंद्र	12/07/2031	मंगल	06/06/2033
शुक्र	14/09/2023	सूर्य	02/03/2026	चंद्र	10/01/2029	मंगल	10/09/2031	राहु	09/08/2033
सूर्य	08/11/2023	चंद्र	22/05/2026	मंगल	19/03/2029	राहु	13/02/2032	गुरु	05/10/2033
चंद्र	07/02/2024	मंगल	18/07/2026	राहु	08/09/2029	गुरु	30/06/2032	शनि	11/12/2033
मंगल	11/04/2024	राहु	11/12/2026	गुरु	09/02/2030	शनि	10/12/2032	बुध	09/02/2034

सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु	
09/02/2034		30/05/2034		29/11/2034		06/04/2035		28/02/2036	
30/05/2034		29/11/2034		06/04/2035		28/02/2036		16/12/2036	
सूर्य	15/02/2034	चंद्र	14/06/2034	मंगल	06/12/2034	राहु	25/05/2035	गुरु	07/04/2036
चंद्र	24/02/2034	मंगल	25/06/2034	राहु	25/12/2034	गुरु	08/07/2035	शनि	23/05/2036
मंगल	02/03/2034	राहु	22/07/2034	गुरु	11/01/2035	शनि	29/08/2035	बुध	04/07/2036
राहु	19/03/2034	गुरु	16/08/2034	शनि	01/02/2035	बुध	14/10/2035	केतु	21/07/2036
गुरु	03/04/2034	शनि	14/09/2034	बुध	19/02/2035	केतु	02/11/2035	शुक्र	08/09/2036
शनि	20/04/2034	बुध	09/10/2034	केतु	26/02/2035	शुक्र	27/12/2035	सूर्य	22/09/2036
बुध	05/05/2034	केतु	20/10/2034	शुक्र	19/03/2035	सूर्य	13/01/2036	चंद्र	17/10/2036
केतु	12/05/2034	शुक्र	20/11/2034	सूर्य	26/03/2035	चंद्र	09/02/2036	मंगल	03/11/2036
शुक्र	30/05/2034	सूर्य	29/11/2034	चंद्र	06/04/2035	मंगल	28/02/2036	राहु	16/12/2036

सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र	
16/12/2036		28/11/2037		05/10/2038		10/02/2039		10/02/2040	
28/11/2037		05/10/2038		10/02/2039		10/02/2040		10/12/2040	
शनि	09/02/2037	बुध	11/01/2038	केतु	12/10/2038	शुक्र	12/04/2039	चंद्र	06/03/2040
बुध	31/03/2037	केतु	30/01/2038	शुक्र	03/11/2038	सूर्य	30/04/2039	मंगल	24/03/2040
केतु	20/04/2037	शुक्र	22/03/2038	सूर्य	09/11/2038	चंद्र	30/05/2039	राहु	09/05/2040
शुक्र	17/06/2037	सूर्य	07/04/2038	चंद्र	20/11/2038	मंगल	21/06/2039	गुरु	18/06/2040
सूर्य	04/07/2037	चंद्र	03/05/2038	मंगल	27/11/2038	राहु	14/08/2039	शनि	06/08/2040
चंद्र	02/08/2037	मंगल	21/05/2038	राहु	16/12/2038	गुरु	02/10/2039	बुध	18/09/2040
मंगल	22/08/2037	राहु	06/07/2038	गुरु	02/01/2039	शनि	29/11/2039	केतु	05/10/2040
राहु	13/10/2037	गुरु	17/08/2038	शनि	23/01/2039	बुध	20/01/2040	शुक्र	25/11/2040
गुरु	28/11/2037	शनि	05/10/2038	बुध	10/02/2039	केतु	10/02/2040	सूर्य	10/12/2040

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध	
10/12/2040		11/07/2041		10/01/2043		11/05/2044		11/12/2045	
11/07/2041		10/01/2043		11/05/2044		11/12/2045		12/05/2047	
मंगल	23/12/2040	राहु	02/10/2041	गुरु	16/03/2043	शनि	11/08/2044	बुध	22/02/2046
राहु	24/01/2041	गुरु	14/12/2041	शनि	01/06/2043	बुध	01/11/2044	केतु	24/03/2046
गुरु	21/02/2041	शनि	10/03/2042	बुध	09/08/2043	केतु	05/12/2044	शुक्र	18/06/2046
शनि	27/03/2041	बुध	27/05/2042	केतु	07/09/2043	शुक्र	11/03/2045	सूर्य	14/07/2046
बुध	26/04/2041	केतु	28/06/2042	शुक्र	27/11/2043	सूर्य	09/04/2045	चंद्र	26/08/2046
केतु	09/05/2041	शुक्र	27/09/2042	सूर्य	21/12/2043	चंद्र	27/05/2045	मंगल	26/09/2046
शुक्र	13/06/2041	सूर्य	25/10/2042	चंद्र	31/01/2044	मंगल	30/06/2045	राहु	12/12/2046
सूर्य	24/06/2041	चंद्र	09/12/2042	मंगल	28/02/2044	राहु	25/09/2045	गुरु	19/02/2047
चंद्र	11/07/2041	मंगल	10/01/2043	राहु	11/05/2044	गुरु	11/12/2045	शनि	12/05/2047

चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु	
12/05/2047		11/12/2047		11/08/2049		09/02/2050		09/07/2050	
11/12/2047		11/08/2049		09/02/2050		09/07/2050		27/07/2051	
केतु	24/05/2047	शुक्र	22/03/2048	सूर्य	20/08/2049	मंगल	18/02/2050	राहु	04/09/2050
शुक्र	29/06/2047	सूर्य	21/04/2048	चंद्र	04/09/2049	राहु	13/03/2050	गुरु	25/10/2050
सूर्य	10/07/2047	चंद्र	11/06/2048	मंगल	15/09/2049	गुरु	01/04/2050	शनि	25/12/2050
चंद्र	27/07/2047	मंगल	16/07/2048	राहु	12/10/2049	शनि	25/04/2050	बुध	17/02/2051
मंगल	09/08/2047	राहु	16/10/2048	गुरु	06/11/2049	बुध	16/05/2050	केतु	12/03/2051
राहु	10/09/2047	गुरु	05/01/2049	शनि	05/12/2049	केतु	25/05/2050	शुक्र	15/05/2051
गुरु	08/10/2047	शनि	11/04/2049	बुध	30/12/2049	शुक्र	19/06/2050	सूर्य	03/06/2051
शनि	11/11/2047	बुध	06/07/2049	केतु	10/01/2050	सूर्य	26/06/2050	चंद्र	05/07/2051
बुध	11/12/2047	केतु	11/08/2049	शुक्र	09/02/2050	चंद्र	09/07/2050	मंगल	27/07/2051

मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र	
27/07/2051		02/07/2052		11/08/2053		08/08/2054		04/01/2055	
02/07/2052		11/08/2053		08/08/2054		04/01/2055		05/03/2056	
गुरु	11/09/2051	शनि	04/09/2052	बुध	01/10/2053	केतु	17/08/2054	शुक्र	16/03/2055
शनि	04/11/2051	बुध	31/10/2052	केतु	22/10/2053	शुक्र	11/09/2054	सूर्य	07/04/2055
बुध	22/12/2051	केतु	24/11/2052	शुक्र	22/12/2053	सूर्य	18/09/2054	चंद्र	12/05/2055
केतु	11/01/2052	शुक्र	31/01/2053	सूर्य	09/01/2054	चंद्र	01/10/2054	मंगल	06/06/2055
शुक्र	08/03/2052	सूर्य	20/02/2053	चंद्र	08/02/2054	मंगल	09/10/2054	राहु	09/08/2055
सूर्य	25/03/2052	चंद्र	26/03/2053	मंगल	01/03/2054	राहु	01/11/2054	गुरु	05/10/2055
चंद्र	22/04/2052	मंगल	18/04/2053	राहु	24/04/2054	गुरु	20/11/2054	शनि	11/12/2055
मंगल	12/05/2052	राहु	18/06/2053	गुरु	12/06/2054	शनि	14/12/2054	बुध	09/02/2056
राहु	02/07/2052	गुरु	11/08/2053	शनि	08/08/2054	बुध	04/01/2055	केतु	05/03/2056

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि	
05/03/2056		11/07/2056		09/02/2057		23/10/2059		18/03/2062	
11/07/2056		09/02/2057		23/10/2059		18/03/2062		22/01/2065	
सूर्य	12/03/2056	चंद्र	29/07/2056	राहु	07/07/2057	गुरु	17/02/2060	शनि	30/08/2062
चंद्र	22/03/2056	मंगल	10/08/2056	गुरु	16/11/2057	शनि	05/07/2060	बुध	24/01/2063
मंगल	30/03/2056	राहु	11/09/2056	शनि	21/04/2058	बुध	06/11/2060	केतु	26/03/2063
राहु	18/04/2056	गुरु	10/10/2056	बुध	08/09/2058	केतु	27/12/2060	शुक्र	16/09/2063
गुरु	05/05/2056	शनि	12/11/2056	केतु	04/11/2058	शुक्र	23/05/2061	सूर्य	07/11/2063
शनि	25/05/2056	बुध	13/12/2056	शुक्र	17/04/2059	सूर्य	05/07/2061	चंद्र	01/02/2064
बुध	12/06/2056	केतु	25/12/2056	सूर्य	06/06/2059	चंद्र	16/09/2061	मंगल	02/04/2064
केतु	20/06/2056	शुक्र	30/01/2057	चंद्र	27/08/2059	मंगल	07/11/2061	राहु	05/09/2064
शुक्र	11/07/2056	सूर्य	09/02/2057	मंगल	23/10/2059	राहु	18/03/2062	गुरु	22/01/2065

राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र	
22/01/2065		11/08/2067		29/08/2068		30/08/2071		23/07/2072	
11/08/2067		29/08/2068		30/08/2071		23/07/2072		22/01/2074	
बुध	03/06/2065	केतु	03/09/2067	शुक्र	28/02/2069	सूर्य	15/09/2071	चंद्र	07/09/2072
केतु	27/07/2065	शुक्र	06/11/2067	सूर्य	23/04/2069	चंद्र	12/10/2071	मंगल	09/10/2072
शुक्र	29/12/2065	सूर्य	25/11/2067	चंद्र	24/07/2069	मंगल	01/11/2071	राहु	30/12/2072
सूर्य	14/02/2066	चंद्र	27/12/2067	मंगल	26/09/2069	राहु	20/12/2071	गुरु	13/03/2073
चंद्र	03/05/2066	मंगल	18/01/2068	राहु	09/03/2070	गुरु	02/02/2072	शनि	08/06/2073
मंगल	26/06/2066	राहु	16/03/2068	गुरु	02/08/2070	शनि	25/03/2072	बुध	25/08/2073
राहु	13/11/2066	गुरु	06/05/2068	शनि	22/01/2071	बुध	10/05/2072	केतु	26/09/2073
गुरु	17/03/2067	शनि	06/07/2068	बुध	27/06/2071	केतु	30/05/2072	शुक्र	26/12/2073
शनि	11/08/2067	बुध	29/08/2068	केतु	30/08/2071	शुक्र	23/07/2072	सूर्य	22/01/2074

राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु	
22/01/2074		10/02/2075		30/03/2077		11/10/2079		16/01/2082	
10/02/2075		30/03/2077		11/10/2079		16/01/2082		23/12/2082	
मंगल	14/02/2074	गुरु	25/05/2075	शनि	23/08/2077	बुध	06/02/2080	केतु	05/02/2082
राहु	12/04/2074	शनि	25/09/2075	बुध	02/01/2078	केतु	25/03/2080	शुक्र	03/04/2082
गुरु	02/06/2074	बुध	13/01/2076	केतु	25/02/2078	शुक्र	10/08/2080	सूर्य	20/04/2082
शनि	02/08/2074	केतु	28/02/2076	शुक्र	29/07/2078	सूर्य	20/09/2080	चंद्र	18/05/2082
बुध	25/09/2074	शुक्र	07/07/2076	सूर्य	13/09/2078	चंद्र	28/11/2080	मंगल	07/06/2082
केतु	18/10/2074	सूर्य	15/08/2076	चंद्र	29/11/2078	मंगल	15/01/2081	राहु	28/07/2082
शुक्र	21/12/2074	चंद्र	19/10/2076	मंगल	22/01/2079	राहु	20/05/2081	गुरु	12/09/2082
सूर्य	09/01/2075	मंगल	03/12/2076	राहु	10/06/2079	गुरु	07/09/2081	शनि	05/11/2082
चंद्र	10/02/2075	राहु	30/03/2077	गुरु	11/10/2079	शनि	16/01/2082	बुध	23/12/2082

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु	
23/12/2082		23/08/2085		11/06/2086		11/10/2087		16/09/2088	
23/08/2085		11/06/2086		11/10/2087		16/09/2088		10/02/2091	
शुक्र	03/06/2083	सूर्य	07/09/2085	चंद्र	22/07/2086	मंगल	31/10/2087	राहु	26/01/2089
सूर्य	22/07/2083	चंद्र	01/10/2085	मंगल	19/08/2086	राहु	21/12/2087	गुरु	23/05/2089
चंद्र	11/10/2083	मंगल	18/10/2085	राहु	31/10/2086	गुरु	05/02/2088	शनि	08/10/2089
मंगल	07/12/2083	राहु	01/12/2085	गुरु	04/01/2087	शनि	30/03/2088	बुध	09/02/2090
राहु	01/05/2084	गुरु	09/01/2086	शनि	22/03/2087	बुध	17/05/2088	केतु	02/04/2090
गुरु	08/09/2084	शनि	24/02/2086	बुध	30/05/2087	केतु	06/06/2088	शुक्र	26/08/2090
शनि	09/02/2085	बुध	06/04/2086	केतु	28/06/2087	शुक्र	02/08/2088	सूर्य	09/10/2090
बुध	27/06/2085	केतु	24/04/2086	शुक्र	17/09/2087	सूर्य	19/08/2088	चंद्र	21/12/2090
केतु	23/08/2085	शुक्र	11/06/2086	सूर्य	11/10/2087	चंद्र	16/09/2088	मंगल	10/02/2091

शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
10/02/2091		13/02/2094		23/10/2096		01/12/2097		01/02/2101	
13/02/2094		23/10/2096		01/12/2097		01/02/2101		14/01/2102	
शनि	03/08/2091	बुध	02/07/2094	केतु	15/11/2096	शुक्र	12/06/2098	सूर्य	18/02/2101
बुध	05/01/2092	केतु	28/08/2094	शुक्र	22/01/2097	सूर्य	09/08/2098	चंद्र	19/03/2101
केतु	09/03/2092	शुक्र	08/02/2095	सूर्य	11/02/2097	चंद्र	13/11/2098	मंगल	09/04/2101
शुक्र	09/09/2092	सूर्य	29/03/2095	चंद्र	17/03/2097	मंगल	20/01/2099	राहु	31/05/2101
सूर्य	03/11/2092	चंद्र	19/06/2095	मंगल	09/04/2097	राहु	12/07/2099	गुरु	16/07/2101
चंद्र	02/02/2093	मंगल	15/08/2095	राहु	09/06/2097	गुरु	14/12/2099	शनि	09/09/2101
मंगल	07/04/2093	राहु	10/01/2096	गुरु	02/08/2097	शनि	15/06/2100	बुध	28/10/2101
राहु	19/09/2093	गुरु	20/05/2096	शनि	05/10/2097	बुध	26/11/2100	केतु	17/11/2101
गुरु	13/02/2094	शनि	23/10/2096	बुध	01/12/2097	केतु	01/02/2101	शुक्र	14/01/2102

शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध	
14/01/2102		15/08/2103		23/09/2104		31/07/2107		10/02/2110	
15/08/2103		23/09/2104		31/07/2107		10/02/2110		09/07/2112	
चंद्र	03/03/2102	मंगल	08/09/2103	राहु	26/02/2105	गुरु	02/12/2107	बुध	15/06/2110
मंगल	06/04/2102	राहु	08/11/2103	गुरु	15/07/2105	शनि	26/04/2108	केतु	05/08/2110
राहु	02/07/2102	गुरु	01/01/2104	शनि	27/12/2105	बुध	04/09/2108	शुक्र	30/12/2110
गुरु	17/09/2102	शनि	05/03/2104	बुध	23/05/2106	केतु	28/10/2108	सूर्य	12/02/2111
शनि	17/12/2102	बुध	01/05/2104	केतु	23/07/2106	शुक्र	31/03/2109	चंद्र	26/04/2111
बुध	09/03/2103	केतु	25/05/2104	शुक्र	13/01/2107	सूर्य	17/05/2109	मंगल	17/06/2111
केतु	12/04/2103	शुक्र	31/07/2104	सूर्य	06/03/2107	चंद्र	02/08/2109	राहु	27/10/2111
शुक्र	17/07/2103	सूर्य	20/08/2104	चंद्र	31/05/2107	मंगल	25/09/2109	गुरु	21/02/2112
सूर्य	15/08/2103	चंद्र	23/09/2104	मंगल	31/07/2107	राहु	10/02/2110	शनि	09/07/2112

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल	
09/07/2112		06/07/2113		06/05/2116		13/03/2117		12/08/2118	
06/07/2113		06/05/2116		13/03/2117		12/08/2118		09/08/2119	
केतु	30/07/2112	शुक्र	26/12/2113	सूर्य	22/05/2116	चंद्र	25/04/2117	मंगल	02/09/2118
शुक्र	29/09/2112	सूर्य	16/02/2114	चंद्र	17/06/2116	मंगल	25/05/2117	राहु	27/10/2118
सूर्य	17/10/2112	चंद्र	13/05/2114	मंगल	05/07/2116	राहु	11/08/2117	गुरु	14/12/2118
चंद्र	16/11/2112	मंगल	12/07/2114	राहु	20/08/2116	गुरु	19/10/2117	शनि	09/02/2119
मंगल	07/12/2112	राहु	14/12/2114	गुरु	01/10/2116	शनि	09/01/2118	बुध	02/04/2119
राहु	30/01/2113	गुरु	01/05/2115	शनि	19/11/2116	बुध	23/03/2118	केतु	23/04/2119
गुरु	20/03/2113	शनि	12/10/2115	बुध	02/01/2117	केतु	22/04/2118	शुक्र	22/06/2119
शनि	16/05/2113	बुध	07/03/2116	केतु	20/01/2117	शुक्र	17/07/2118	सूर्य	10/07/2119
बुध	06/07/2113	केतु	06/05/2116	शुक्र	13/03/2117	सूर्य	12/08/2118	चंद्र	09/08/2119

बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र	
09/08/2119		26/02/2122		03/06/2124		11/02/2127		10/07/2127	
26/02/2122		03/06/2124		11/02/2127		10/07/2127		08/09/2128	
राहु	27/12/2119	गुरु	16/06/2122	शनि	05/11/2124	केतु	19/02/2127	शुक्र	19/09/2127
गुरु	29/04/2120	शनि	25/10/2122	बुध	25/03/2125	शुक्र	16/03/2127	सूर्य	10/10/2127
शनि	24/09/2120	बुध	19/02/2123	केतु	21/05/2125	सूर्य	24/03/2127	चंद्र	15/11/2127
बुध	03/02/2121	केतु	09/04/2123	शुक्र	01/11/2125	चंद्र	05/04/2127	मंगल	10/12/2127
केतु	29/03/2121	शुक्र	25/08/2123	सूर्य	20/12/2125	मंगल	14/04/2127	राहु	11/02/2128
शुक्र	31/08/2121	सूर्य	05/10/2123	चंद्र	12/03/2126	राहु	06/05/2127	गुरु	08/04/2128
सूर्य	17/10/2121	चंद्र	13/12/2123	मंगल	08/05/2126	गुरु	26/05/2127	शनि	15/06/2128
चंद्र	02/01/2122	मंगल	30/01/2124	राहु	03/10/2126	शनि	19/06/2127	बुध	14/08/2128
मंगल	26/02/2122	राहु	03/06/2124	गुरु	11/02/2127	बुध	10/07/2127	केतु	08/09/2128

केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु	
08/09/2128		14/01/2129		15/08/2129		11/01/2130		30/01/2131	
14/01/2129		15/08/2129		11/01/2130		30/01/2131		05/01/2132	
सूर्य	14/09/2128	चंद्र	01/02/2129	मंगल	24/08/2129	राहु	10/03/2130	गुरु	16/03/2131
चंद्र	25/09/2128	मंगल	13/02/2129	राहु	15/09/2129	गुरु	30/04/2130	शनि	09/05/2131
मंगल	03/10/2128	राहु	17/03/2129	गुरु	05/10/2129	शनि	29/06/2130	बुध	26/06/2131
राहु	22/10/2128	गुरु	14/04/2129	शनि	28/10/2129	बुध	23/08/2130	केतु	16/07/2131
गुरु	08/11/2128	शनि	18/05/2129	बुध	19/11/2129	केतु	14/09/2130	शुक्र	11/09/2131
शनि	28/11/2128	बुध	17/06/2129	केतु	27/11/2129	शुक्र	17/11/2130	सूर्य	28/09/2131
बुध	16/12/2128	केतु	30/06/2129	शुक्र	22/12/2129	सूर्य	06/12/2130	चंद्र	26/10/2131
केतु	24/12/2128	शुक्र	04/08/2129	सूर्य	30/12/2129	चंद्र	07/01/2131	मंगल	15/11/2131
शुक्र	14/01/2129	सूर्य	15/08/2129	चंद्र	11/01/2130	मंगल	30/01/2131	राहु	05/01/2132

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - गुरु - शुक्र		शुक्र - गुरु - सूर्य		शुक्र - गुरु - चंद्र		शुक्र - गुरु - मंगल	
03/08/2025 05:59		12/01/2026 13:59		02/03/2026 06:47		22/05/2026 10:47	
12/01/2026 13:59		02/03/2026 06:47		22/05/2026 10:47		18/07/2026 06:23	
शुक्र	30/08/2025 07:19	सूर्य	15/01/2026 00:26	चंद्र	09/03/2026 01:07	मंगल	25/05/2026 18:20
सूर्य	07/09/2025 10:07	चंद्र	19/01/2026 01:50	मंगल	13/03/2026 18:45	राहु	03/06/2026 06:52
चंद्र	20/09/2025 22:47	मंगल	21/01/2026 22:01	राहु	25/03/2026 22:57	गुरु	10/06/2026 20:41
मंगल	30/09/2025 10:03	राहु	29/01/2026 05:20	गुरु	05/04/2026 18:41	शनि	19/06/2026 20:35
राहु	24/10/2025 18:27	गुरु	04/02/2026 17:10	शनि	18/04/2026 15:07	बुध	27/06/2026 21:46
गुरु	15/11/2025 09:55	शनि	12/02/2026 10:14	बुध	30/04/2026 03:05	केतु	01/07/2026 05:19
शनि	11/12/2025 02:47	बुध	19/02/2026 07:49	केतु	04/05/2026 20:43	शुक्र	10/07/2026 16:35
बुध	03/01/2026 02:43	केतु	22/02/2026 03:59	शुक्र	18/05/2026 09:23	सूर्य	13/07/2026 12:45
केतु	12/01/2026 13:59	शुक्र	02/03/2026 06:47	सूर्य	22/05/2026 10:47	चंद्र	18/07/2026 06:23

शुक्र - गुरु - राहु		शुक्र - शनि - शनि		शुक्र - शनि - बुध		शुक्र - शनि - केतु	
18/07/2026 06:23		11/12/2026 08:47		12/06/2027 11:58		23/11/2027 08:29	
11/12/2026 08:47		12/06/2027 11:58		23/11/2027 08:29		29/01/2028 19:46	
राहु	09/08/2026 04:21	शनि	09/01/2027 08:42	बुध	05/07/2027 17:04	केतु	27/11/2027 06:57
गुरु	28/08/2026 15:52	बुध	04/02/2027 07:21	केतु	15/07/2027 06:28	शुक्र	08/12/2027 12:50
शनि	20/09/2026 19:03	केतु	14/02/2027 23:44	शुक्र	11/08/2027 13:53	सूर्य	11/12/2027 21:47
बुध	11/10/2026 11:47	शुक्र	17/03/2027 12:15	सूर्य	19/08/2027 18:31	चंद्र	17/12/2027 12:44
केतु	20/10/2026 00:20	सूर्य	26/03/2027 16:01	चंद्र	02/09/2027 10:14	मंगल	21/12/2027 11:11
शुक्र	13/11/2026 08:44	चंद्र	10/04/2027 22:17	मंगल	11/09/2027 23:37	राहु	31/12/2027 14:05
सूर्य	20/11/2026 16:03	मंगल	21/04/2027 14:40	राहु	06/10/2027 13:30	गुरु	09/01/2028 13:59
चंद्र	02/12/2026 20:15	राहु	19/05/2027 01:56	गुरु	28/10/2027 09:50	शनि	20/01/2028 06:22
मंगल	11/12/2026 08:47	गुरु	12/06/2027 11:58	शनि	23/11/2027 08:29	बुध	29/01/2028 19:46

शुक्र - शनि - शुक्र		शुक्र - शनि - सूर्य		शुक्र - शनि - चंद्र		शुक्र - शनि - मंगल	
29/01/2028 19:46		09/08/2028 14:16		06/10/2028 10:13		10/01/2029 19:28	
09/08/2028 14:16		06/10/2028 10:13		10/01/2029 19:28		19/03/2029 06:44	
शुक्र	01/03/2028 22:51	सूर्य	12/08/2028 11:40	चंद्र	14/10/2028 10:59	मंगल	14/01/2029 17:55
सूर्य	11/03/2028 14:10	चंद्र	17/08/2028 07:19	मंगल	20/10/2028 01:55	राहु	24/01/2029 20:49
चंद्र	27/03/2028 15:43	मंगल	20/08/2028 16:17	राहु	03/11/2028 12:55	गुरु	02/02/2029 20:43
मंगल	07/04/2028 21:36	राहु	29/08/2028 08:29	गुरु	16/11/2028 09:21	शनि	13/02/2029 13:06
राहु	06/05/2028 19:34	गुरु	06/09/2028 01:32	शनि	01/12/2028 15:37	बुध	23/02/2029 02:30
गुरु	01/06/2028 12:26	शनि	15/09/2028 05:18	बुध	15/12/2028 07:19	केतु	27/02/2029 00:57
शनि	02/07/2028 00:58	बुध	23/09/2028 09:56	केतु	20/12/2028 22:16	शुक्र	10/03/2029 06:50
बुध	29/07/2028 08:23	केतु	26/09/2028 18:53	शुक्र	05/01/2029 23:48	सूर्य	13/03/2029 15:48
केतु	09/08/2028 14:16	शुक्र	06/10/2028 10:13	सूर्य	10/01/2029 19:28	चंद्र	19/03/2029 06:44

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - शनि - राहु		शुक्र - शनि - गुरु		शुक्र - बुध - बुध		शुक्र - बुध - केतु	
19/03/2029 06:44		08/09/2029 18:35		09/02/2030 23:47		06/07/2030 14:22	
08/09/2029 18:35		09/02/2030 23:47		06/07/2030 14:22		04/09/2030 23:11	
राहु	14/04/2029 07:19	गुरु	29/09/2029 08:05	बुध	02/03/2030 18:15	केतु	10/07/2030 02:53
गुरु	07/05/2029 10:30	शनि	23/10/2029 18:06	केतु	11/03/2030 07:30	शुक्र	20/07/2030 04:21
शनि	03/06/2029 21:46	बुध	14/11/2029 14:27	शुक्र	04/04/2030 17:56	सूर्य	23/07/2030 04:47
बुध	28/06/2029 11:39	केतु	23/11/2029 14:21	सूर्य	12/04/2030 01:52	चंद्र	28/07/2030 05:32
केतु	08/07/2029 14:33	शुक्र	19/12/2029 07:13	चंद्र	24/04/2030 07:05	मंगल	31/07/2030 18:02
शुक्र	06/08/2029 12:31	सूर्य	27/12/2029 00:16	मंगल	02/05/2030 20:20	राहु	09/08/2030 19:22
सूर्य	15/08/2029 04:43	चंद्र	08/01/2030 20:42	राहु	24/05/2030 20:07	गुरु	17/08/2030 20:33
चंद्र	29/08/2029 15:42	मंगल	17/01/2030 20:37	गुरु	13/06/2030 09:15	शनि	27/08/2030 09:56
मंगल	08/09/2029 18:35	राहु	09/02/2030 23:47	शनि	06/07/2030 14:22	बुध	04/09/2030 23:11

शुक्र - बुध - शुक्र		शुक्र - बुध - सूर्य		शुक्र - बुध - चंद्र		शुक्र - बुध - मंगल	
04/09/2030 23:11		24/02/2031 10:41		17/04/2031 04:32		12/07/2031 10:17	
24/02/2031 10:41		17/04/2031 04:32		12/07/2031 10:17		10/09/2031 19:07	
शुक्र	03/10/2030 17:06	सूर्य	27/02/2031 00:47	चंद्र	24/04/2031 09:01	मंगल	15/07/2031 22:48
सूर्य	12/10/2030 08:05	चंद्र	03/03/2031 08:16	मंगल	29/04/2031 09:45	राहु	25/07/2031 00:08
चंद्र	26/10/2030 17:02	मंगल	06/03/2031 08:43	राहु	12/05/2031 08:13	गुरु	02/08/2031 01:18
मंगल	05/11/2030 18:31	राहु	14/03/2031 02:59	गुरु	23/05/2031 20:11	शनि	11/08/2031 14:42
राहु	01/12/2030 15:26	गुरु	21/03/2031 00:34	शनि	06/06/2031 11:54	बुध	20/08/2031 03:57
गुरु	24/12/2030 15:22	शनि	29/03/2031 05:12	बुध	18/06/2031 17:06	केतु	23/08/2031 16:28
शनि	20/01/2031 22:47	बुध	05/04/2031 13:07	केतु	23/06/2031 17:51	शुक्र	02/09/2031 17:56
बुध	14/02/2031 09:13	केतु	08/04/2031 13:34	शुक्र	08/07/2031 02:48	सूर्य	05/09/2031 18:23
केतु	24/02/2031 10:41	शुक्र	17/04/2031 04:32	सूर्य	12/07/2031 10:17	चंद्र	10/09/2031 19:07

शुक्र - बुध - राहु		शुक्र - बुध - गुरु		शुक्र - बुध - शनि		शुक्र - केतु - केतु	
10/09/2031 19:07		13/02/2032 00:40		30/06/2032 00:16		10/12/2032 20:47	
13/02/2032 00:40		30/06/2032 00:16		10/12/2032 20:47		04/01/2033 17:22	
राहु	04/10/2031 01:57	गुरु	02/03/2032 10:13	शनि	25/07/2032 22:55	केतु	12/12/2032 07:35
गुरु	24/10/2031 18:41	शनि	24/03/2032 06:33	बुध	18/08/2032 04:01	शुक्र	16/12/2032 11:01
शनि	18/11/2031 08:34	बुध	12/04/2032 19:41	केतु	27/08/2032 17:25	सूर्य	17/12/2032 16:51
बुध	10/12/2031 08:21	केतु	20/04/2032 20:52	शुक्र	24/09/2032 00:50	चंद्र	19/12/2032 18:34
केतु	19/12/2031 09:41	शुक्र	13/05/2032 20:48	सूर्य	02/10/2032 05:28	मंगल	21/12/2032 05:22
शुक्र	14/01/2032 06:36	सूर्य	20/05/2032 18:23	चंद्र	15/10/2032 21:11	राहु	24/12/2032 22:51
सूर्य	22/01/2032 00:53	चंद्र	01/06/2032 06:21	मंगल	25/10/2032 10:34	गुरु	28/12/2032 06:24
चंद्र	03/02/2032 23:20	मंगल	09/06/2032 07:31	राहु	19/11/2032 00:27	शनि	01/01/2033 04:51
मंगल	13/02/2032 00:40	राहु	30/06/2032 00:16	गुरु	10/12/2032 20:47	बुध	04/01/2033 17:22

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : उल्का 3 वर्ष 3 मास 2 दिन

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
03/04/2023		06/07/2026		06/07/2033		06/07/2041		06/07/2042	
06/07/2026		06/07/2033		06/07/2041		06/07/2042		05/07/2044	
	00/00/0000	सिद्ध	15/11/2027	संक	16/04/2035	मंग	16/07/2041	पिंग	15/08/2042
	03/04/2023	संक	05/06/2029	मंग	06/07/2035	पिंग	05/08/2041	धांय	15/10/2042
संक	05/01/2024	मंग	15/08/2029	पिंग	15/12/2035	धांय	04/09/2041	भ्राम	04/01/2043
मंग	06/03/2024	पिंग	04/01/2030	धांय	15/08/2036	भ्राम	15/10/2041	भद्रि	16/04/2043
पिंग	05/07/2024	धांय	05/08/2030	भ्राम	06/07/2037	भद्रि	05/12/2041	उल्क	16/08/2043
धांय	04/01/2025	भ्राम	16/05/2031	भद्रि	15/08/2038	उल्क	04/02/2042	सिद्ध	05/01/2044
भ्राम	04/09/2025	भद्रि	05/05/2032	उल्क	15/12/2039	सिद्ध	16/04/2042	संक	15/06/2044
भद्रि	06/07/2026	उल्क	06/07/2033	सिद्ध	06/07/2041	संक	06/07/2042	मंग	05/07/2044

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
05/07/2044		06/07/2047		06/07/2051		05/07/2056		06/07/2062	
06/07/2047		06/07/2051		05/07/2056		06/07/2062		06/07/2069	
धांय	05/10/2044	भ्राम	15/12/2047	भद्रि	16/03/2052	उल्क	06/07/2057	सिद्ध	15/11/2063
भ्राम	03/02/2045	भद्रि	05/07/2048	उल्क	14/01/2053	सिद्ध	05/09/2058	संक	05/06/2065
भद्रि	06/07/2045	उल्क	06/03/2049	सिद्ध	04/01/2054	संक	05/01/2060	मंग	15/08/2065
उल्क	04/01/2046	सिद्ध	15/12/2049	संक	14/02/2055	मंग	06/03/2060	पिंग	04/01/2066
सिद्ध	05/08/2046	संक	05/11/2050	मंग	06/04/2055	पिंग	05/07/2060	धांय	05/08/2066
संक	06/04/2047	मंग	15/12/2050	पिंग	16/07/2055	धांय	04/01/2061	भ्राम	16/05/2067
मंग	06/05/2047	पिंग	06/03/2051	धांय	15/12/2055	भ्राम	04/09/2061	भद्रि	05/05/2068
पिंग	06/07/2047	धांय	06/07/2051	भ्राम	05/07/2056	भद्रि	06/07/2062	उल्क	06/07/2069

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
06/07/2069		06/07/2077		06/07/2078		05/07/2080		06/07/2083	
06/07/2077		06/07/2078		05/07/2080		06/07/2083		06/07/2087	
संक	16/04/2071	मंग	16/07/2077	पिंग	15/08/2078	धांय	05/10/2080	भ्राम	15/12/2083
मंग	06/07/2071	पिंग	05/08/2077	धांय	15/10/2078	भ्राम	03/02/2081	भद्रि	05/07/2084
पिंग	15/12/2071	धांय	04/09/2077	भ्राम	04/01/2079	भद्रि	06/07/2081	उल्क	06/03/2085
धांय	15/08/2072	भ्राम	15/10/2077	भद्रि	16/04/2079	उल्क	04/01/2082	सिद्ध	15/12/2085
भ्राम	06/07/2073	भद्रि	05/12/2077	उल्क	16/08/2079	सिद्ध	05/08/2082	संक	05/11/2086
भद्रि	15/08/2074	उल्क	04/02/2078	सिद्ध	05/01/2080	संक	06/04/2083	मंग	15/12/2086
उल्क	15/12/2075	सिद्ध	16/04/2078	संक	15/06/2080	मंग	06/05/2083	पिंग	06/03/2087
सिद्ध	06/07/2077	संक	06/07/2078	मंग	05/07/2080	पिंग	06/07/2083	धांय	06/07/2087

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
06/07/2087		05/07/2092		06/07/2098		07/07/2105		07/07/2113	
05/07/2092		06/07/2098		07/07/2105		07/07/2113		07/07/2114	
भद्रि	16/03/2088	उल्क	06/07/2093	सिद्ध	15/11/2099	संक	17/04/2107	मंग	17/07/2113
उल्क	14/01/2089	सिद्ध	05/09/2094	संक	06/06/2101	मंग	07/07/2107	पिंग	06/08/2113
सिद्ध	04/01/2090	संक	05/01/2096	मंग	16/08/2101	पिंग	16/12/2107	धांय	05/09/2113
संक	14/02/2091	मंग	06/03/2096	पिंग	05/01/2102	धांय	16/08/2108	भ्राम	16/10/2113
मंग	06/04/2091	पिंग	05/07/2096	धांय	06/08/2102	भ्राम	07/07/2109	भद्रि	06/12/2113
पिंग	16/07/2091	धांय	04/01/2097	भ्राम	17/05/2103	भद्रि	16/08/2110	उल्क	05/02/2114
धांय	15/12/2091	भ्राम	04/09/2097	भद्रि	06/05/2104	उल्क	16/12/2111	सिद्ध	17/04/2114
भ्राम	05/07/2092	भद्रि	06/07/2098	उल्क	07/07/2105	सिद्ध	07/07/2113	संक	07/07/2114

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
07/07/2114		06/07/2116		07/07/2119		07/07/2123		06/07/2128	
06/07/2116		07/07/2119		07/07/2123		06/07/2128		00/00/0000	
पिंग	16/08/2114	धांय	06/10/2116	भ्राम	16/12/2119	भद्रि	17/03/2124	उल्क	07/07/2129
धांय	16/10/2114	भ्राम	04/02/2117	भद्रि	06/07/2120	उल्क	15/01/2125	सिद्ध	06/09/2130
भ्राम	05/01/2115	भद्रि	07/07/2117	उल्क	07/03/2121	सिद्ध	05/01/2126	संक	04/04/2131
भद्रि	17/04/2115	उल्क	05/01/2118	सिद्ध	16/12/2121	संक	15/02/2127		00/00/0000
उल्क	17/08/2115	सिद्ध	06/08/2118	संक	06/11/2122	मंग	07/04/2127		00/00/0000
सिद्ध	06/01/2116	संक	07/04/2119	मंग	16/12/2122	पिंग	17/07/2127		00/00/0000
संक	16/06/2116	मंग	07/05/2119	पिंग	07/03/2123	धांय	16/12/2127		00/00/0000
मंग	06/07/2116	पिंग	07/07/2119	धांय	07/07/2123	भ्राम	06/07/2128		00/00/0000

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	3
भाग्यांक	5
मित्र अंक	3, 5, 7, 9
शत्रु अंक	1, 4, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृश्चिक, मेष
मित्र लग्न	मकर, मिथुन, सिंह
अनुकूल देवता	सूर्य
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	100%	सन्तति सुख, सुख
मोती	चंद्र	73%	धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति
लहसुनिया	केतु	70%	स्वास्थ्य, दम्पति
पन्ना	बुध	69%	दम्पति, भाग्योदय, कम खर्च
गोमेद	राहु	67%	दम्पति, भाग्योदय
हीरा	शुक्र	66%	दम्पति, दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
मूंगा	मंगल	55%	भाग्योदय, दम्पति, धन
माणिक्य	सूर्य	19%	शत्रु व रोग, हानि
पुखराज	गुरु	3%	शत्रु व रोग, पराक्रम हानि

रत्न की शुभता

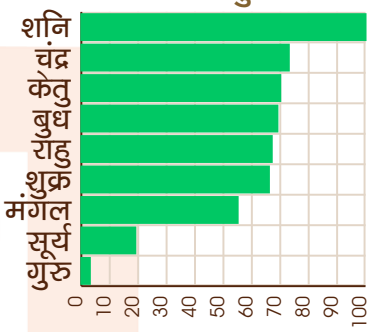

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	09/02/2034	0%	61%	55%	75%	3%	78%	100%	73%	77%
सूर्य	10/02/2040	44%	80%	61%	69%	15%	53%	91%	55%	58%
चंद्र	09/02/2050	31%	86%	55%	75%	3%	66%	100%	55%	58%
मंगल	09/02/2057	31%	80%	67%	56%	15%	66%	100%	55%	77%
राहु	10/02/2075	0%	61%	34%	69%	3%	72%	100%	80%	58%
गुरु	10/02/2091	31%	80%	61%	56%	28%	53%	100%	67%	70%
शनि	10/02/2110	0%	61%	34%	75%	3%	72%	100%	73%	58%
बुध	11/02/2127	31%	61%	55%	81%	3%	72%	100%	67%	70%
केतु	10/02/2134	0%	61%	61%	69%	3%	72%	91%	55%	83%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए नीलम रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है।

नीलम आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

इसे धारण करने से आपके जीवन में विशेष ऊर्जा का प्रवाह होगा। आपकी प्रतिभा बढ़ेगी। इस रत्न को धारण करने से आपके रुके हुए कार्य बन सकते हैं। स्वास्थ्य व सुख सम्पत्ति का लाभ मिल सकता है। आपको कार्य करने पर जो श्रेय नहीं मिल पाता है वह प्राप्त होने लगेगा। इस रत्न को धारण करने से आपको कुछ ही समय में सुख की अनुभूति होगी। अतः यह रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के जीवन पर्यन्त धारण करें तो लाभ होगा।

आपके लिए मोती, लहसुनिया, पन्ना, गोमेद, हीरा एवं मूंगा रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

माणिक्य व पुखराज रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

नीलम

आपकी कुंडली में शनि पंचम भाव में स्थित है। शनि रत्न नीलम आपके लिए शुभ फलदायी रहेगा। नीलम रत्न अद्भुत और अचूक प्रभावशाली रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आप परिश्रमी, भ्रमणशील, प्रसन्न और सुखी रखेगा। रत्न शुभता से आप दीर्घायु होंगे। आपको

अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। नीलम रत्न आपके शैक्षिक व्यवधानों को दूर करेगा। धर्म क्रियाओं की ओर उन्मुख होंगे। आपकी धन संपति में बढ़ोतरी होगी। धीरे धीरे आपकी प्रसिद्धि का विस्तार होगा। रत्न प्रभाव से आपके व्यवहार में मधुरता आयेगी।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में शनि चतुर्थेश एवं पंचमेश है। शनि का रत्न नीलम आपके लिए विशेष रूप से शुभ रत्न है। आप इसे धारण कर शनि की शुभता प्राप्त कर सकते है। नीलम रत्न आपको पौराणिक विषयों से शिक्षा प्राप्ति के अवसर दे सकता है। यह रत्न आपके संतान स्वास्थ्य को प्रबल कर अनुकूल बनाए रखेगा। नीलम रत्न शुभता से आपके अपनी संतान से संबंध मजबूत हो सकते है। ज्ञान प्राप्ति के लिए यह रत्न आपको सर्वोत्तम फल प्रदान कर सकता है। रत्न प्रभाव से कुटुंब में वृद्धि, भूमि-भवन के मामलों में शुभ परिणाम प्राप्त हो सकते है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र एकादश भाव में स्थित है। आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। मोती रत्न की शुभता से आपको विदेश जाना पसंद होगा। आपको महंगे वाहनों का सुख प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपके पास पर्याप्त मात्रा में धन-संपत्ति होगी। रत्न शुभता से समाज में आपकी मान-प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। मोती रत्न के प्रभाव से आपको सरकारी मामलों की विधिवत जानकारी होगी। मोती रत्न आपको सरकार की ओर से सम्मान और पद प्रतिष्ठा दे सकता है। रत्न शुभता से आप मिलनसार बनेंगे। व्यापार के माध्यम से आपको मनोकूल लाभ होगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में चंद्र दशम भाव के स्वामी है। चंद्र आपके लिए शुभ ग्रह है। चंद्र का मोती रत्न धारण करने से आपको कर्म क्षेत्र में अपनी योग्यता दिखाने के अवसर देगा। रत्न शुभता से आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता आ सकती है। आजीविका क्षेत्र से जुड़ी मानसिक चिंताओं का समाधान भी यह रत्न कर सकता है। मोती रत्न आपको राजनीति में अग्रणी रखेगा। मोती रत्न व्यवसायिक सफलता, सूझ-बूझ की योग्यता, मनोविश्लेषक, कलात्मक कार्यो से आय प्राप्ति के योग बना सकता है। रत्न शुभता से आपकी धार्मिक प्रवृति का विकास होकर आपको समाजसेवी संगठन या न्यासों के संचालण कार्य से सम्मान दिला

सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु लग्न भाव में स्थित है। इसलिए आपको केतु रत्न लहसूनिया धारण करना चाहिए। यह रत्न धारण करने से आप परिश्रमी और कर्मठ बनेंगे। लहसुनिया रत्न आपकी मेहनत एवं लगन योग्यता को बढ़ायेगा। लग्न भाव में बैठकर केतु सप्तम भाव से संबंध बना रहे है इसके प्रभाव से केतु रत्न लहसुनिया आपके ग्रहस्थ जीवन को सुख-सौहार्द पूर्ण बनायेंगा। लहसुनिया रत्न आपके साहस भाव में बढ़ोतरी करेगा।

केतु तुला राशि में स्थित है व इसका स्वामी शुक्र सप्तम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपके वात रोगों में कमी होगी। यह रत्न आपके दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाएगा। इस रत्न की शुभता से आपके अपने जीवनसाथी से स्नेह और सौहार्द के संबंध प्रगाढ़ होंगे। आपके स्वभाव में मधुरता आएगी। आप बंधुप्रिय, मधुर भाषी और स्वतंत्र व्यवसाय कार्य में सफल होंगे। इस रत्न से आपका अपने साझेदार और साथी पर विश्वास भाव मजबूत होगा। विदेश स्थानों से धन लाभ प्राप्त करना आपके लिए सहज होगा। एवं यह रत्न आपको विदेश में सम्मान दिलाएगा। आपको विदेश भ्रमण के अवसर प्राप्त होंगे।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध सप्तम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपको धनवान बनाएगा। रत्न शुभता से आपका विवाह कुलीन परिवार में होगा। यह रत्न आपको उदार और धार्मिक प्रवृति का रखेगा। आपके लिये यह शुभ रत्न होने के कारण इसे धारण कर आप विद्वान, लेखक या सम्पादक हो सकते है। पन्ना आपको शिल्पकला में निपुण, चतुर और विनोदी बनाएगा। रत्न शुभता से आप एक कुशल व्यवसायी बनेंगे। क्रयि-विक्रय विषयों से आपको लाभ प्राप्त होगा। व्यावसायिक साझेदारी से आपके अनुकूल फल प्राप्त होंगे।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में बुध नवमेश व द्वादशेश है। बुध ग्रह आपके लिए शुभ है। यहां बुध लग्नेश शुक्र का मित्र भी है इसलिए ओर अधिक शुभ हो गया है। इसकी शुभता प्राप्त करने के लिए आप बुध रत्न पन्ना धारण करें। पन्ना रत्न आपके लिए भाग्योदय रत्न सिद्ध हो सकता है। इस रत्न को धारण कर आप दांपत्य जीवन के सुखों में वृद्धि कर सकता है। बुध रत्न पन्ना आपको धर्म, पुण्य, भाग्य, गुरु, देवता, तीर्थ यात्रा, दान इत्यादि विषयों से संलग्न कर सकता है। यह रत्न आपको बौद्धिक कार्यो में भाग्य का सहयोग दे सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु सप्तम भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। गोमेद रत्न आपको स्वतंत्र व्यापार करने की ओर प्रेरित कर रहा है। रत्न शुभता से आपका कार्य कौशल चतुराई से परिपूर्ण रहेगा। आपका विवाह अपेक्षाकृत शीघ्र या विलम्ब से हो सकता है। गोमेद रत्न के प्रभाव से आपका अपने जीवनसाथी के मध्य प्रेम संबंध अनुकूल रहेगा। नौकरी के क्षेत्र में सफलता पाने के लिए आपको गोमेद रत्न धारण करना चाहिए। यह रत्न आपके स्वभाव की उग्रता को नियंत्रित रखेगा।

राहु मेष राशि में स्थित है व इसका स्वामी मंगल नवम भाव में स्थित है। अतः

गोमेद रत्न धारण करने से आपके जीवन के शुभ फलों की अधिकता होगी। आप धार्मिक कार्यों में रुचि लेंगे। आपको लोगों द्वारा पसंद किया जाएगा। रत्न शुभता से आपको अपने सभी प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी। यह रत्न आपको भाग्यशाली बना रहा है। इस रत्न की शुभता से आप प्रवासी हो सकते हैं तथा यह रत्न आपको तीर्थाटन प्रवृत्ति देगा। आप धार्मिक, उदार, कृतज्ञ, दयालु, देव- भक्त, भाई बन्धुओं के संरक्षक, प्रसिद्ध तथा पराक्रमी होंगे। एवं यह रत्न आपको अनेक प्रकार के धन रत्नादि से सुखी तथा सभी प्रकार की सुख समृद्धि देगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र सप्तम भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। यह रत्न धारण कर आप श्रेष्ठ व्यक्तियों से स्नेह करने वाले भाग्यवान व्यक्ति बनेंगे। रत्न शुभता से आप चंचल, विलासी और संगीत को पसंद करने वाले व्यक्ति बनेंगे। रत्न शुभता से आप एक श्रेष्ठ कलाकार हो सकते हैं। गायन और अभिनय में आपकी रुचि जागृत करने में भी हीरा रत्न लाभदायक साबित हो सकता है। हीरा रत्न वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाये रखने में उपयोगी रहेगा। रत्न शुभता से आपको विदेश यात्राओं अथवा दूर की यात्राओं के अवसर प्राप्त हो सकते है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में शुक्र लग्नेश एवं अष्टमेश है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभ रहेगा। स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए भी आप हीरा रत्न धारण कर सकते है। शुक्र रत्न हीरा आपके शरीर, आयु, मस्तिष्क, आपका स्वभाव और संपूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाये रखने में सहयोगी हो सकता है। हीरा अष्टमेश का भी रत्न होने के कारण आपको मानसिक चिंताओं से बचाएगा, दुर्भाग्य का नाश, ससुराल से मधुर संबंध, अस्पताल आदि विषयों में राहत दे सकता है। अपने स्वास्थ्य और आयुवृद्धि के लिए आप हीरा रत्न धारण कर सकते है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते

समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल नवम भाव में स्थित है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप मंगल ग्रह की शुभता प्राप्त करें। मूंगा रत्न आपकी नेतृत्व शक्ति बढ़ाकर आपको उच्चाधिकारी बनाएगा। मूंगा रत्न से आप स्वाभिमानी बनेंगे। मूंगा रत्न आपको मित्रों में श्रेष्ठ बनाएगा। रत्न शुभता विदेशी यात्राओं को सफल कर आपको लाभ दिलाएगी। रत्न शक्तियां आपको आत्मिक रूप से धार्मिक बनाए रखेंगी। यह रत्न आपके पुरुषार्थ भाव को बढ़ाकर आपको साहसपूर्ण कार्य करने की ओर प्रेरित करेगा। मूंगा रत्न धारण से भूमि-भवन के कार्य भी पूरे होंगे।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में मंगल द्वितीय भाव एवं सप्तम भाव के स्वामी है। मंगल के सभी शुभ फल पाने के लिए आप मूंगा रत्न धारण कर सकते है। मूंगा रत्न धारण करने से आपके कुटुंब सुख व पराक्रम में वृद्धि हो सकती है। यह रत्न आपके दांपत्य सुख में भी बढ़ोतरी करेगा। आप यह रत्न धारण कर शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर सकते है। यह रत्न आपके भाग्य में वृद्धि कर आपके रुके हुए कार्यों को बना सकता है। मूंगा रत्न आपको कुटुंब सुख, आभूषण, गायन के साथ साथ स्वतंत्र व्यापार में सफलता दे सकता है। रत्न धारण से मंगल बलवान होगा और मंगल की शुभता आपको पूर्ण रूप से प्राप्त होगी।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य छ्ठें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपके रोग, ऋृण और शत्रुओं की संख्या बढ़ सकती है। यह रत्न आपके तेज में कमी कर सकता है। नैनिहाल पक्ष से आपके संबंध खराब हो सकते है। माणिक्य रत्न प्रभाव से आपकी माता के कष्ट बढ़ सकते है। अत्यधिक कठोरता आपके स्वभाव का अंग बन सकती है। माणिक्य रत्न नौकरी के क्षेत्र में परेशानियां दे सकता है। उच्चाधिकारियों से आपके संबंध खराब कर सकता है। कार्यक्षेत्र में बदलाव के योग बन सकते है। इस रत्न को धारण करने के बाद आपके जीवन के उतार चढ़ाव बढ़ सकते है। नैनिहाल पक्ष के लोगों को कष्ट मिल सकता है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में सूर्य एकादश भाव के स्वामी है। कुंडली के अन्य ग्रह योगों के कारण सूर्य को अपने शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आप अपने जीवन लक्ष्य को समय पर प्राप्त करने में असफल हो सकते है। यह रत्न आपकी उच्चाकांक्षाओं पर नियंत्रण लगा सकता है। धन-संपत्ति तथा बड़े भाई बहनों के लिए रत्न की प्रतिकूलता बनी हुई है। यह रत्न आपका अरिष्ट कर सकता है। रत्न प्रभाव से आप विपत्तियों में पड़ सकते है। सूर्य रत्न माणिक्य आपको राज सत्ता और सरकारी पद पर कार्य करने में परेशानियां दे सकता है। माणिक्य रत्न संतान में कमी, भोगा-विलास तथा आंडबर प्रिय और तानाशाही की प्रवृति आपको दे सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आप के रोगों, ऋण और शत्रुओं में वृद्धि हो सकती है। पुखराज रत्न आपकी शारीरिक प्रकृति को पीड़ित कर सकता है। विवेक, पराक्रम और उदारता भाव के लिए भी रत्न का सहयोग आपको प्राप्त नहीं हो पाएगा। पुखराज रत्न धारण करना आपके मामा और भाईयों के सुखों में कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपके काम समय पर पूरे नहीं हो पायेंगे। सेवकों के कारण कार्य विलंबित हो सकते है। न्याय प्रणाली पर आपकी आस्था कमजोर हो सकती है। आजीविका क्षेत्र में वरिष्ठजन आपको परेशानियां दे सकते हैं।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश है। गुरु ग्रह की शुभता में कमी के कारण गुरु रत्न पुखराज की अनुकूलता आपके लिए नहीं बन रही है। अतः इस रत्न को धारण करने पर आपमें आत्मविश्वास की कमी हो सकती है। कार्यो को करने से पूर्व ही आपके मन में नकारात्मक भाव आ सकते है। तीसरे भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण यह रत्न आपमें साहस और पुरुषार्थ की कमी कर सकता है। योग्यता और कुशलता से धन अर्जित करने में इस रत्न की प्रतिकूलता आपके लिए बनी हुई है। गुरु रत्न पुखराज धारण आपकी उच्च शिक्षा और नौकरी दोनों क्षेत्रों में बेहतर परिणाम प्राप्त करने में परेशानियां दे सकता है। बौद्धिक क्षमता का सहयोग आपको समय पर नहीं मिल पाएगा।

दशानुसार रत्न विचार

शुक्र
(03/04/2023 - 09/02/2034)

शुक्र की दशा में आपका नीलम, हीरा, लहसुनिया व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, मोती व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(09/02/2034 - 10/02/2040)

सूर्य की दशा में आपका नीलम व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, मूंगा, लहसुनिया, गोमेद व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(10/02/2040 - 09/02/2050)

चन्द्र की दशा में आपका नीलम, मोती व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, लहसुनिया, मूंगा व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(09/02/2050 - 09/02/2057)

मंगल की दशा में आपका नीलम, मोती व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, हीरा, पन्ना व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(09/02/2057 - 10/02/2075)

राहु की दशा में आपका नीलम व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, पन्ना, मोती व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न नेष्ट हैं और पुखराज व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(10/02/2075 - 10/02/2091)

गुरु की दशा में आपका नीलम व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, गोमेद, मूंगा, पन्ना व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व पुखराज रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(10/02/2091 - 10/02/2110)

शनि की दशा में आपका नीलम व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, हीरा, मोती व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न नेष्ट हैं और पुखराज व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(10/02/2110 - 11/02/2127)

बुध की दशा में आपका नीलम व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, लहसुनिया, गोमेद, मोती व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(11/02/2127 - 10/02/2134)

केतु की दशा में आपका नीलम व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, पन्ना, मोती, मूंगा व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - ओपल

आपका जन्म तुला राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी शुक्र होता है। शुक्र ज्योतिषशास्त्र में शुभ ग्रह माना जाता है, शुक्र को असुरों का देव भी माना जाता है। सभी विलासिता देने वाला शुक्र ग्रह होता है जो जातक को सभी सुख, समृद्धि और ऐश्वर्य प्रदान करता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः तुला राशि के लग्न वाले जातकों को तुला राशि के स्वामी ग्रह शुक्र को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। शुक्र ग्रह के लिये ओपल रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी शुक्र राजा के सलाहकार का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राज दरबार में सलाहकार तुल्य अधिकार प्राप्त तथा उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को अपने जीवन साथी का सहयोग भी प्राप्त होता है। शुक्र ग्रह यौन अंगों एवं यौन सुखों आदि का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको यौन रोग हों या यौन सुख से संबंधित कष्ट हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है।

ओपल रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि अनामिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में सूर्य की अंगुली मानी जाती है और सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाने के कारण उसको ग्रहों का राजा माना जाता है। ओपल रत्न शुक्र का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शुक्रवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल शुक्र की होरा में श्रेष्ठ होता है। शुक्रवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय शुक्र की होरा का होता है। ओपल को यदि शुक्रवार के साथ-साथ शुक्र के नक्षत्र अर्थात् भरणी, पूर्वाफाल्गुनी और पूर्वाषाढ़ा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

ओपल को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर सफेद रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शुक्र के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

शुक्र का मंत्र - ऊँ शुं शुक्राय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शुक्र से संबंधित पदार्थ जैसे चावल, चांदी, सफेद कपड़ा सवा मीटर का दान करें तो ओपल रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी शुक्र का 108 बार प्रतिदिन स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या दुर्गा मां की पूजा-स्तुति तथा दुर्गा चालीसा का पाठ करें तो यह ओपल रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शुक्रवार को दुर्गा सप्तशती का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

तुला लग्न वाले जातक यदि ओपल रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रूद्राक्ष

रूद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रूद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रूद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रूद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रूद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रूद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रूद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रूद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रूद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रूद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रूद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रूद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रूद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली तुला लग्न की है। तुला लग्न का स्वामी शुक्र होने के कारण आपके व्यक्तित्व में शुक्र का प्रभाव दिखाई देता हैं। आपका स्वभाव सौम्यता लिये होता है। आप व्यवहार पसंद हैं। वायु तत्व होने के कारण आप अक्सर योजनाएं बनाते हुए मिल जाते हैं परन्तु उन पर क्रियान्वयन नहीं कर पाते। आपको भोग विलास की वस्तुओं का उपभोग करना और खरीदना ज्यादा पसंद हो सकता है। नई टेक्नोलॉजी का स्वागत करते है। नये चिन्तन व परीक्षण करने वाले (क्रियटिव) होते हैं और संगीत, गायन, नृत्य, एक्टिंग आदि चीजे पसंद करते हैं।

आप अपनी साज-सज्जा और कपड़ों पर विशेष रूप से ध्यान रखते हैं। आपको वात संबंधी पेरशानी अधिक रहती है। आप बहुत जल्दी ही हर माहौल में समझौता कर लेते हैं।

हमेशा आपका अलग ही रूप देखने को मिलता है। आप मे हाजिर जवाब क्षमता अद्भूत है। आप एक जगह टिक कर नहीं बैठ सकते। आदर्शवादी और साहित्यप्रिय होने के कारण आपकी लेखन क्षमता भी अच्छी होती है।

कुंडली के 12 भावों में से 3 भाव विशेष रूप से अशुभ भाव होने के कारण अनिष्ट करने का सामर्थ्य रखते हैं। 6, 8 व 12 वें भाव को त्रिक भावों के नाम से जाना जाता है। तथा त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं कहा जाता है। इन भावों का संबन्ध जिन भी ग्रहों व भावेशों से बनता है उनकी शुभता में कमी आती है। कुंडली के आठवें घर से मृत्यु, दुर्घटना, क्लेश, विघ्न, अकाल मत्यु और परेशानियों का विचार किया जाता है। कुंडली का बारहवां भाव व्यय भाव, हानि भाव, मोक्ष भाव, बंधन भाव तथा शयन भाव के नाम से जाना जाता हैं। त्रिक भावों में यह सबसे अंतिम भाव हैं। उपरोक्त विषयों के अलावा इस भाव से कोर्ट कचहरी, अस्पताल, कारावास आदि का विश्लेषण भी किया जाता हैं। इस भाव में किसी भावेश का बैठना या इस भावेश का किसी ग्रह या भावेश से सम्बन्ध अशुभता समझा जाता हैं।

इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके तुला लग्न के लिए गुरु षष्टेश व तृतीयेश हैं। षष्टेश व तृतीयेश गुरु आपके धन में अल्पता, ऋणग्रस्तता, संतानविरोधी, न्यायालयों में अधिक व्यय, जीवन साथी से अनबन तथा जीवन में समय समय पर धोखो की स्थिति उत्पन्न कर सकता हैं।

शुक्र अष्टमेश व लग्नेश है आप चतुराई से धन-संग्रह, कुटुम्बियों से परेशानियां, स्वास्थ्य में न्यूनता दे सकता हैं। शुक्र अष्टमेश है, इसलिए आपके वैवाहिक सुखों में कमी का कारण बन सकता हैं। जीवन साथी के प्रति निष्ठावान रहने से गृहस्थ जीवन के कष्टों में कमी कर सकते है।

बुध द्वादशेश और नवमेश हैं। नवमेश व द्वादशेश बुध आपके लिए व्यय, हानियों और दंड की स्थिति बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त यह आपके विवेक, वाक्शक्ति, भाग्य, धर्म, यश में कमी भी करेंगे। आपमें तुरन्त निर्णय की क्षमता, न्यायालयों पर व्यय, राज्य व भाग्य के क्षेत्र में हानि दे सकता है।

आपकी कुंडली के छठे भाव में सूर्य स्थित हैं। इस भाव में सूर्य शत्रुनाशक, क्रोधी, घमंडी, कामातुर, मामा -मौसी को कष्ट, निरुत्साही, छाती के रोग,ऋणी सम्बन्धी कष्ट दे सकते हैं। हृदय सम्बन्धी रोग भी स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकते हैं।

गुरु आपके छठे भाव में है, गुरु की यह स्थिति आपको शत्रुओं की अधिकता, शत्रुविजयी, धन संचयी, पदवृद्धि, बुद्धिमान, विचारवान, भाग्यवान और आध्यात्मिक भाव प्रदान कर रहा हैं।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 4, 5, 6 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध

कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढेसाती द्वितीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	02/07/2093-18/08/2095	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	11/10/2097-02/05/2098	20/06/2098-26/12/2099	17/03/2100-16/09/2100
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/12/2102-29/11/2105	----------	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	शत्रु व रोग
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	व्यावसायिक परेशानी
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	अल्प बचत
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	कम खर्च
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	धन

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति नवम भाव में है। यह भाव भाग्य एवं धर्म का प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप भाग्य पर अल्प मात्रा में ही विश्वास करेंगी तथा कर्म पर विशेष ध्यान देंगी। आपके विचार से कर्म के बिना भाग्योदय नहीं होता। अतः अपने इस सिद्धांत से आप जीवन में कर्म के द्वारा हमेशा उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहेंगी। साथ ही धर्म के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा धार्मिक कार्य कलापों एवं तीर्थ स्थानों की यात्रा भी आप कम ही सम्पन्न करेंगी। आयु के साथ साथ जीवन में भाग्य एवं धर्म के महत्व को भी स्वीकार करेंगी। समाज में आपको विशिष्ट सम्मान की प्राप्ति की संभावना भी रहेगी। आप उत्साह एवं पराक्रम से अपने कार्यों को सम्पन्न करने में सर्वदा तत्पर रहेंगी।

नवम भाव से द्वादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप अधिक मात्रा में व्यय करेंगी तथा यह व्यय शुभाशुभ दोनों प्रकार से होगा। साथ ही जमीन जायदाद आदि पर आप अधिक से अधिक व्यय करना पसन्द करेंगी तथा इसमें आपको प्रचुर मात्रा में लाभ भी होगा। यद्यपि इसके प्रभाव से जीवन में अनावश्यक विघ्न बाधाएं भी आएंगी परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगी। दाम्पत्य जीवन का आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगी। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके पराक्रम में वृद्धि होगी। समाज में सभी लोग आपके प्रभाव एवं पराक्रम को स्वीकार करेंगे जिससे आपको इच्छित मान सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही भाई बहनों का भी न्यूनाधिक सुख एवं सहयोग समय समय पर मिलता रहेगा। चतुर्थ भाव पर इसकी दृष्टि से आप जमीन जायदाद तथा वाहन आदि सुख से युक्त रहेंगी तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। सांसारिक सुख संसाधनों को भी आप परिश्रम पूर्वक प्राप्त करेंगी लेकिन माता का सुख तथा स्वास्थ्य मध्यम रहेगा।

इस प्रकार मंगल के इस प्रभाव के कारण आप परिश्रम एवं पराक्रम से कर्म की

महत्ता को प्रमुखता देते हुए अपना भाग्योदय स्वयं करेंगी जिससे आपका परिवार खुशहाल रहेगा तथा दाम्पत्य जीवन में भी मधुरता रहेगी। पारिवारिक जनों को यथोचित सुख सुविधाएं प्रदान करने में आप सफल रहेंगी।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है।

आपकी कुडली में चन्द्र, बुध और शुक्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी "ॐ नमः शिवाय" का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर

पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक तीन होने से अंक ज्योतिष के आधार पर आपका मूलांक तीन होता है। मूलांक तीन का स्वामी बृहस्पति ग्रह है। बृहस्पति या गुरु ग्रह के प्रभाववश आप अनुशासन के मामले में काफी कठोर रहेंगी तथा अपने अधिनस्थों से सख्ती से कार्य लेंगी। काम में ढील या शिथिलता बर्दाश्त नहीं करेंगी। इस कारण कभी कभी आपके मातहत ही आपसे शत्रुता करने लगेंगे।

आप एक महत्वाकांक्षी महिला होंगी और दूसरों पर शासन करने की आपकी सहज इच्छा रहेगी। गुरु ग्रह के प्रभाववश आपकी विचारधारा धार्मिक रहेगी तथा विद्या, अध्ययन, अध्यापन, बौद्धिक स्तर के कार्य तथा धर्म-कर्म के क्षेत्र में आपको अच्छी उपलब्धियाँ एवं ख्याति प्राप्त होगी। मानसिक रूप से आप काफी संतुलित एवं विकसित महिला होंगी तथा किसी भी विषय को समझने की आप में विशेष क्षमता रहेगी। तर्क एवं ज्ञान शक्ति आपकी अच्छी रहेगी। आप मन से किसी का भी अहित नहीं करेंगी और दूसरों की भलाई करने में भी अपना समय देती रहेंगी।

दान-पुण्य के कार्य भी आप काफी करेंगी। सामाजिक स्थिति आपकी काफी अच्छी रहेगी। समाज में आप अग्रणी एवं मुखिया पद का निर्वहन करना अधिक पसन्द करेंगी। दूसरों को सच्ची सलाह देना आप अपना धर्म समझेंगी। स्वभाव से आप शान्त, कोमल हृदय, मृदुवाणी एवं सत्यवक्ता होंगी। सत्य के मार्ग पर आप चलते हुये कष्टों को भी सहन करेंगी एवं अन्त में विजयश्री को प्राप्त करेंगी। स्वास्थ्य आपका साधारणतः अनुकूल ही रहेगा। लेकिन कभी-कभी मंदाग्नि, जठराग्नि, उदर विकार इत्यादि रोगों का सामना करना पड़ेगा।

भाग्यांक पाँच का स्वामी बुध ग्रह होने से आपका भाग्योदय स्व-बुद्धि विवेक द्वारा होगा। बुध वाणिज्य, व्यावसायिक कला का दाता है। गणित, लेखन, शिल्प, चिकित्सा, लेखा कार्यों में अच्छी प्रगति प्रदान करेगा। आपके अन्दर व्यापारिक कला अच्छी विकसित होगी। वाक् पटुता, तर्कशक्ति, बहुत बोलने की आदत रहेगी। आप रोजगार के क्षेत्र में नित नई स्कीम बनायेंगी जो आपकी तरक्की का मार्ग प्रशस्त करेंगी। वाणिज्य कला में आप काफी निपुण रहेंगी एवं रोजमर्रा के कार्यों को फुर्ती से पूर्ण करेंगी। दूसरों से कार्य निकलवाने में आप निपुण रहेंगी।

आपकी व्यावसायिक बुद्धि होने से धन संग्रह की ओर आप अधिक आकृष्ट रहेंगी एवं आवश्यकतानुसार वक्त-वे-वक्त के लिए धन एकत्रित करेंगी। आर्थिक क्षेत्र में आपकी स्थिति मध्यमोत्तम श्रेणी की रहेगी। कानून का आपको ठीक ज्ञान रहने से आप कार्यक्षेत्र में सभी कार्यों को बखूबी निभायेंगी तथा सामने वाले आपके ज्ञान के आगे नत-मस्तक होंगे।

आपका मूलांक 3 तथा आपका भाग्यांक 5 है। मूलांक 3 का स्वामी गुरु तथा भाग्यांक 5 का स्वामी बुध है तथा मूलांक 3 और भाग्यांक 5 के बीच सम संबंध है। गुरु-बुध के प्रभाववश आप एक विद्वान महिला के रूप में अपनी पहचान स्थापित करेंगी एवं ऐसे ही रोजगार-व्यवसाय का चुनाव करेंगी, जिसमें बुद्धि एवं विवेक का प्रयोग अधिक होता हो। आप

व्यापारिक कला में निपुण रहेंगी एवं स्वयं की बनायी हुई योजना के द्वारा अपना भाग्योदय प्राप्त करेंगी। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में आपकी गहरी रुचि रहेगी तथा आप अपने प्रत्येक कार्य को कुशलतापूर्वक अंजाम देंगी। रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में आप धन संग्रह की ओर विशेष ध्यान देंगी तथा भौतिक सुख-साधन अच्छी मात्रा में एकत्रित करेंगी। आपकी मानसिक स्थिति धार्मिक रहेगी तथा आप यथार्थवादी विचारधारा पर निरंतर चलती रहेंगी। आपकी सामाजिक स्थिति उच्च कोटि की रहेगी और आप एक विनयी, बौद्धिक महिला के रूप में अपनी पहचान स्थापित करेंगी । आप अपने जीवन में एक सफल महिला के रूप में जानी जाएंगी तथा प्रचुर मात्रा में भौतिक धन संपदा, भूमि, वाहन इत्यादि का संग्रह करेंगी।

आपका भाग्योदय 23 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होगा। 32 वें वर्ष पर विशेष उन्नति प्राप्त होगी तथा 41 वें वर्ष की अवस्था पर पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 3 की मित्रता 6 एवं 9 से है तथा भाग्यांक 5 की मित्रता 3 एवं 9 से है अतः आपके जीवन में 3, 5, 6, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगी, तो पाएंगी कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए मार्च, मई, जून, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 3, 5, 6, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
5 . 14, 23, 32, 41, 50, 59, 68
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं

घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

ग्रह फल

सूर्य

षष्ठभाव में सूर्य हो तो जतक वीर्यवान्, मातुल कष्टकारक, तेजस्वी, शत्रुनाशक, बलवान्, श्रीमान, निरोगी एवं न्यायवान् होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभन्वित होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य षष्ठ भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी अच्छी रहेगी। फिर भी यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूपेण अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपको कोई कष्ट न हो। साथ ही शत्रुवर्ग से भी आप का नित्य बचाव करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर होंगे। परन्तु यदा कदा आपसी मतभेद भी रहेंगे जिससे कभी कभी आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु अल्प समय में ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। आप जीवन में अपनी ओर से उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं किसी भी प्रकार से वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

चन्द्र

ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक गुणी, चंचलबुद्धि, सन्तति और सम्पत्ति से युक्त, सुखी, यशस्वी, लोकप्रिय, दीर्घायु, मन्त्रज्ञ, परदेशप्रिय एवं राज्यकार्यदक्ष होता है।

सिंह राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दृढ़देही, दाँत तथा पेट का रोगी, मातृभक्त, अल्पसन्ततिवान्, गम्भीर, दानी, साहसी, शान दिखाने वाला अभिमानी, महत्वाकांक्षी एवं पुराने विचारों वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा एकादश भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। जीवन में वे प्रत्येक क्षेत्र में आपका यत्नपूर्वक पूर्ण सहयोग करती रहेंगी। आपके आर्थिक साधनों की अभिवृद्धि में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आप पूर्ण आर्थिक लाभ एवं अन्य प्रकार से सुखार्जन करेंगी।

आप की भी माता के प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेंगी एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए भी आप प्रायः तत्पर रहेंगी। जीवन में आप हर प्रकार से उनकी सहायता एवं सहयोग भी करेंगी तथा अवसरानुकूल उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा आपसी मतभेद अत्यन्त ही अल्प मात्रा में रहेंगे।

मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

मिथुन राशि में मंगल हो तो जातक शिल्पकार, परदेशवासी, कार्यदक्ष, सुखी, जनहितैषी, विद्वान, बलवान शरीर, कवि, संगीतकार, नीतिज्ञ, कुशाबुद्धिवाला एवं चतुर होता है।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल की स्थिति नवम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक अस्वस्थता की भी अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा एवं यत्नपूर्वक जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी भाग्योन्नति करते रहेंगे। साथ ही आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी एवं सुख दुःख में सर्वदा पूर्ण सहयोग रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा कटुता का वातावरण भी बनेगा लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में उनका पूर्ण सहयोग करेंगी एवं समयानुसार वांछित आर्थिक सहायता भी प्रदान करेंगी।

बुध

सातवेंभाव में बुध हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, अल्पवीर्य, दीर्घायु एवं धार्मिक होता है।

मेष राशि में बुध हो तो जातक चतुर, प्रेमी, सत्यप्रिय, नट, रतिप्रिय कृशदेही, लेखक, ऋणी, मिलनसार, अविश्वस्त एवं बुरे विचार वाला होता है।

गुरु

षष्ठभाव में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

मीन राशि में गुरु हो तो जातक लेखक, शास्त्रज्ञ, गर्वहीन, राजमान्य, शान्त, व्यवहार कुशल, दयालु, साहित्य प्रेमी, विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, साहसी एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

सप्तमभाव में शुक्र हो तो जातक लोकप्रिय, धनिक, चिन्तित, विवाह के बाद भाग्योदय, साधुप्रेमी, स्त्री से सुख, कामी, भाग्यवान् गानप्रिय, विलासी, अल्पव्यभिचारी

चंचल एवं उदार होता है।

मेष राशि में शुक्र हो तो जातक स्वप्न जगत में विचारने वाला, आवेशपूर्ण स्वभाव, अस्थिरमन, दुःखी, बुद्धिमान्, आरामतलब, दुराचारी, परस्त्रीरत, झगड़ालू विश्वास हीन एवं अधिक खर्च करने वाला होता है।

शनि

पंचम भाव में शनि हो तो जातक आलसी, सन्तानयुक्त, चंचल, उदासीन, विद्वान, भ्रमणशील एवं बातरोगी होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

राहु

सप्तम भाव में राहु हो तो चतुर, लोभी, दुराचारी, दुष्कर्मी वातरोगजनक, भ्रमणशील, व्यापार से हानिदायक एवं स्त्रीनाशक होता है।

मेष राशि में राहु हो तो जातक-पराक्रमहीन, आलसी, अविवेकी एवं अनैतिक चरित्र होता है।

केतु

लग्न (प्रथम) में केतु हो तो जातक चंचल मूर्ख दुराचारी, भीरु तथा वृश्चिक राशि में हो तो सुखकारक, धनी एवं परिश्रमी होता है।

तुला राशि में केतु हो तो जातक कुष्ठरोगी, दुःखी, क्रोधी एवं कामी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में प्रथम भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया तुला लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ एवं सुगठित शरीर के होते हैं तथा इनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है फलतः अन्य जनों को प्रभावित करने में ये समर्थ रहते हैं। इनकी प्रवृति हास्य प्रिय होती है तथा बच्चों के प्रति स्नेह का भाव रहता है। साथ ही सुन्दर वस्तुओं या दृश्यों के प्रति इनके मन में आकर्षण होता है। स्वभाव से ये अन्य जनों को कष्ट नहीं देते हैं तथा सबके साथ समानता का व्यवहार करते हैं जिससे इनकी सामाजिक सम्मान एवं प्रतिष्ठा बनी रहती है। कला के प्रति इनका भावनात्मक लगाव रहता है तथा इस क्षेत्र में सक्रिय होने के कारण इनको वांछित सफलता भी मिलती है जिससे ये धनैश्वर्य एवं सुखसंसाधन अर्जित करके जीवन में सुख पूर्वक इनका उपभोग करते हैं। नीति के ये ज्ञाता होते हैं अतः राजनीति के क्षेत्र में नेतृत्व की प्राप्ति करने में भी समर्थ रहते हैं लेकिन इनका कोई एक सिद्धांत नहीं होता तथा समयानुसार इसमें परिवर्तन करते रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक सौष्ठव उत्तम रहेगा तथा व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा फलतः अन्य जन आपसे प्रभावित होंगे। गंभीरता आपको रूचिकर नहीं लगेगी। अतः हंसी मजाक समय समय पर करती रहेंगी। बच्चों के प्रति आपका स्नेह एवं आकर्षण रहेगा। कला एवं प्राकृतिक दृश्यों के प्रति आप रूचिशील रहेंगी तथा समयानुसार इन स्थानों का भ्रमण भी करेंगी।

राजनीति या कार्य क्षेत्र में आप प्रभावशाली होंगी तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगी एवं आपको यथोचित आदर तथा सहयोग प्रदान करेंगी। आप जीवन में स्वपरिश्रम पराक्रम एवं योग्यता से किसी नवीन सिद्धांत का प्रतिपादन करके इच्छित धनैश्वर्य वैभव एवं सुख संसाधन प्राप्त करेंगी।

लग्न में केतु की स्थिति के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा मानसिक उद्विग्नता उत्पन्न होगी। आप में पराक्रम एवं तेजस्विता का भाव भी रहेगा तथा अपने इन्हीं गुणों से सांसारिक महत्व के शुभ कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगी तथा अपने उन्नति मार्ग प्रशस्त करेंगी। संतति से भी आप युक्त होंगी तथा उनसे आपको यथोचित सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। नैतिक कर्तव्यों का भी आप अनुपालन करेंगी तथा सत्कर्मों को करने में रूचिशील रहेंगी जिससे प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि प्राप्त होगी।

कार्यक्षेत्र में आप एक प्रभावी महिला होंगी तथा आपके अधिकारी एवं सहयोगी आपसे प्रसन्न रहेंगे तथा आपको इच्छित सहयोग एवं सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही किसी सम्मानित या उच्च पद पर आपकी नियुक्ति होगी जिससे आर्थिक दृष्टि से आप सुदृढ़ता को प्राप्त करेंगी। साथ ही व्यापारादि कार्यों में भी आप सफलता प्राप्त कर सकती हैं। आपकी तेजस्विता यदा कदा उग्रता में परिवर्तित हो सकती है जिससे आपको अनावश्यक समस्याएं तथा परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।

मित्र वर्ग में आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगी तथा उनसे आप इच्छित सहयोग एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगी। इस प्रकार आप स्वस्थ, पराक्रमी तेजस्वी एवं परिश्रमी महिला होंगी तथा जीवन में उपरोक्त गुणों से युक्त होकर धनैश्वर्य मानसम्मान प्रसिद्धि तथा सुख संसाधन अर्जित करके प्रसन्नतापूर्वक उनका उपभोग करेंगी।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में वृश्चिक राशि उदित हुई है जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में स्व प्रयत्न एवं परिश्रम से धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही पैतृक सम्पति भी आपको अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगी परन्तु बहुमूल्य रत्न एवं धातुओं को अर्जित करने में समर्थ रहेंगी । आप भूमि या जायदाद संबंधी क्रय विक्रय या संबंधित कार्यो से भी लाभ अर्जित कर सकती हैं। साथ ही कृषि या बागवानी संबंधी कार्यो में भी आपकी रूचि रहेगी। आप एक महत्वांकाक्षी महिला होंगी तथा जीवन में परिवार के सहयोग से इच्छित उन्नति एवं सम्मान अर्जित करने में समर्थ रहेंगी लेकिन विषम परिस्थितियों का सामना करने में आप स्वयं असमर्थ समझेंगी।

पारिवारिक जनों की प्रसन्नता तथा सुविधा के लिए सुख संसाधनों के लिए आप सतत प्रयत्नशील रहेंगी। साथ ही उनकी सन्तुष्टि के लिए अधिक मात्रा में व्यय भी करेंगी। आपकी वाणी प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी तर्क पूर्ण बातों से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगी तथा अधिकाशं लोग आपसे सहमत भी रहेंगे। मिष्ठान की आप प्रिय रहेंगी तथा रूचि पूर्वक इसका भक्षण करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी परन्तु प्रौढ़ावस्था में आप नेत्र संबंधी कष्ट प्राप्त कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त धार्मिक परंपराओं का आप पूर्ण पालन करेंगी तथा शुभ एवं मंगल कार्यो को समय समय पर सम्पन्न करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त सज्जन लोगों के प्रति आपके मन में हमेशा आदर का भाव बना रहेगा।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति उत्तम रहेगी तथा दीर्घ काल तक स्मृति बनी रहेगी जिससे सामाजिक तथा अन्य क्षेत्र में आपको शीघ्र ही सफलता प्राप्त होगी। भाई बहिनों से भी आप युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको उनका पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा आप भी उनकी सुख सुविधाओं के प्रति चिंतित रहेंगी तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी। वे सभी आज्ञाकारी कर्तव्य परायण तथा विश्वास पात्र रहेंगे अतः उनकी गलतियों की भी आप उपेक्षा करेंगी। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण आस्था रहेगी तथा अपने सिद्धांतो पर दृढ़ रहेंगी चाहे इससे कोई परेशानी या समस्याएं क्यों न उत्पन्न हो। साथ ही स्पष्टवादिता का भाव भी आप में विद्यमान रहेगा।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी महिला होंगी तथा नेतृत्व के गुण भी आप में विद्य मान रहेंगे। आप किसी भी मनुष्य या वस्तु के गुणावगुणों को परखकर उसके बारे में अपनी राय प्रदान करेंगी। आप सद् विचारों की महिला होंगी तथा धर्म के प्रति आपके मन में आस्था रहेगी। आधुनिक संचार साधनों से भी आप युक्त रहेंगी तथा सुख पूर्वक इसका उपभोग करेंगी। इसमें टेलीफोन टेलीविजन या वाहन आदि की प्रमुखता रहेगी। संगीत एवं हस्त कला के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा यदा कदा इससे भी अपना मनोंरजन करेंगी। आपके लिए समीपस्थ स्थानों की यात्राएं लाभदायक एवं ख्याति प्रदान करने वाली होंगी। साथ ही आपकी अध्ययन में रूचि होगी तथा धार्मिक ग्रन्थ वैज्ञानिक या साहित्यिक पुस्तकों का आप अध्ययन करेंगी। इसके अतिरिक्त आप किसी संस्था की पदाधिकारी या उच्चाधिकारी होंगी तथा दीन दुःखियों के प्रति दयालु रहेंगी जिससे समाज में आदरणीया समझी जाएंगी।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों को प्राप्त करने में समर्थ होंगी। आपको आधुनिक सुख-संसाधनों की भी प्राप्ति होगी जिसका सुखपूर्वक उपभोग करेंगी। आप एक समृद्ध एवं वैभवशाली महिला होंगी तथा समाज में आदरणीय महिला मानी जाऐंगी।

आप एक सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा चल एवं अचल सम्पत्ति से युक्त होकर उसके स्वामित्व को प्राप्त करेंगी। विवाह के बाद पति के प्रभाव या सहयोग से भी आपको वांछित चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। इससे आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आपको समय समय पर धन सम्पत्ति की प्राप्ति होती रहेगी। आप चल एवं अचल दोनों प्रकार की सम्पत्ति से युक्त होंगी। अतः इन पर आप इच्छित निवेश कर सकती है।

जीवन में आपको उत्तम घर की प्राप्ति होगी तथा यह विस्तृत क्षेत्र में होगा तथा आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं उपकरणों से सुसज्जित रहेगा। आप भी व्यक्तिगत रूप से इसके आकर्षण एवं सुन्दरता बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील होंगी। आपका घर किसी समृद्ध कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त उत्तम वाहन से भी आप युक्त होंगी तथा इनकी संख्या एक से अधिक भी हो सकती है।

आपकी माताजी सुन्दर, शिक्षित, बुद्धिमान एवं आधुनिक विचारों की महिला होंगी तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। वह एक व्यवहार कुशल महिला होंगी तथा पारिवारिक सदस्यों का ध्यान से लालन पालन करेंगी जिससे सभी लोग उनको वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष वात्सल्य का भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आपकी उन्नति में भी उनका मुख्य योगदान होगा। आप भी उनके प्रति श्रद्धा एवं आज्ञाकारिता का भाव रखेंगी तथा सुख-दुःख में उन्हें अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी इससे आपसी संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन में आपकी प्रारंभ से ही रूचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आप छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंक लेकर परीक्षाएं उतीर्ण करेंगी। स्नातक परीक्षा भी आप संतोष जनक रूप से उतीर्ण करेंगी। इससे आपके मन में उत्साह के भाव में वृद्धि होगी तथा भविष्य में भी उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए स्वयं को तैयार करेंगी। स्वजनों एवं संबंधियों से भी आप वांछित आदर, स्नेह एवं प्रोत्साहन प्राप्त करेंगी।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है तथा शनि भी स्वगृही एवं योग कारक होकर पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता से सम्पन्न करके उनमें वांछित सफलताएं अर्जित करेंगी। आप में शीघ्र एवं सटीक निर्णय लेने की भी क्षमता होगी जिससे गंभीर समस्याओं का समाधान सुगमता से करने में समर्थ होंगी। वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन में आपकी रूचि अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान एवं इतिहास के क्षेत्र में आप विशेष रुचिशील होंगी तथा परिश्रम पूर्वक इसके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगी। आप इस क्षेत्र में कोई नवीन शोध कार्य या सिद्धांत का भी प्रति-पादन कर सकती हैं।

स्वगृही शनि की पंचमभावस्थ स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रूचि होगी तथा एक-दूसरे के प्रति भावात्मक आकर्षण रहेगा। आप मर्यादित एवं नैतिकता युक्त प्रेम करना पसन्द करेंगी तथा शारीरिक आकर्षण को कम महत्व देंगी। अतः आपका प्रेम-प्रसंग विवाह के रूप में परिणित हो सकता है जिससे आपका जीवन सुख एवं आनन्दपूर्वक व्यतीत होगा।

संतति भाव में स्वगृही शनि के प्रभाव से आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्रसंतति भी अवश्य होगी। आपकी संतति योग्य, बुद्धिमान एवं पराक्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञा पालन में सर्वदा तत्पर रहेंगे। वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को माता-पिता की सलाह तथा सहयोग से सम्पन्न करेंगे। इससे आपस में विश्वास एवं सदभाव बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति बच्चों के मन में विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान वे माता के सहयोग से करेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक भाग्यवान महिला होंगी तथा वृद्धावस्था में बच्चे तन-मन-धन से आपकी सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे जिससे आपकी वृद्धावस्था सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगी।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति योग्य एवं प्रतिभाशाली सिद्ध होगी तथा शुरू से ही वे पढ़ने में अच्छी सफलता का प्रदर्शन करेंगी। आप भी उनकी शिक्षा का उचित प्रबन्ध करेंगी एवं अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगी। आपकी संतति व्यवहार कुशल होगी तथा अपने कार्य-कलापों से अन्य जनों को प्रभावित एवं प्रसन्न रखेंगी इससे लोग उनको वांछित स्नेह एवं प्रोत्साहन प्रदान करेंगे एवं आपकी भी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा बच्चों की ओर से आप निश्चिंत तथा सन्तुष्ट रहेंगी।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है अतः इसके प्रभाव से आपको जीवन में किसी उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति से विरोध का सामना करना पड़ेगा साथ ही अन्य शत्रु भी मान सम्मान में न्यूनता करने के लिए सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे जिससे सामाजिक जनों के मध्य आपके प्रभाव में न्यूनता आएगी। आपके सेवक भी आपके लिए आज्ञाकारी तथा विश्वास पात्र रहेंगे तथा ईमानदारी से आपकी सेवा में तत्पर रहेंगे। यदि आप उनको उचित पारिश्रमिक प्रदान नहीं करेंगी तो वे घर में किसी प्रकार की चोरी आदि भी कर सकते है अतः ऐसी समस्याओं का निराकरण पहले से ही कर लेना चाहिए।

आपकी प्रवृत्ति अधिक से अधिक धन संग्रह करने की रहेगी। साथ ही कई प्रकार से पूंजीनिवेश भी करेंगी परन्तु इसमें हानि की अवस्था में ऋण आदि भी ले सकती है लेकिन कर्जदाता आपसे विशेष सहयोग नहीं करेंगे तथा विलम्ब की अवस्था में आपके मान सम्मान में न्यूनता कर सकते हैं। अतः धन व्यय या पूंजीनिवेश अच्छे कार्यो में करके आपको बुद्धिमता एवं सतर्कता का परिचय देना चाहिए । इसके साथ ही अवसरनुकूल बन्धुवर्ग या अन्य संबन्धी भी आर्थिक मामलों में आपको हानि प्रदान कर सकते है। अतः सोच समझकर किसी भी कार्य को प्रारंभ करना चाहिए।

जीवन में सम्बन्धियों या अन्य जनों से मुकद्दमे बाजी का भी संकेत मिलता है। इसका संबंध आर्थिक जमीन जायदाद या फौजदारी मामलों से हो सकता है। साथ ही यदा कदा जीवन में दाम्पत्य जीवन की मधुरता में न्यूनता आ सकती है। मामा मामी से आपके संबंध मध्यम ही रहेंगे तथा परस्पर सहयोग के भाव में न्यूनता ही रहेगी। शारीरिक स्वस्थता बनाए रखने के लिए उचित खान पान का प्रयोग करें। जब भी आपको अत्यधिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तब आप गुप्त कार्यो, तंत्र मंत्र या अन्य कार्यो से शान्ति एवं सफलता अर्जित करेंगी।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है तथा राहु भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है सामान्यतया मेष राशि की सप्तम स्थिति से जातक का सहयोगी तेजस्वी पराक्रमी एवं धनाढ्य होता है लेकिन राहु के प्रभाव से उसमें उग्रता चिड़चिड़ापन तथा विनम्रता के भाव की न्यूनता रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति उग्रस्वभाव के व्यक्ति होंगे परन्तु साहस एवं पराक्रम का भाव उनमें बना रहेगा। वह अपने सांसारिक कार्य कलापों को परिश्रम पूर्वक सम्पन्न करेंगे। राहु के प्रभाव से विनम्रता एवं कर्तव्य परायणता की भी न्यूनता रहेगी। अतः परिवार एवं समाज के प्रति वे अपने कर्तव्यों का पालन नहीं करेंगे जिससे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा प्रभावित होगी।

आपके पति किंचित श्याम वर्ण के व्यक्ति होंगे एवं उनका कद भी सामान्य रहेगा। शारीरिक रूप से वह पतले होंगे परन्तु पुष्टता बनी रहेगी इससे उनका आकर्षण बना रहेगा। पाश्चात्य साहित्य एवं संस्कृति का उन पर विशेष प्रभाव रहेगा तथा भौतिकता के प्रति विशेष समर्पित रहेंगे।

सप्तम भाव में राहु के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा। आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से होगा परन्तु राहु की स्थिति से आप प्रेम या अंतर्जातीय विवाह भी कर सकती है। विवाह के बाद आपका जीवन सामान्य रहेगा एवं परस्पर प्रेम एवं आकर्षण की कमी रहेगी एवं दोनों की स्वाभिमानी एवं तेजस्वी प्रवृति के कारण संबंधों में मधुरता की अपेक्षा तनाव रहेगा। अतः यदि संयम एवं बुद्धिमता पूर्वक व्यवहार किया जाय तभी किंचित सुख की प्राप्ति हो सकती है।

आपका विवाह किसी साधारण परिवार में होगा तथा उनकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति भी सामान्य रहेगी। विवाह के बाद सास-ससुर से आपके संबंध अच्छे नहीं होंगे तथा परस्पर विश्वास सम्मान स्नेह एवं सहयोग के भाव में न्यूनता रहेगी।

सास ससुर के प्रति आपके पति का विशेष सेवा भाव नहीं रहेगा तथा सुख दुख में उनकी यथोचित देखभाल नहीं करेंगे। साले एवं सालियां भी उनके व्यवहार तथा कटु सभाषण से असन्तुष्ट होंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार से सहयोग एवं सम्मान नहीं देंगे।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति प्रतिकूल होगी एवं इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। अतः साझेदारी की जीवन में यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है अतः इसके प्रभाव से आप में आध्यात्मिक शक्ति विद्यमान रहेगी। साथ ही ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि पर भी आपका विश्वास रहेगा तथा न्यूनाधिक रूप से इसका ज्ञान भी प्राप्त कर सकती हैं। आपके अन्दर सक्रियता के भाव की हमेशा प्रबलता रहेगी तथा प्रतिभा से सुसम्पन्न रहेगी। अतः आप कोई भी सृजनात्मक कार्य दूसरों की अपेक्षा आसानी से कर लेंगी। आप मित्र या बन्धुवर्ग से जायदाद की भी प्राप्ति कर सकती हैं। साथ ही पैतृक सम्पत्ति भी आपको प्राप्त होगी। इस प्रकार चल अचल सम्पत्ति की स्वामिनी बनकर समाज में इच्छित मान सम्मान अर्जित करने में समर्थ रहेंगी।

आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा ससुराल पक्ष के लोग धनवान एवं सर्वप्रकार के गुणों से परिपूर्ण रहेंगे जिससे आपको कोई भी परेशानी नहीं होगी। आपकी प्रवृत्ति पार्टियों को भी आयोजित करने की रहेगी जिससे आपको हार्दिक प्रसन्नता होगी। बीमा आदि करके भी आपको इच्छित लाभ हो सकता है अतः अवसरानुकूल आपको बीमा अवश्य करवाना चाहिए। साथ ही आपके घर में चोरी आदि की कोई बड़ी घटना नहीं होगी तथापि अपनी बहुमूल्य वस्तुओं को पहले से ही किसी सुरक्षित स्थान में रख लेना चाहिए । दुर्घटना आदि के योग भी सामान्यतया अल्प रहेंगे तथा अपनी सतर्कता से इन घटनाओं सेसुरक्षित रहने में सफलता प्राप्त करेंगी तथापि आपको तीव्र गति से वाहन आदि नहीं चलाना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपकी आयु अच्छी रहेगी तथा जीवन में आनन्द एवं सुख का उपभोग करने में समर्थ रहेंगी।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक धार्मिक प्रवृति की महिला होंगी तथा पैतृक एवं पारिवारिक नियमों के अनुसार अपने धर्म के अनुपालन में तत्पर रहेंगी। ईश्वर की सत्ता में आपका पूर्ण विश्वास रहेगा। साथ ही भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति के लिए हमेशा यत्नशील रहेंगी। आप एक भाग्यशाली महिला होंगी तथा भाग्यबल से इच्छित धनऐश्वर्य एवं वैभव अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। इसके अतिरिक्त अवसरानुकूल तीर्थ यात्रा करने की भी इच्छुक रहेंगी ।

विभिन्न धार्मिक ग्रंथों का आप रूचि पूर्वक अध्ययन करेंगी तथा ध्यान योग, तंत्र मंत्र तथा ज्योतिष आदि में भी आपका विश्वास रहेगा एवं न्यूनाधिक रूप से इनका ज्ञान अर्जित करने में भी रूचिशील रहेंगी। यदि आप अपनी दृढ़ संकल्पता में वृद्धि कर सकें तो अपनी अर्न्तप्रज्ञा शक्ति के द्वारा आप पूर्वाभास तथा भविष्य वाणी करने में सफलता अर्जित कर सकती हैं।

आपकी दैनिक पूजा जीवन में आपको ऐश्वर्य प्रदान करने के लिए आत्मबल प्रदान करेंगी परन्तु यदा कदा मानसिक असन्तुलन के कारण आपको व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा। साथ ही पूजा कार्य में भी समय समय पर व्यवधान उत्पन्न होंगे। व्यावसायिक रूप से की गई लम्बी यात्राओं से आपको लाभ यश तथा समाज में मान सम्मान में वृद्धि होगी। इससे जीवन में स्थायित्व आएगा तथा धनवैभव की भी वृद्धि होगी। आप एक प्रसिद्ध बुद्धिमान तथा विदुषी महिला होंगी तथा अपनी योजनाओं को बिना किसी रूकावट के सम्पन्न करेंगी। प्रथम पौत्र से आपको अत्यधिक सुख एवं प्रसन्नता प्राप्त होगी। साथ ही जीवन में अन्यत्र भी शुभ एवं पुण्य कार्य करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप धर्मात्मा, सौभाग्यशाली, अतिथि सत्कार करने वाली तथा दीन दुःखियों पर कृपा करने वाली होंगी। तथा परोपकार संबंधी कार्य करने में भी तत्पर रहेंगी।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्र है। कर्क राशि जलतत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा समय समय पर आप इसमें परिवर्तन करने के इच्छुक होंगी एवं ऐसे तात्कालिक परिवर्तनों से आप को लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी। साथ ही आप मानसिक रूप से भी सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगी।

आजीविका की दृष्टि से आपके लिए जलविभाग, वस्त्र उत्पादन फैक्टरी, स्टेनोग्राफर, कैमिकल्स, कार्यालय सहायक, सचिव, जलसेना, जहाजरानी विभाग अनुकूल रहेंगे। इन विभागों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता मिलेगी तथा मानसिक रूप से भी आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगी।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए जलोत्पन्न पदार्थो यथा शंख, मोती, प्रवाल, मछली का व्यापार, मिटटी के खिलौने, ईट, वालू आदि के कार्य, वास्तुकला, आलंकारिक वस्तुओं का व्यापार, द्रव्य पदार्थो यथा दूध, दही, घी आदि के कार्य से लाभ होगा। साथ ही रेशमी एवं मूल्यवान वस्त्रों के व्यापार या आयात निर्यात से भी इच्छित उन्नति एवं लाभ की प्राप्ति होगी। अतः यदि आप व्यापार की इच्छुक हो तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार आरंभ करें। इससे आपकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे तथा लाभ स्रोतों में भी वृद्धि होगी।

जीवन में आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी सम्मानित एवं उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में समर्थ होंगी। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि भी व्याप्त होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी सामाजिक धार्मिक सांस्कृतिक या शैक्षिणक संस्था के पदाधिकारी भी हो सकती है जिससे आपके प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

आपके पिता बुद्धिमान, शिक्षित तथा मृदुस्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा उनकी प्रवृति भी शान्ति प्रिय होगी। साथ ही उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा एवं सभी लोग उनसे प्रभावित तथा प्रसन्न होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा वात्सल्य का भाव होगा तथा आपकी उच्च शिक्षा का वे समुचित व्यवस्था करेंगे। आपकी कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान होगा तथा उनके प्रभाव से आपको इसमें यथोचित सम्मान एवं आदर की प्राप्ति होगी। साथ ही आप भी अपने उत्तम कार्य कलापों से पिता के सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगी। इसके अतिरिक्त आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी एवं वैचारिक तथा सैद्धान्तिक रूप से समानता होगी। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यो को एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से एक भाग्यशाली महिला होंगी तथा आर्थिक रूप से धनार्जन उत्तम रहेगा। आप महत्वाकांक्षी होंगी तथा मन में कई उमंगे एवं इच्छाएं विद्यमान रहेंगी साथ ही सौभाग्य के बल पर अधिकाशंतया इनकी पूर्ति में सफल भी रहेंगी। सरकार, औषधि विज्ञान तथा पिता के द्वारा जीवन में आप विशेष रूप से धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगी तथा इन्हीं के द्वारा आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी। यदि आप कार्यरत नहीं है तो उपरोक्त योग आपके पति की कुंडली में घटित होंगे। इस प्रकार धनार्जन की दृष्टि से हमेशा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगी। साथ ही बड़े भाइयों से आपको जीवन में इच्छित सुख, सहयोग, लाभ एवं स्नेह प्राप्त होगा तथा आप भी पितृवत् उनको आदर प्रदान करेंगी।

मित्रों के प्रति आपके मन में पूर्ण विश्वास रहेगा तथा उनके मध्य आदरणीया रहेंगी। आपके सभी मित्र शिक्षित बुद्धिमान एवं चतुर होंगे। आप एक समाजिक प्राणी होंगी तथा अपने क्षेत्र या समाज में ख्याति प्राप्त करेंगी। साथ ही अन्य जनों की भलाई तथा सहयोग करने के लिए भी सर्वदा तत्पर रहेंगी। सामूहिक कार्य या मनोंरजन करना आपको रूचिकर लगेगा। जीवन में आप किसी विशिष्ट सामाजिक सम्मान को भी अर्जित करने में सफल हो सकती है। आपका स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा ही रहेगा परन्तु यदा कदा गर्मी आदि से आपको परेशानी हो सकती है एवं बाएं कान में भी किसी परेशानी से कष्ट होगा। परन्तु आपका सामान्य जीवन धनऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न एवं सुदृढ़ रहेंगी। जीवन में आपको एकानेक साधनों से धन की प्राप्ति होगी लेकिन आपका रहन सहन खान पान आदि उच्च स्तर का रहेगा अतः प्रचुर मात्रा में धनार्जन के बाद भी उचित मात्रा में बचत कम ही होगी तथा व्यय ही अधिक रहेगा। आप भौतिक सुख संसाधनों तथा उपकरणों पर उन्मुक्त रूप से व्यय करेंगी। साथ ही वस्त्र आदि भी सुदंर कीमती एवं आकर्षक रहेंगे। इस प्रकार आप अपनी धनाढ्यता का अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करेंगी।

आपका पारिवारिक जीवन सुख एवं शान्तिमय रहेगा तथा आवास स्थल भी सुदंर एवं सुसज्जित रहेगा जिसकी सजावट में काफी व्यय होगा। वास्तव में आप कलात्मक रूप से जीवन व्यतीत करना पसन्द करेंगी तथा इसके लिए अधिकाधिक धन व्यय की आवश्यकता रहेगी। सुदंर एवं विलासमय वस्तुओं के प्रति आपके मन में तीव्र लालसा रहेगी तथा इनकी प्राप्ति में कितना भी व्यय क्यों न हो आप उसे अवश्य प्राप्त करेंगी। साथ ही परिवार एवं मित्रों के साथ मंहगे होटलों में भोजन या नाश्ता करना आपका शौक रहेगा। अतः आपकी वैभवशालीनता तथा सफलता को देखकर शत्रु आपके लिए रूकावटें उत्पन्न करेंगे जिससे कभी कभी मानसिक रूप से आप तनाव ग्रस्त भी रहेंगी

यात्रा करने में आप रूचिशील रहेंगी तथा देश के साथ साथ विदेश संबंधी यात्राएं भी सम्पन्न करेंगी। इनसे आपको उचित लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। यद्यपि इनमें व्यय अधिक होगा परन्तु भविष्य में लाभ तथा प्रसिद्धि के योग बनेंगे। आप भ्रमण या कार्यवश दोनों प्रकार की यात्राएं सम्पन्न कर सकती हैं। इसके साथ ही विदेश में काफी समय तक प्रवास भी करेंगी।

इस वर्ष 22 अप्रैल को गुरू मेष राशि में सप्तम भाव में 17 जनवरी को शनि कुम्भ राशि में पंचम भाव में और 22 नवम्बर को राहु मीन राशि में षष्ठ भाव में प्रवेश करेंगे। वक्री मंगल 13 जनवरी को मार्गी हो जाएंगे और पूरे वर्ष सरल गति से गोचर करेंगे। 4 अगस्त से 18 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तमस्थ राहु पर शनि एवं केतु की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। आपके कार्यक्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावट डाली जा सकती है। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर ही मान सम्मान प्राप्त होगा।

22 अप्रैल के बाद सप्तमस्थ गुरू पर शनि की दृष्टि होगी। उस समय आपको व्यवसाय में अच्छा लाभ होगा। आमदनी के नये-नये स्रोत मिलने की सम्भावना है। इस अवधी में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद ज्यादा है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिससे आपको कार्यों में लाभ होगा। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा और आप अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगें।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप इच्छित बचत कर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना सकते है। रत्न आभुषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। जिससे पुराने चले आरहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

आपके परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। 22 अप्रैल के बाद गुरू ग्रह का गोचर और अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको मित्र या जीवनसाथी के माध्यम से धन लाभ हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। यह वृद्धि विवाह या जन्म के माध्यम से हो सकती है। वर्षारम्भ में आपके घर मांगलिक कार्य संपन्न होने का योग बन रहा है।

22 अप्रैल के बाद समय और अनुकूल हो रहा है। यदि आप अविवाहित हैं तो इस समय के अंतराल में आपका विवाह संस्कार हो सकता है। अपने जीवनसाथी या मित्र के साथ

आपके मधुर संबंध होंगे। आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि प्राप्त होगी।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। षष्ठ स्थान में गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए अच्छा नहींहोता। वर्षारम्भ में आपकी संतान को लेकर चिन्ताएं बढ़ सकती हैं। उसका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। जिसका नकारात्मक प्रभाव उसकी शिक्षा पर भी आ सकता है परन्तु 22 अप्रैल के बाद समय अच्छा हो जाएगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा होगा। उसको अपने कार्य क्षेत्र सफलता प्राप्त होगी। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे संस्थान में उसका प्रवेश हो जाएगा। यदि वह विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। षष्ठ स्थान का गुरु छोटी मोटी स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी से ग्रसित हैं तो सावधानी बरतें। लग्नस्थ केतु पर राहु की दृष्टि अचानक आपका स्वास्थ प्रभावित कर सकती है। वर्षारम्भ में स्वस्थ रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव होता रहेगा।

22 अप्रैल को गुरु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में होगा। उसके बाद आपका स्वास्थ्य धीरे धीरे अनुकूल हो जाएगा। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। आपके खान-पान एवं दिनचर्या में भी बदलाव आयेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

22 अप्रैल के बाद यदि किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेना चाह रहे हैं तो उसके लिए समय अनुकूल है, उसमें आपको सफलता मिलेगी। यदि आप कोई व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें सफलता प्राप्त होगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। राहु केतु के प्रभाव से छोटे मोटी यात्राओं के साथ-साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होते रहेंगी। आपकी अधिकांश यात्राएंअचानक होंगी।

22 अप्रैल के बाद सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से व्यापारिक व्यक्ति व्यवासाय से संबंधित यात्रा करेंगे। इस यात्रा से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यो के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान का शनि भगवान के प्रति भक्ति का भाव उत्पन्न करेगा। जिससे आप मन्त्र पाठ, साधन और परमात्मा की भक्ति करेंगे। 22 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर और भी अच्छा हो रहा है। उस समय आपको आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। आप धार्मिक कार्य संपन्न करेंगे। अपने गुरूजनो का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। समय समय पर आप गरीबों की सहायता करेंगे। जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख प्राप्त होगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरण करें।
- प्रत्येक दिन सूर्य को अर्घ्य दें।

वार्षिक फलादेश - 2024

इस वर्ष शनि कुम्भ राशि में पंचम भाव में और राहु मीन राशि षष्ठ भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में गुरु मेष राशि में सप्तम भाव में रहेंगे और 1 मई को वृष राशि में अष्टम भाव में गोचर करेंगे। मंगल ग्रह अपने सरल गति से गोचर करेंगे। 29 अप्रैल से 28 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको व्यवसाय में उत्तम लाभ होगा। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। इस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा।

यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा और आप अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। नौकरी करने वालों का अपने कार्यस्थल पर ही मान-सम्मान बढ़ेगा। अप्रैल के बाद समय थोड़ा प्रभावित हो सकता है। उस समय शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं परन्तु षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से आप उन पर भी विजय प्राप्त कर सकते हैं।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। आप निष्ठा के साथ धनार्जन में लगे रहेंगे, और आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में जीवनसाथी एवं बड़े भाई का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

अप्रैल के बाद द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन, रत्न, आभूषण इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन खर्च होगा। बड़े निवेश के लिए भी समय अनुकूल है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पत्नी के साथ समन्वय मधुर होगें। यदि आप अविवाहित हैं तो आपका विवाह संस्कार हो सकता है। आपकी समाजिक पद व प्रतिष्ठा मे बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे जिससे आपका पराक्रम बढ़ेगा। समाज में मान-सम्मान के साथ-साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी।

अप्रैल के बाद द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि के कारण आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण और उत्तम हो रहा है। उस समय परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि का योग बन रहा है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष अनकूल रहेगा। स्वगृही शनि पंचमस्थ होने के कारण आपके बच्चों के पराक्रम में वृद्धि होगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम व पराक्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय काफी अनुकूल है। उसका चौमुखी विकास होगा। यदि वह विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

अप्रैल के बाद अष्टम स्थान का गुरु आपकी संतान को मानसिक अशान्ति दे सकता है। आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी पढ़ाई-लिखाई पर भी पड़ सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अत्यधिक अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या उत्तम होगी।

लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि मौसम जनित कोई बीमारी होती भी है तो आप शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएंगे। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी से ग्रस्त हैं तो सावधानी बरतें क्योंकि अप्रैल के बाद समय और प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। छठे स्थान में राहु के प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षओं मे सफलता प्राप्त करेंगे। जो व्यक्ति इलैक्ट्रॉनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं, उनको अपने करियर में सफलता मिलेगी।

जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको नौकरी मिल जाएगी। इस वर्ष आप शत्रुओं को परास्त करने में सफल रहेंगे। व्यापारिक व्यक्तियों को अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद व्यापारिक वर्ग का समय थोड़ा प्रभावित हो सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से छोटी-मोटी यात्रा होती रहेंगी। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से व्यापारिक व्यक्तियों को व्यवसाय से सम्बन्धित यात्राएं होंगी।

अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे। इस यात्रा से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। आप अपने पत्नी के साथ मिलकर हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। तीर्थ यात्रा कर पुण्य भी कमायेंगे। पंचमस्थ शनि के प्रभाव से आपके मन में ईश्वर के प्रति श्रद्धा विश्वास बढ़ेगा। अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप दान पुण्य भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मो पर अधिक पैसा खर्च करेंगे, जिससे आपको आत्मिक सुख का अनुभव होगा। अनाथालय अथवा गरीब बच्चों की पढ़ाई-लिखाई पर भी पैसा खर्च हो सकता है।

- सूर्य नमस्कार करें एवं सूर्य को जल चढ़ाएं।
- अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना करें और उसके सामने घी का दीपक जलाएं।
- गुरूवार के दिन केला या बेशन के लड्डू गरीबों में बांटे, और वीरवार का व्रत रखें।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि पंचम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु छठे भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि छठे भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरुअष्टम भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि नवम भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि दशम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि नवम भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा, परन्तु मई के बाद बहुत अच्छा हो रहा है। वर्षारम्भ में आप परिश्रम के बल पर कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। अष्टम स्थान के गुरुआपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव के योग बना रहे हैं। कार्य क्षेत्र में कुछ गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। अतः इस समय के अंतराल आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे व्यवसाय को ही और सुव्यवस्थित ढंग से चलाएं।

14 मई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय आप कोई भी कार्य प्रारम्भ करेंगे तो उसमें भाग्य आपका साथ देगा। छठे स्थान के शनि आपके शत्रुओं का दमन करते हुए आपके ब्राण्ड नेम को ऊपर ले जा सकते हैं, जिससे आपके व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को उनके कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप आर्थिक बचत करने में सफल रहेंगे। रत्न आभूषण इत्यादि का लाभ भी प्राप्त होगा। अचल संपत्तित के साथ-साथ वाहनादि का भी सुख प्राप्त होगा।

मई के बाद नवम स्थान का गुरुआपकी आर्थिक उन्नति के लिए और भी अच्छा रहेगा। उस समय आपके धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत कर सकते हैं। मांगलिक कार्यों या सामाजिक कार्यों एवं बच्चे की उच्च शिक्षा पर आप का धन खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। चतुर्थ एवं द्वितीय स्थान पर गुरुकी दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। घरेलू वातावरण अच्छा रहेगा परन्तु सप्तमस्थ शनि की दृष्टि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य खराब कर सकती है या किसी कार्यवश आप पत्नी से दूर रह सकते हैं।

14 मई के बाद तृतीय स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी समाजिक प्रतिष्ठा मे बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिबिधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे जिससे समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आपको छोटे भाई बहनों का सहयोग प्राप्त होगा ।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ शनि स्वगृही होने के कारण आपके बच्चों की उन्नति करेगें। गुरुग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय उच्च शिक्षा प्राप्ति के शुभ योग हैं।

मई के बाद पंचम स्थान का राहु आपकी संतान का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। यह समय गर्भाधान के लिए अशुभ है साथ ही गर्भवती महिलाओं को विशेष सावधानी की आवश्यकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के कारण आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। मौसम जनित बीमारियों से थोड़ी परेशानी हो सकती है। यदि पहले से कोई बीमारी है तो परहेज की आवश्यकता है।

14 मई के बाद लग्न स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। उस समय नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। धार्मिक कृत्यों में अधिक रूचि बढ़ेगी तथा आप मानसिक रूप से संतुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सफलता प्रदायक रहेगा। वर्षारम्भ में छठे स्थान में राहु के प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए समय बहुत अनुकूल है।

जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं उनके लिए समय शुभ है। इस वर्ष आप अपने सारे शत्रुओ को छोड़कर आगे निकलेंगे। बेरोजगार जातकों को रोजगार मिल जायेगा। मई के बाद समय और अनुकूल हो जाएगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे।

14 मई के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगे। नवमस्थ गुरुके प्रभाव से धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यो के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। मानसिक द्वन्दता के कारण पूजा पाठ में एकाग्रता नहीं रहेगी, परन्तु 14 मई के बाद आपका मन धार्मिक कार्यो में आकृष्ट होगा।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरुव मंदिर के पुजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तुओं का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि छठे भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमेंचतुर्थ भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरुनवम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमेंदशम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि एवं एकादशभाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत बढ़ीया रहेगा। आप अपने भाग्य के द्वारा व्यवसाय में उन्नति करेंगे।गुरु एवं शनि ग्रह का अनुकूल स्थान में होने से आपका चौमुखी विकास होगा। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। उच्च अधिकारियों या वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। जिससे आपके कार्य क्षेत्र में सफलता का प्रतिशत और बढ़ सकता है।

02 मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ-साथ इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष शुभ फलदायक रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता होने के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप भौतिक सुख सुबिधा पर भी खर्च करेंगे। बच्चों की स्वास्थ्य संबंधित परेशानी पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

02 जून के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ साथ रत्न आभुषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों केमांगलिक कार्यों में भी धन का व्यय होगा। 31 अक्टूबर के बाद धनागम में वृद्धि होगी। जिससे आप आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने मे सफल रहेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। व्यापारिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगेपरन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से सामाजिक उत्थान के लिए आपका पूर्ण प्रयास रहेगा।

02 जून के बाद पारिवारिक रूप से समय और भी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के सभी सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा और आपसी आकर्षण भी बढ़ेगा। पिताजी के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मालुत पक्ष के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपके बच्चे को सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। दूसरी संतान के लिए समय अच्छा है। उसकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

02 जून के बाद समय अधिक प्रभावित हो रहा है। उस समय पंचमस्थ राहु संतान संबंधित परेशानि उत्पन्न कर सकता है। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। इस समय के अंतराल मेंबच्चेके स्वास्थ्य से संबंधित कोई भी लापरवाही नहीं करनी चाहिए। 31 अक्टूबर के बाद आपके बच्चों का उन्नति होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत है। मानसिक शांति, प्रसन्नताएवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध मेंस्वास्थ्य के प्रति ध्यान देना आवश्यक होगा। खाने-पीने की वस्तुओं में परहेज रखें। कभी कभी स्वस्थ रहते हुए भी कमजोरी जैसा अनुभव होता रहेगा। रात को जल्दी सोना और सुबह जल्दी उठकरघूमना आपके शरीर के लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले जातकों को सफलता प्राप्त होगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको नौकरी मिल सकती है। तकनीकि शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए भी यह समय श्रेष्ठतम रहेगा।

02 जून के बाद विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु उनकी शिक्षा में अवरोध उत्पन्न कर सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल या उन्नतिकारक भी सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकीकिसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। 02 जूनके बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मानोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्म स्थल की यात्रा हो सकती हैअथवा अपने पूरे परिवार सहित दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त कर सकते है। द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आप कोई विशेष अनुष्ठान संपन्न करेंगे। आप योग, ध्यान, एवं अपने गुरु के द्वारा दिये गये मन्त्रो का पाठ करेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप दान पुण्य व गरीबों की सहायता अधिक करेंगे।

- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- एकनारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि छठे भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं छठे भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष चतुर्थ भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। आप अपने कार्य व्यवसाय में सफलता प्राप्त करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं या किसी अनुभवी व्यक्ति से मिल कर अपने व्यापार में उन्नति के लिए कोई नई योजना भी बना सकते हैं। चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने घर से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। प्रोपर्टी से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को अधिक लाभ प्राप्त नहीं होगा।

जून के बाद सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके कार्य व्यवसाय में उत्तम वृद्धि होगी। उच्च अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। सफलता के पीछे आपकी पत्नी का पूर्ण सहयोग होगा। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर करे हैं, तो उसमें इच्छित लाभ प्राप्त होगा और अपने साझेदार से संतुष्ट रहेगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष उत्तम रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। षष्टस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके शत्रु पक्ष से आपको धन लाभ होगा। धन निवेश के लिए भी अच्छा समय चल रहा है।

जून के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका रुको हुआधन मिल सकता है व धनागम में वृद्धि होगी। इस समय कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। धन संचित करने में आपकी पत्नी का अहम सहयोग होगा। भाई-बहन या पुत्र के विवाह के अवसर पर भी धन खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य रहेगा। चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आपके परिवार में विषमता की स्थिति बनी रहेगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति वैचारिक मतभेद हो सकता है। परन्तु आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार पारिवारिक वातार्वरण अनुकूल करने की कोशिश करेंगें और आप सफल भी होंगे। आपकी माता का स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता हैं।

दशमस्थ गुरु के कारण आपको पिता का अच्छा सहयोग मिलेगा।

26 जून के बाद आपको प्रेम प्रसंगो में सफलता मिलेगा। यदि आप अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो जाएगा। विवाहित व्यक्तियों का धर्मपत्नी के साथ समन्वय मधुर होगा। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप सामाजिक कल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपनी बौद्धिक शक्ति एवं कर्म के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

26 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति होने के शुभ योग बने हैं। यदि आपकी सन्तान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए उत्तम समय है। 26 नमम्बर के बाद समय कुछ प्रभावित हो सकता है। इस समयान्तराल में सन्तान पर अधिक ध्यान दें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। शारीरिक रूप से स्वस्थ एवं मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगा। मौसम जनित बीमारियों से यदि आप परेशान होते हैं तो जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करें।

जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर और भी शुभ हो रहा है, लेकिन साथ ही लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से मानसिक परेशानी या शारीरिक आलस्यता बढ़ सकती है, जिसके फलस्वरूप आप बीमार हो सकते हैं। सुबह-सुबह व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 26 नवम्बर के बाद आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। इस समय के अंतराल में नौकरी भी मिल सकती है।

26 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियो के लिए समय अच्छा है।

यात्रा-तबादला

चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से अपने जन्म स्थल से दुर की यात्रा हो सकती है। स्थान परिवर्तन के योग भी बन रहे है। द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी हो सकती है।

जून के बाद छोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। वर्षान्त में जलीय स्थल या समुद्र के माध्यम से विदेश यात्रा भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। चतुर्थ राहु के प्रभाव से आपके नित्य नैमित्य पूजा प्रभावित हो सकती है। 26 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा, जिसके फलस्वरूप आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा व सत्कर्म करेंगे। 26 नवम्बर के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- घर में श्रीयन्त्र स्थापित करें और नित्य उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- प्रत्येक दिन प्राणायाम करें।
- अपने माता-पिता की सेवा करें।

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि छठे भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु द्वादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। पारिवारिक परेशानी के कारण आपका कार्य व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। परन्तु छठे स्थान का शनि आपको सफलता के लक्ष्य तक अवश्य पहुंचाएगा। फरवरी के बाद बड़े अधिकारियों या अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा। जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने व्यापार में उन्नति करेंगे। यदि आप किसी के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं तो सफलता मिलेगी। चतुर्थ स्थान का राहु नौकरी करने वाले जातकों का स्थान परिवर्तन करा सकता है।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। आपको धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। गुप्त शत्रु व विरोधिओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश की जा सकती है। अतः आपको सकारात्मक सोच में वृद्धि कर अपना आत्मविश्वास बनाए रखना होगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। कुछ अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं। पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। 28 फरवरी से एकादश स्थान में गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आपके आय के स्रोत बढ़ेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु हो जाएगा। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन वापस मिल सकता है।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। उस समय कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करे। लेन-देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। चतुर्थ स्थान के राहु आपके परिवार में विषम परिस्थिति उत्पन्न कर देंगे, जिससे परिवारिक अनुकूलता भंग हो

सकती है। साथ ही परिवार में किसी बड़े व्यक्ति के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। अतः अच्छा यही होगा की आप अपनी सहनशक्ति को बढ़ाएं, नही तो उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका अच्छा संबंध बना रहेगा। फरवरी से आपको भाईयों सहयोग मिलेगा।

24 मई से घरेलू वातावरण अच्छा होना शुरु हो जाएगा। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावारण बना हरेगा। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे। सप्तमस्थ शनि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं। अतः उनको स्वास्थ्य से संबंधित किसी प्रकार की लापवाही नहीं बरतनी चाहिए।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। द्वादश स्थान के गुरु बच्चे के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं जिससे उसकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। 28 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर एकादश स्थान में हो रहा है जिसके बाद अचानक आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होना शुरु हो जाएगा।

आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल से आगे बढ़ेंगे। परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 24 जुलाई से समय फिर से प्रभावित हो रहा है जिसके फलस्वरूप आपके बच्चों की उन्नति रुक सकती है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे परन्तु 28 फरवरी के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे।

24 जुलाई के बाद बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीवर से सम्बन्धित बीमारियां हो सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। सुबह सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा नहीं तो आपका स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आप सारे शत्रुओं को पछाड़कर अपने करियर में आगे बढ़ेंगे। फरवरी के बाद से विद्यार्थियों के लिए समय बहुत उत्तम है। तकनीकी शिक्षा अथवा व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

24 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आपकी शिक्षा में रुकावटें आ

सकती हैं। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को उस समय सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता होगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी परन्तु 23 फरवरी के बाद लम्बी यात्राएं भी खूब होंगी।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने घर से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके प्रतिकूल स्थान पर होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। भण्डारा, गरीबों को दान और दूसरे की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। फरवरी के बाद एकादशस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्शित रहेगा। परमात्मा की भक्ति एवं मन्त्र पाठ में रूचि लेंगे। सप्तमस्थ शनि ग्रह के प्रभाव से आप अपनी धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे। जैसे- माता का जागरण, चौकी, अखण्ड रामायण पाठ इत्यादि।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें। बुधवार के दिन गणेशजी को दूर्वा चढ़ाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको व्यापार में अच्छा लाभ मिलेगा। वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। 29 मार्च से कार्य व्यवसाय में कुछ व्यवधान आ सकता है। गुप्त शत्रुओं द्वारा कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। अतः इस समय के अंतराल में आपको कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाना चाहिए।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से बहुत अच्छा हो रहा है। आपको व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलना शुरु हो जाएगा। भाग्य अनुकूल होने के कारण उन्नति के श्रेष्ठ योग बन रहे हैं। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहें हैं तो इच्छित लाभ की प्राप्ति होगी। आपके मित्र आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। सट्टा, शेयर बजार से जुड़े व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर ही मान-सम्मान मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नती के लिए अच्छा रहेगा। आय में अनुकूलता बनी रहेगी परन्तु 29 मार्च के आय के मार्ग प्रभावित होंगे जिससे आपके आर्थिक क्षेत्र में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है इसलिए आपको आर्थिक मामलों में विशेष सावधानी से काम लेना चाहिए। कुछ खर्चे अचानक आपकी आर्थिक स्थिति को बिगाड़ सकते हैं। अतः अभी से अतिरिक्त धन का संचय कर सकते हैं।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। आप के रुके हुए पैसे मिल सकते हैं जिससे आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरु हो जाएगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से लाभ होगा। अपने व्यापर को और आगे बढ़ाने में भी धन व्यय करेंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। छोटे भाईयों का

अच्छा सहयोग मिलेगा परन्तु 29 मार्च के बाद गुरु का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक अनुकूलता भी भंग हो सकती है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति वेमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है। परिवार में कुछ लोगों का वर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। ऐसे में आपको अपने विवेक से काम लेने होगा। 25 अगस्त के बाद ससुराल पक्ष के लोगों के साथ संबंध खराब हो सकते हैं।

05 अगस्त के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा। उसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा रहेगा। पंचम भाव पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति के अच्छे योग बन रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। उसका विवाह भी हो सकता है। 29 मार्च से 25 अगस्त तक का समय प्रभावित रहेगा। उसके बाद का समय अच्छा रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। लग्नस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि आपकी सेहत के लिए उत्तम है। यदि आप बीमार भी होते हैं तो आपकी सेहत शीघ्र ही अच्छी हो जाएगी। आपकी आरोग्यता व कार्यक्षमता में वृद्धि होगी। 29 मार्च के बाद अचानक आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। कफ, मधुमेह एवं पेट संबंधित बीमारियों के कारण आप परेशान हो सकते हैं। मौसमजनित बीमारियों से भी बचें।

25 अगस्त के बाद स्वास्थ्य में सुधार आना शुरु हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप का खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा जिससे रोगप्रतिरोधक शक्ति और अतिरिक्त मानसिक ऊर्जा प्राप्त होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। व्यवसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सफलता मिलेगी। 29 मार्च के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आप पढ़ाई-लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो जाएगा।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से वर्षारम्भ से ही छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। ज्यादातर यात्राएं अचानक होंगी। 29 मार्च के बाद द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं।

25 अगस्त के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। यात्रा के दौरान या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत बरतें, क्योकि अष्टम स्थान का शनि यात्रा के लिए शुभ नहीं होता।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारंभ में लग्न, पंचम व नवम इन तीनों त्रिकोण भावों पर गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन तथा गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि कर्म अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन लोहे का तवा गरीब व्यक्ति को दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

व्यावसाय से जोड़ कर देखा जाए तो वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही हितकारी होगा। आपको प्रतीत होगा कि आपके कुछ सपने अभी भी अधूरे हैं और इसलिए इस साल आप उन सपनों को पूरा करने के लिए अधिक मेहनत करेंगे और अपने सपनों को साकार करेंगे। मुख्यतः ग्रहों के गोचर अनुकूल होने के कारण किसी भी समस्या का समाधान करना आपके लिए आसान होगा जिसके चलते आप अपने अधिकारियों की नजरों में आएंगे।

17 अप्रैल के बाद अष्टम स्थान के शनि व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे हैं। इस अवधि में आपका अपने प्रति विश्वास ही आपको लगातार विजय दिलाएगा। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचान में कुछ कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुसार अपना कार्य करते रहें।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए सिर्फ लाभ को दर्शाता है। अपने लक्ष्य के प्रति आपका उत्साह उजागर हो जाएगा। निवेश करने के लिए भी यह एकदम उपयुक्त समय होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी।

अप्रैल के बाद राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आर्थिक समृद्धि में कमी आएगी। द्वितीय स्थान का राहु अचानक कुछ ऐसे खर्चे ला देगा जिसके चलते आपको आर्थिक तंगी आ सकती है। अतः इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े लोगों की सलाह अवश्य लें, नही तो पैसा फंस सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ से ही आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

राहु ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए शुभ नहीं है। परिवार के कुछ

लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। उस समय आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना होगा। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध अच्छे नहीं रहेंग। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए श्रेष्ठ रहेगा। वर्ष का प्रथम माह बच्चों के लिए अच्छा रहेगा। 04 फरवरी से राहु एवं गुरु की युति संतान के लिए अच्छा नहीं है। इस समय के अंतराल में संतान संबंधित चिंताएं बढ़ सकती हैं। अतः उनके स्वास्थ्य एवं पढ़ाई-लिखाई पर आपको विशेष ध्यान देना चाहिए।

1 मई से गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने से आपके बच्चों की उन्नति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी अपेक्षा रखते हैं वे उससे भी अच्छा करेंग। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह उत्तम समय चल रहा है। आपके बच्चों के साथ मधुर संबंधों में वृद्धि होगी जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं होती अतः आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति थोड़ा सतर्क रहने की आवश्यकता है ताकि आप अपने जीवन का भरपूर लाभ उठा सकें। फिर चाहे व्यावसायिक जीवन हो या व्यक्तिगत जीवन, यदि आप स्वस्थ नहीं होंगे तो इसका बुरा असर आपके जीवन पर पड़ेगा।

राहु ग्रह का गोचर आपके स्वास्थ्य के लिए और प्रतिकूल हो रहा है। अतः आप खुद को बीमार होने से बचाएं। इस दौरान आप तनाव से भी ग्रसित हो सकते हैं। स्वस्थ रहने के लिए आप योग, ध्यान या सुबह-सुबह व्यायाम नियमित रूप से करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रथम माह विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। व्यावसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

17 अप्रैल के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। इस समय आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना होगा। अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर तैयारी करते रहना चाहिए क्योंकि आपकी मेहनत ही आपको लक्ष्य तक पहुंचाएगी।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से आपके छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी परन्तु 01 मई से नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। इस समय आपकी व्यवसाय से संबंधित यात्रा हो सकती है।

यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है, क्योकि शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से वाहन दुर्घटना या यात्रा के अंतराल चोरी होने के प्रबल संकेत है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु 1 मई से नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें। शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाए।
- दुर्गा जी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यावसायिक जीवन में व्यवधान आएगा। इस समय के अंतराल में किसी पर विश्वास करना या कोई नया कार्य प्रारम्भ करना आपके हित में नहीं रहेगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय कुछ अच्छा होगा। नए रोजगार, पदोन्नति या किसी व्यवसाय में साझेदार के साथ एक सफल योजना बना सकते हैं।

9 अगस्त के बाद कार्यस्थल पर वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। यदि आप साझेदारी में काम कर रहे हैं तो आप अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे। गुप्त या प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको बिना किसी पर विश्वास किये अपने आत्मविश्वास के साथ काम करते रहना चाहिए।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान में ग्रह गोचर धन संचय में कमी करेगा। अचानक कुछ ऐसे खर्चे आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। इस समय आपको बड़े निवेश या खरीदारी से बचना होगा।

अगस्त के बाद आपको लाभ होगा। व्यावसायियों को अपने व्यवसाय का विस्तार करने के लिए लुभावने अवसर मिलेंगे। 15 अक्टूबर के बाद रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तु की प्राप्ति हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल जाएगी। यदि आप धन निवेश करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान में गुरु एवं राहु की युति के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण अनुकूल रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर आपके भाईयों के लिए बहुत शुभ रहेगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिबिधियो में आप बढ-चढ कर भाग लेंगे। समाज उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे।

9 अगस्त के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी जिससे आपके

परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। इस वर्ष आपके परिवार में मांगलिक कार्य भी अधिक होंगे।

संतान

वर्षारम्भ से 18 फरवरी तक का समय संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। 9 अगस्त से आपके बच्चों की उन्नति होगी और उनके साथ संबंधो में मधुरता आएगी। आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

आपकी दूसरे संतान के लिए यह समय श्रेष्ठतम है। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है। तो उसका विवाह हो सकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष का पूर्वार्द्ध स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ मंगल के प्रभाव से कुछ न कुछ परेशानी बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से परेशान हैं तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय कुछ अच्छा होगा। आप मानसिक रूप से संतुष्ट व शारीरिक रूप से रोग मुक्त रहेंगे।

9 अगस्त से राहु का गोचर लग्न स्थान में होने के कारण अचानक आप फिर से बीमार हो सकते हैं। ऐसे में अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। कुछ समय ऐसा भी आएगा जब आप खुद को थका हुआ महसूस करेंगे किन्तु कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधित समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आप तनाव व चिंतामुक्त रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ में आपको गुप्त शत्रुओं का सामना करना पड़ सकता है। 18 फरवरी के बाद भाग्य का सहयोग पूर्ण रूप से मिलने के फलस्वरूप प्रतियोगियों को परास्त कर आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों को नये-नये तकनीकी विषय की ओर रूझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासनिक सेवा, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

9 अगस्त के बाद लग्नस्थ राहु के प्रभाव से आप अचानक आलसी हो जाएंगे और यही आलस्य आपकी सफलता में रुकावट उत्पन्न करेगा। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो 15 अक्टूबर के बाद नौकरी मिलेगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। 18 फरवरी के बाद गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी-मोटभ यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक तीर्थ यात्रा भी करेंगे। 14

जून के बाद विदेश यात्रा भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में घरेलू परेशानी के कारण धार्मिक कार्य कम ही करेंगे। राहु एवं गुरु ग्रह की युति आपके दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित कर सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि के प्रति आपका आकर्षण बड़ेगा। गुप्त विद्या या तान्त्रिक क्रियाओं की सिद्धि के लिए आप साधना भी कर सकते हैं।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर गरीब लोगों को बांट दें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा जी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं अष्टम भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु लग्न स्थान में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं तृतीय भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिएयह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। अष्टमस्थ शनि के कारणव्यावसायिक जीवन में थोडे बहुत झटके आएंगे।आपके कार्यों में गुप्त शत्रु या विरोधियों द्वारा रूकावटें डाली जा सकती हैं। बिना किसी पर विश्वास किये आपको अपना कार्य करते रहना चाहिए और इस अंतराल में जल्दबाजी में कोई महत्वपूर्ण निर्णय नहीं लेना चाहिए नहीं तो उसका परिणाम प्रतिकूल होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।जो व्यक्ति नए रोजगार की तलाश में है उन्हें शनि के गोचर के बाद सफलता अवश्य मिलेगी। उस समय आप अपने सपनों को साकार करने के लिए अपने लक्ष्यों की ओर बेझिझक, पूर्ण विश्वास के साथ बढ़ेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष से प्रारम्भ में ही कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण धोखा या धन हानि का योग बना हुआ है। अतः शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीको पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है।

पारिवारिक सदस्य की बीमारी दूर करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। किसी को उधार पैसा न दें नही तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।शनि ग्रह के गोचर के बाद समय अच्छा हो रहा है। फिर भी आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस विषय में सोच विचार करना बहुत जरूरी है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष के प्रारम्भ में पारिवारिक वातावरण में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी जिससे परिजनों के बीच सामंजस्य बिठाने में कठिनाई पैदा होगी। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव ठीक नहीं रहेगा। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अनुकूल नहीं है।

गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए बहुत अच्छा रहेगा। परिवार में एक दूसरे के साथ भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। माता के लिए समय काफी शुभ है।

23 अक्तूबर से आपका समाजिक स्तर बढ़ेगा।

संतान

पंचम स्थान पर राहु एवंशनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से बच्चों कोस्वास्थ्य संबंधित परेशानी होगी जिससे उनकीशिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित होगी। मई के बाद समय अच्छा हो रहा है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी दूसरे संतान के लिएसमय अच्छा हो रहा है। आपके दूसरे बच्चों के साथ प्रेम समन्वय में बृद्धि होगी। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय श्रेष्ठ है। यदि आप अपने बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

स्वास्थ्य

पूरे वर्ष लग्न स्थान के राहु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव कि स्थिति बनाए रखेंगे। व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप समय पर अपना खान-पान नहीं कर पाएंगे जिसके परिणामस्वरूप आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें।

सुबह जल्दी उठ कर व्यायाम करना लाभप्रद रहेगा। मई के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। उसके बाद आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दूर होना शुरु हो जाएगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। 5 मई के बाद माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये समय बहुत शुभ है।

विदेशी भाषा सीखने के लिए 12 अगस्त के बाद समय काफी शुभ है यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त करना चाहते हैं, तो नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

नवमस्थ गुरु के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आप लम्बी-लम्बी यात्राएं भी करेंगे। धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। 5 मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तर आपके अनुकूल स्थान पर भी हो सकती है।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे या अपने परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप तीर्थयात्रा और धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। कोई भी शुभ कार्य योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है।आप अपने कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे और कर्म ही पूजा है इस वाक्य को फलीभू करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें एवं प्राणायाम करें।
- बुधवार के दिन चींटियों को दाना डालें एवं भूखे व्यक्तियों को खाना खिलाएं।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं शनि ग्रह का दान करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(03/04/2023 - 09/02/2034)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 03/04/2023 को आरम्भ होकर 09/02/2034 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

आपकी कुण्डली में शुक्र सप्तम भाव में स्थित है। शुक्र स्वभावतः एक शुभ ग्रह है जो अच्छे स्वाद, भावनात्मक आनन्द तथा सुखमय जीवन, विशेष रूप से औरत के साथ, का द्योतक है। यह विवाह का कारक भी है। यह दो राशियों तुला तथा वृष का स्वामी है। यह मीन में उच्च का जबकि कन्या में निम्न का होता है। आपकी जन्म कुण्डली में यह सप्तम भाव में स्थित होकर प्रथम भाव को देख रहा है और इस भाव पर कारकत्व का प्रभाव डाल रहा है। भाव जिस में यह स्थित है अर्थात सप्तम भाव भूमि, आय, जीवन-साथी और व्यवसाय में साथी, मुकदमें तथा विदेश में प्रभाव या वहाँ अर्जित प्रतिष्ठा का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव से यह प्रथम भाव को देख रहा है जो लग्न है तथा शरीर-गठन एवं शरीर का द्योतक है। यह आपकी किसी बड़ी शारीरिक समस्या या दुर्घटना से रक्षा करेगा।

अर्थ संपत्ति :

शुक्र सप्तम भाव में स्थित है और अपने ही भाव को प्रबलित कर रहा है जो साथी या जीवन साथी का भाव है। इस दशा काल में आप साझेदारी का व्यवसाय आरंभ कर सकते हैं जिसमें आप सफल रहेंगे या विदेश जाने की स्थिति में आपको वहाँ अच्छी उपलब्धियाँ तथा लोगों से संपर्क स्थापित करेंगे और आपकी चल तथा अचल संपत्ति में वृद्धि संभव है।

व्यवसाय :

आप साझेदारी का व्यवसाय कर सकते हैं जिसमें सफलता मिलेगी विशेष कर जब यह विचरीत लिंग के साथ हो। आप उन वस्तुओं को बनाने का काम करेंगे जिनकी मांगे औरतों में ज्यादा होती है जैसे रंग-रोगन या कपड़े का व्यवसाय।

पारिवारिक जीवन :

शुक्र विवाह का कारक भी है तथा सप्तम भाव जो विवाह का द्योतक है, में स्थित है और आपको एक कारक दोष देता है जिसके परिणाम स्वरूप आपके वैवाहिक जीवन में कुछ समस्या आ सकती है। आपको एक समर्पणशील या आज्ञाकारी जीवन साथी मिलेगा। किन्तु इसके बावजूद आपका परायी स्त्रियों की ओर झुकाव होगा, जो आपके वैवाहिक जीवन को तहस-नहस कर सकता है। आप बहुत ही भावुक होंगे और स्त्रियों के प्रति झुकाव के कारण स्वास्थ्य संबंधी अनेक समस्याएं हो सकती हैं।

अंर्तदशा :- शुक्र - राहु
(03/04/2023 - 11/04/2024)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 03/04/2023 को प्रारंभ होकर 09/02/2034 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 3 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 03/04/2023 को प्रारंभ होकर 11/04/2024 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन को खतरों का परिचायक है। राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है और न ही यह किसी राशि का स्वामी होता है। इसका शुभ/अशुभ प्रभाव इसकी स्थिति, भाव और राशि के अनुसार होता है।

सप्तम भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के 7वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपका निम्न कोटि के लोगों से प्रेम प्रसंग हो सकता है। गरिष्ठ भोजन के शौकीन हो सकते हैं जिससे बीमार हो सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, दूध और गंगाजल से धोकर, प्रार्थना उपरांत बायें हाथ की मध्यमा अंगुली में रात्रि भोजन के उपरांत धारण करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - गुरु
(11/04/2024 - 11/12/2026)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 03/04/2023 को आरंभ हुई थी और 09/02/2034 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 11/04/2024 को प्रारंभ होकर 11/12/2026 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रूषा, मातहत या सेवक, कर्ज़, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है।

बृहस्पति शुभ ग्रह है। छठे भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 10, 12, 2 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है। छठा भाव अशुभ समझा जाता है। शुभ ग्रह बृहस्पति की वहां पर स्थिति अशुभ होती है।

इस अवधि में अधिसंख्य लोग आपको अविश्वास की नज़र से देखेंगे; जीवन में तनाव और कष्ट रहेंगे। आलस्य की भावना रहेगी, शत्रुओं से त्रस्त हो सकते हैं, भाग्य साथ नहीं देगा। सम्मान में कमी आ सकती है।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में बृहस्पतिवार को प्रातःकाल पूजा के उपरांत बृहस्पति का मंत्र 99 बार पढ़कर दाहिने

हाथ की तर्जनी में धारण करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - शनि
(11/12/2026 - 09/02/2030)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती हैं। आपके लिए यह 03/04/2023 को प्रारंभ हुई थी और वद 09/02/2034 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 11/12/2026 को प्रारंभ होकर 09/02/2030 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है।

शनि शुभ ग्रह है। पंचम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के 7, 11, 2 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में समाज में आपकी लोकप्रियता में कमी आ सकती है। आपका स्वभाव झगड़ालू हो सकता है। घरेलू जीवन कष्टप्रद हो सकता है, जीवन में बहुत सारे बदलाव आएंगे, जीवन सुचारु नहीं रहेगा। स्वास्थ्य में गिरावट के कारण कष्ट बढ़ेंगे।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करना श्रेयस्कर होगा;

- शिवजी की उपासना प्रतिदिन करें।
- पीपल को जल अर्पित करें।
- भोजन करने से पूर्व पहला कौर गाय को दें।
- मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं।

योग

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।
।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

शकट योग

जीवान्त्याष्टारिसंस्थे शशिनि तु शकटः।।
क्वचित्क्वचिद्भाग्यपरिच्युतः सन् पुनः पुनः सर्वमुपैति भाग्यम्।
लोकेऽप्रसिद्धोऽपरिहार्यमन्तः शल्यं प्रपन्नः शकटेऽतिःदुखी।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 14, 17 ।।

यदि पत्रिका में चंद्रमा से 6, 8 या 12 वें स्थान में बृहस्पति हो तो शकट योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप जन्मभर दुःखी रहना, जीवन व्यथित रहना, प्रसिद्धि प्राप्त करना, सामान्य जीवन व्यतीत करना, भाग्यहीनता तथा पुनः भाग्य प्राप्ति के योग बनेंगे।

हर्ष योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वाक्रमाद्भावैः हर्षयोगः।
सुखभोगभाग्यदृढगात्रसंयुतो
निहताहितो भवति पापभीरुकः ।
प्रथितप्रधानजनवल्लभो धन-
द्युतिमित्रकीर्तिसुतवांश्च हर्षजः।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/ श्लोक 57, 63

।।

यदि जन्मपत्रिका में छठा भाव या षष्ठेश अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो तथा षष्ठेश दुःस्थान में निवास करता हो तो हर्षयोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,गुरु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भाग्यवान्, दृढ़ शरीर वाले व सुखी, भोगी, शत्रुजीत, पापकर्म में लिप्त एवं भयातुर होंगे परंतु आप प्रसिद्ध, प्रधानप्रिय, धन, पुत्र, मित्र से सुखी एवं यशस्वी होंगे।

महादान योग

दानाधिपेन संदृष्टे लग्ने तन्नायकेपि वा ।
तस्मिन्केन्द्रत्रिकोणस्थे महादानकरो भवेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि।। अ.7/भाव-9/श्लोक-4

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश पर या लग्न पर नवमेश की दृष्टि हो वह नवमेश भी केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक महादानी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप हाथी-घोड़ा दान, तुलादान तथा महादान करेंगे। आप महादानी होंगे।

युद्ध कुशल एवं कलह प्रवीण योग

धैर्यान्वितो विक्रमराशिनाथसंयुक्तराश्यंशपतौ यदंशे ।
तदंशनाथे स्वगृहादिवर्गे युद्धे विदग्धः कलहप्रवीणः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-33 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश जिसकी राशि अंश में है, वह ग्रह अपने राश्यादि वर्ग में हो तो जातक धैर्यवान, युद्ध में चतुर और कलह करने में निपुण होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप धैर्यधारण करने वाले, युद्ध में चतुर और कलह प्रिय प्राणी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

धीर पुरुष योग

जीवान्विते धीरतया समेतः सर्वार्थशास्त्रार्थविशारदः स्यात् ।।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-41 ।।

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश गुरु से युक्त हो तो सब अर्थ एवं शास्त्रार्थ पारंगत होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप विद्वान एवं धैर्यवान होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

मातृस्नेह योग

यदा लग्नसुखेशौ वा मित्रभूतौ परस्परम् ।
शुभेक्षितौ शुभैर्युक्तौ मातृस्नेहं विनिर्दिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-148 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश चतुर्थेश परस्पर मित्र हों, शुभ ग्रहों से युक्त और दृष्ट हो तो माता का विशेष स्नेह प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,शुक्र योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अपनी माता का विशेष स्नेह प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रनाश योग

पापमध्ये तु यद्भावे तदीशेऽपि तथा स्थिते ।
कारके पापसंयुक्ते पुत्रनाशं वदेत्तदा ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव या पंचमेश पाप ग्रहों के बीच हो, तथा संतान कारक ग्रह भी पाप युक्त हो तो पुत्रनाश योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शनि,गुरु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको संतान सुख में बाधा हो ऐसा प्रतीत होता है।

दत्तकपुत्र प्राप्ति योग

मान्दं सुतर्क्षं यदि वाऽथबौधं
मान्द्यर्कपुत्रान्वितवीक्षितं चेत् दत्तात्मजः ।।
।। फलदीपिका ।। अ. 12/श्लो.-8 ।।

जन्मपत्रिका में यदि पंचम भाव पर मिथुन, कन्या, मकर या कुंभ राशि हो और शनि पंचम स्थान में स्थित हों या पंचम भाव पर मान्दिय शनि की दृष्टि हो तो दत्तक पुत्र प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको पुत्र गोद लेना पड़े, ऐसी संभावना है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुंठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुंठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वर्गनिवास योग

भृगुसुतः स्वर्गसम्प्रापयेत्प्राणिनः ।
सम्बन्धाद्व्ययनायकास्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यिद उस नवांश में शुक्र हो या द्वादश स्थान के स्वामी शुक्र से संबंध स्थापित करता हो तो जातक स्वर्ग में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत स्वर्ग में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रेस्तगे चोपचयान्विते वा ।
कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-62 ।।

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरांत भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरांत होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

रन्ध्रेशेंगे अस्ते द्विभार्यः।।
।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 302 ।।

यदि जन्मपत्रिका में अष्टमेश लग्न में अथवा सप्तमभाव में स्थित हो तो द्वि भार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

पापाः सप्तमे द्विभार्यः।

।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 303 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : राहु | योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जीवन में दो जीवनसाथी आएगें, अर्थात आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

धर्म कार्य में धन व्यय योग

व्ययाधिपसमायुक्तनवभागपतौ शुभे ।
शुभांशे शुभमध्यस्थे धर्ममूलाद्धनव्ययः ।।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.8/व्ययभाव-4 ।।

यदि जन्मपत्रिका में व्ययेश जिस नवांश में हो वह शुभग्रह हो एवं शुभग्रह के अंशक में शुभग्रहों के मध्य हो तो धर्म कार्य में धन का व्यय होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,बुध | योग की संभावना : 27 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अपने धन का व्यय धर्मकार्य में करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र | योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : शनि,राहु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

केमद्रुम योग

''चेत्वित्तव्ययगाः भवन्ति न खगाः केमद्रुमः स्यात्तदा।
प्राचीनैर्मुनिभिः स्मृताः श्रुतिमिताः योगाः शशाङ्कोद्भवाः।।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 43 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चन्द्र से द्वितीय अथवा द्वादश भाव में कोई भी ग्रह न हों तो "केमद्रुम" योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 32 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "केमद्रुम" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धन(अर्थ), पुत्र, पत्नी, भाई से हीन, नौकरी पेशा वाले (दास) एवं परदेश में निवास करेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र,राहु,सूर्य

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।